पंचम अध्याय
आंकड़ों का विश्लेषण

किसी भी शोध का तब तक कोई महत्व नहीं है जब तक शोध के लिए सही विश्लेषण व व्याख्या न हो। आंकड़ों का सही व उद्देश्यपूर्ण विश्लेषण से अभिप्राय है कि आंकड़ों को सही रूप से इकट्ठा करना। यदि आंकड़े सही व शोध संबंधी है तो ही उनका सार्थक परिणाम प्राप्त होगा और उसकी व्याख्या उद्देश्य को ध्यान में रखकर कर सकें। आंकड़ो की व्याख्या और विश्लेषण से ही किसी भी शोध को पूरा किया जा सकता है। जब तक आंकड़े सही व अर्थपूर्ण नहीं होते तब तक शोधार्थी द्वारा शोध सही व पूरा करना संभव ही नहीं है। शोधार्थी ने विद्यालयों में अपना परिचय देने के बाद छात्रों, अध्यापकों, अभिभावकों तथा अधिकारियों/कर्मचारियों से सही आंकड़े प्राप्त किए है और उन्हें इस बात का विश्वास दिलाया कि उनके द्वारा दिए गए आंकड़े व सुझाव गुप्त रखे जांएगें।

इस शोध में हिसार मंडल से प्रत्येक जिला के दो खण्डों में प्रत्येक खण्ड से 4 प्राथमिक विद्यालयों और 4 उच्च प्राथमिक विद्यालयों का चयन किया गया है। हिसार मंडल के कुल 5 जिले हैं और इनमें से 2 खण्डों में प्रत्येक खण्ड से 4 शहरी (2 प्राथमिक तथा 2 उच्च प्राथमिक) और 4 ग्रामीण (2 प्राथमिक तथा 2 उच्च प्राथमिक) सहित कुल 80 विद्यालयों का चयन किया गया है। प्रत्येक स्कूल से कुल 5 विद्याार्थी और 2 अध्यापकों व 2 विद्यार्थी अभिभावकों का चयन किया गया है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक जिले से 16 अधिकारियों/कर्मचारियों का भी चयन किया गया है और इस प्रकार इस शोध में कुल 400 विद्यार्थियों, 160 अध्यापकों 160 अभिभावकों और 80 अधिकारियों/कर्मचारियों को इस शोध में शामिल किया गया और इनका चुनाव देव निदर्शन विधि से किया गया है।

5.1 हिसार मंडल के पांच जिलों से चयनित उत्तरदाताओं का संख्या के आधार पर वर्गीकरण

वर्तमान शोध के लिए विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों, अधिकारियों/कर्मचारियों से आंकड़े इकट्ठे किए गए। मध्याह्न भोजन योजना के तहत शोध के लिए जिन सदस्यों का चयन किया गया है उनका वर्गीकरण तालिका 5.1 में दर्शाया गया है:–

तालिका 5.1

हिसार मंडल में चयनित उत्तरदाताओं का संख्या के आधार पर वर्गीकरण

क्र0 स0	उत्तरदाताओं	उत्तरदाता		
		पुरूष/लड़के	स्त्री/लड़कियाँ	कुल
1	विद्यार्थी	207	193	400
2	शिक्षक	75	85	160
3	अभिभावक	73	87	160
4	अधिकारी/कर्मचारी	45	35	80
	योग	400	400	800

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.1 में विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक व अधिकारी वर्ग का वर्गीकरण किया गया है जिसमें 400 विद्यार्थियों, 160 शिक्षकों, 160 अभिभावकों व 80 अधिकारियों/कर्मचारियों को शामिल किया गया है। 400 विद्यार्थियों में 207 लड़के और 193 लड़कियाँ विद्यार्थी शामिल हैं। 160 शिक्षकों में 75 पुरूष और 85 स्त्रियाँ शामिल हैं। अभिभावक वर्ग में 73 पुरूष और 87 स्त्रियाँ शामिल हैं अधिकारी/कर्मचारी वर्ग में 45 पुरूष और 35 स्त्रियाँ अधिकारी/कर्मचारी शामिल

हैं। इस प्रकार कुल 400 पुरूष और 400 स्त्रियाँ इस प्रकार कुल 800 सदस्यों को शामिल किया गया है।

हिसार मंडल में चयनित सदस्यों का संख्या के आधार पर वर्गीकरण को चार्ट 5.1 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.1

हिसार मंडल में चयनित उत्तरदाताओं का संख्या के आधार पर वर्गीकरण

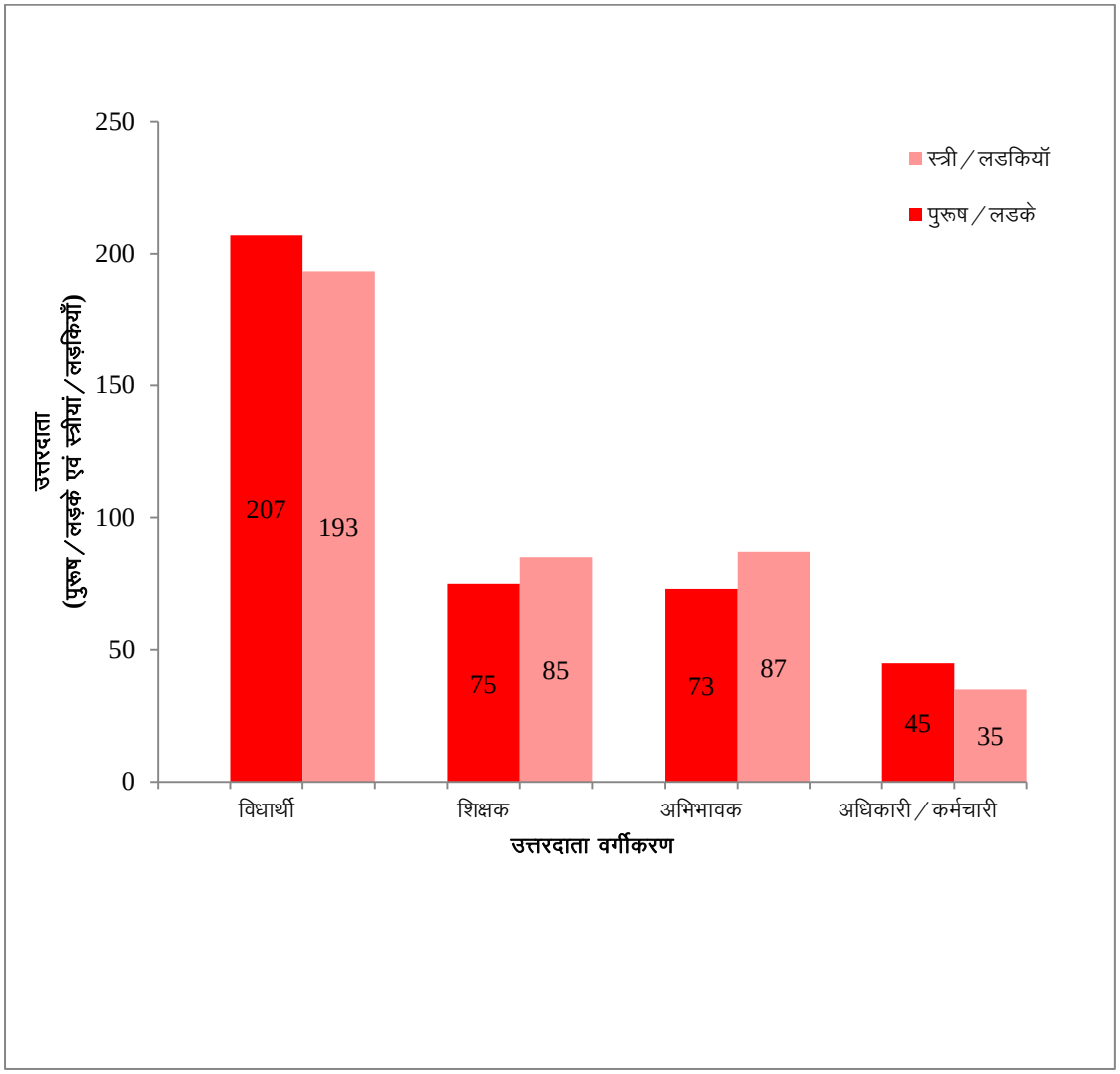

5.2 हिसार मंडल में पांच जिलों के विद्यार्थी वर्ग का आयु के आधार पर वितरण संबंधी वर्गीकरण

मध्याह्न भोजन योजना में आयु संबंधी आंकड़े का विवरण भी दिया गया है। क्योंकि आयु का व्यक्तिगत जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए आयु के आधार पर भी विद्यार्थियों से उनके अनुभव व विचार पूछे गए हैं। प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों में से भी विद्यार्थियों का आयु के अनुसार वर्गीकरण किया गया है कि कितने वर्ष का विद्यार्थी विद्यालय में मध्याह्न भोजन योजना का लाभ ले रहा है। उसका विवरण नीचे दी गई तालिका 5.2 में दर्शाया गया है:–

तालिका 5.2

हिसार मंडल में विद्यार्थी वर्ग का आयु के आधार पर वर्गीकरण

क्र0 स0	आयुवर्ग	विद्यार्थी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	5–7	35	8.75
2	8–10	80	20.00
3	11–13	166	41.50
4	14–16	95	23.75
5	16 से अधिक	24	06.00
	योग	400	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.2 में आयु वर्ग 5–7 के 35 विद्यार्थी (8.75 प्रतिशत), 8–10 तक के 80 विद्यार्थी (20 प्रतिशत), 11–13 वर्ष के 166 (41.50 प्रतिशत) विद्यार्थी, 14–16 वर्ष के 95 विद्यार्थी (23.75 प्रतिशत) तथा 16 वर्ष से अधिक 24 (6 प्रतिशत) विद्यार्थी

शामिल किए गए हैं। इससे सपष्ट होता है कि 10 वर्ष से 16 वर्ष तक के विद्यार्थी मध्याह्न भोजन योजना का अधिक लाभ ले रहे हैं।

हिसार मंडल में विद्यार्थी वर्ग का आयु के आधार पर वर्गीकरण को चार्ट 5.2 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.2

हिसार मंडल में विद्यार्थी वर्ग का आयु के आधार पर वर्गीकरण

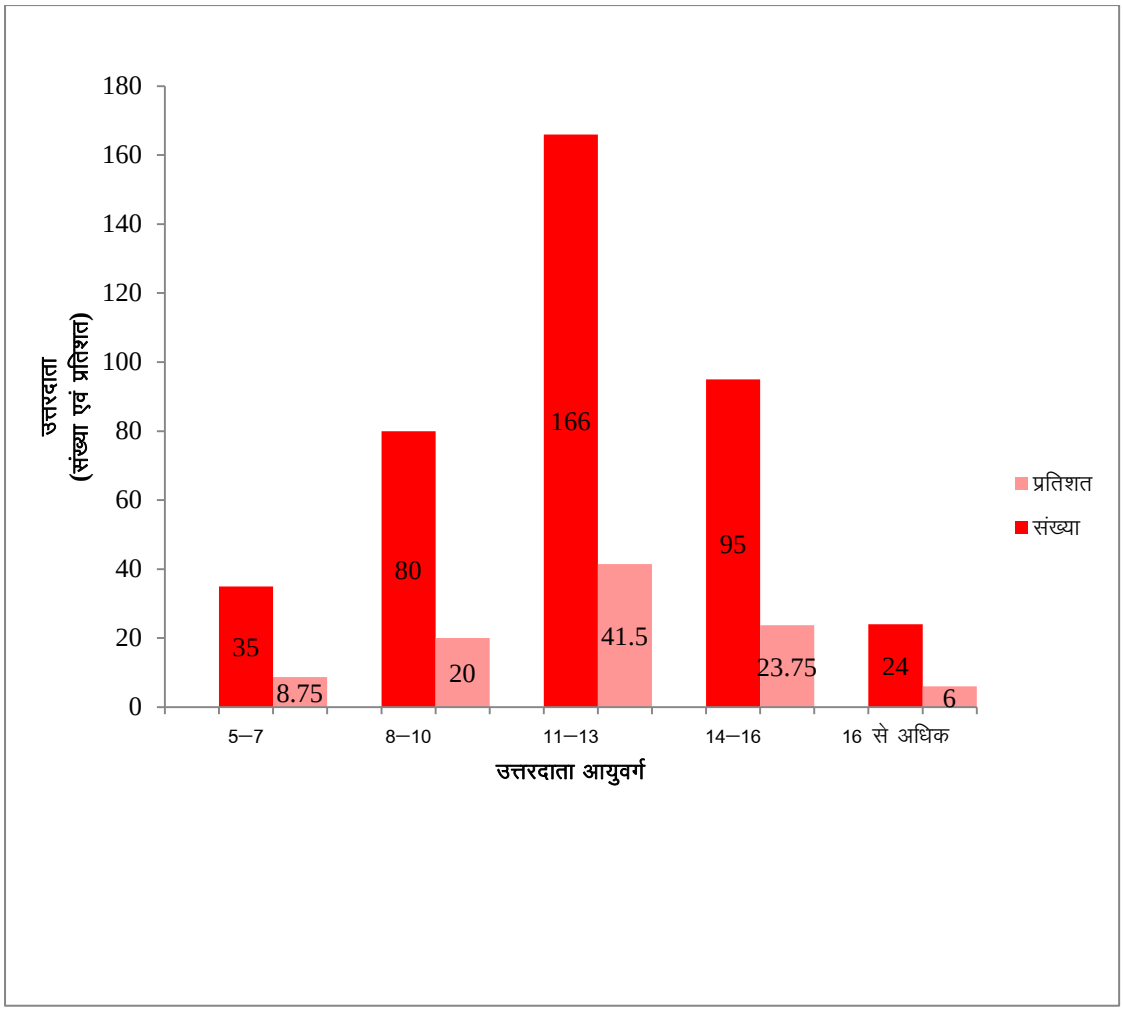

5.3 हिसार मंडल के पांच जिलों में शिक्षक वर्ग की शिक्षा एवं योग्यता के आधार पर वर्गीकरण

शिक्षा जीवन व जागरूकता की जननी कही गई है जोकि व्यक्ति में अनुभव और चेतना का संचार करती है। आज के समय शिक्षा एक ऐसा महत्वपूर्ण और आवश्यक औजार और साधन है जो व्यक्ति को उच्च शिखर पर ले जाता है और मध्याह्न भोजन योजना शिक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण योजना या स्त्रोत के रूप में प्रयोग की जा रही है ताकि अधिक से अधिक गरीब व कुपोषित विद्यार्थी भी शिक्षा ग्रहण कर सकें। इस तालिका में शिक्षक वर्ग से उनकी योग्यता के संदर्भ में जानकारी ली गई है जिसका विवरण इस प्रकार से नीचे बनी तालिका 5.3 में दर्शाया गया हैः–

तालिका 5.3

शिक्षक वर्ग की शिक्षा एवं योग्यता के आधार पर वर्गीकरण

क्र0 स0	शिक्षा	शिक्षक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	बारहवीं	15	9.37
2	बारहवीं + जे.बी.टी.	30	18.75
3	बी.ए.	10	6.25
4	बी.ए. + बी.एड.	70	43.75
5	एम.ए. + बी.एड.	35	21.88
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.3 यह दर्शा रही है कि जो अध्यापक गण इस शोध में शामिल किए गए है उनमें बारहवीं पास 15 (9.37 प्रतिशत) अध्यापक, बारहवीं + जे.बी.टी. पास 30 (18.75 प्रतिशत) शिक्षक और बी.ए. पास 10 (6.25 प्रतिशत) शिक्षक, बी.ए. + बी.एड. 70 (43.75 प्रतिशत) एम.ए. + बी.एड. पास शिक्षक वर्ग 35 (21.88 प्रतिशत) शिक्षक शामिल है। इस तालिका को देखते हुए यह निष्कर्ष निकला है कि विद्यालय में अधिकतर अध्यापक बी.एड. अध्यापक पद पर कार्यरत है और उनमें से भी अधिकतर शिक्षक जिन्होंने बी.ए. + बी.एड. तक की शिक्षा प्राप्त की हैं।

शिक्षक वर्ग का शिक्षा के आधार पर वर्गीकरण को निम्न चार्ट 5.3 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.3

शिक्षक वर्ग का शिक्षा एवं योग्यता के आधार पर वर्गीकरण

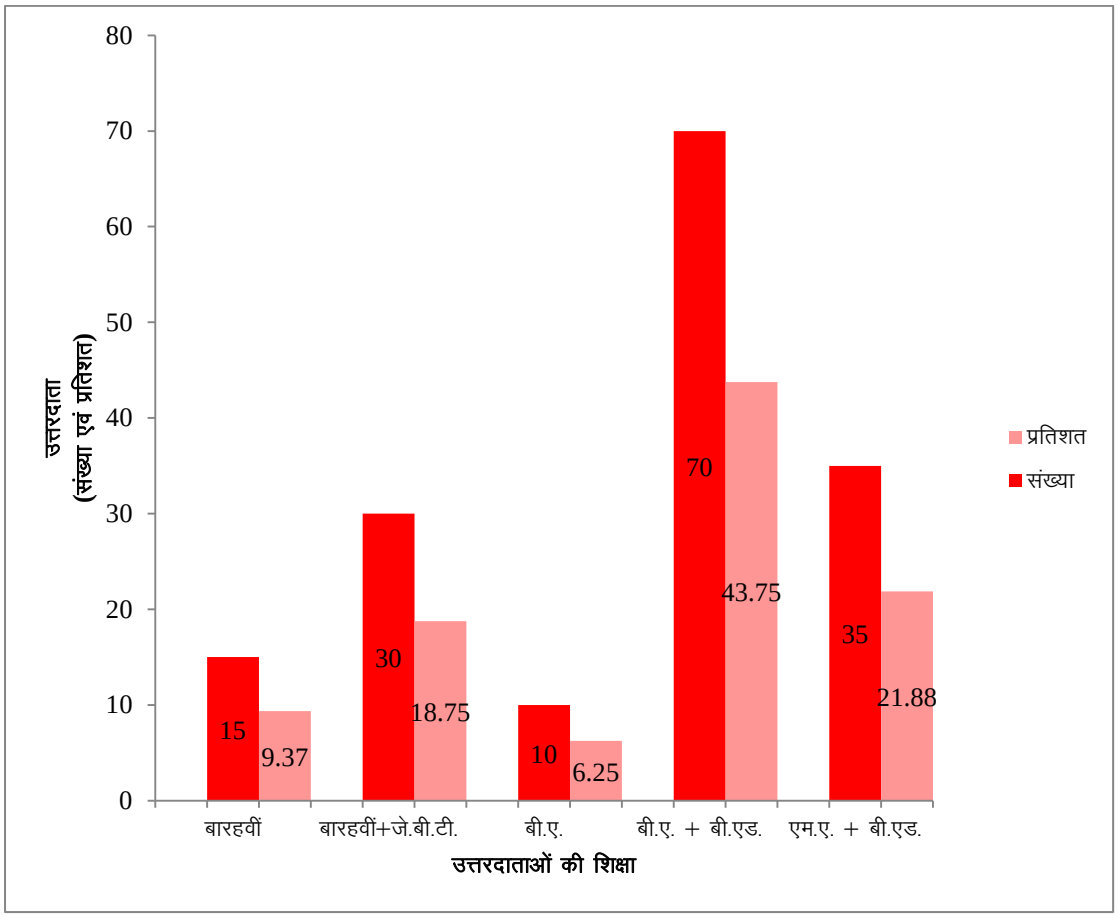

5.4 विद्यार्थी उत्तरदाताओं के विचारः एक विश्लेषण

हिसार मण्डल के 5 जिलों के प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों से मध्याह्न भोजन योजना संबंधित जानकारी हेतू साक्षात्कार अनुसूचि जिसमें कुल 400 विद्यार्थियों का साक्षात्कार लिया गया उनसे प्राप्त विचारों व योग की प्रतिशत के अनुसार व्याख्या की गई है जो इस प्रकार से हैः–

5.4.1 दोपहर के भोजन की विस्तार से जानकारी संबंधी विद्यार्थियों के विचार

हरियाणा के विद्यालयों में विद्यार्थियों के लिए दोपहर के भोजन की व्यवस्था की जाती है जो कि मध्याह्न भोजन योजना के तहत लागू है। दोपहर के भोजन की विस्तार से जानकारी संबंधी विद्यार्थियों के विचारों का विवरण नीचे तालिका 5.4.1 में इस प्रकार से दर्शाया गया हैः–

तालिका 5.4.1

हिसार मंडल के विद्यालयों में दोपहर के भोजन संबंधी विस्तार से जानकारी

क्र0 स0	विचार/राय	विद्यार्थी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	185	46.25
2	नहीं	125	31.25
3	कुछ कुछ	90	22.50
	योग	400	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.4.1 में योजना के संदर्भ में जब विद्यार्थियों से विद्यालयों में लागू की गई मध्याह्न भोजन योजना के बारे में पूछा गया कि क्या आपको विस्तार से

मालूम है कि आपके विद्यालय में आप को दोपहर को खाने में भोजन की व्यवस्था है तो 46.25 प्रतिशत विद्यार्थियों ने हाँ में जवाब दिया जबकि 31.25 प्रतिशत विद्यार्थियों में नहीं में जवाब दिया तथा 22.50 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा कि उन्हें इस योजना की विस्तार से तो नहीं परन्तु कुछ–कुछ जानकारी है। सार के तौर पर यह कहा जा सकता है कि ज्यादातर विद्यार्थियों को मध्याह्न भोजन योजना की विस्तार से जानकारी नहीं है।

हिसार मंडल के विद्यालयों में दोपहर के भोजन संबंधी जानकारी को चार्ट 5.4.1 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.4.1

हिसार मंडल के विद्यालयों में दोपहर के भोजन संबंधी विस्तार से जानकारी

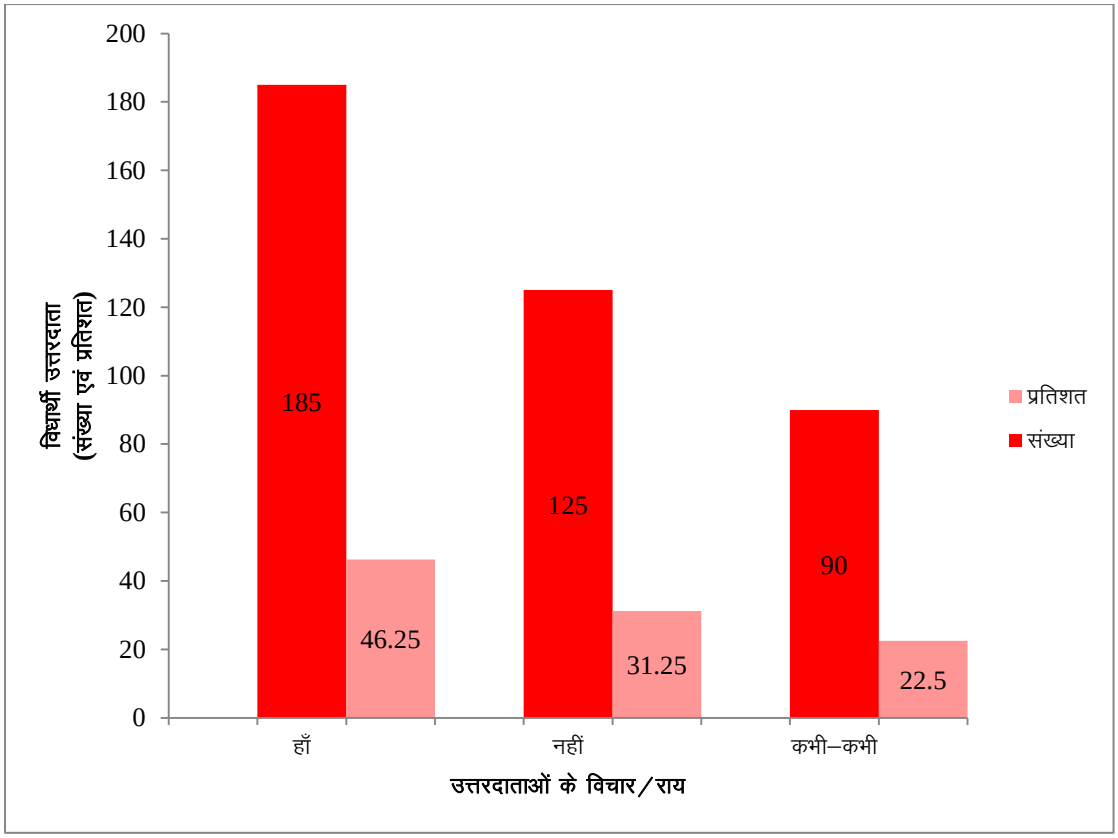

5.4.2 मध्याह्न भोजन योजना के अर्न्तगत भोजन खाने के लिए बर्तन की उपलब्धता पर विद्यार्थियों के विचारों संबंधी विवरण

भोजन को उचित व स्वस्थ्य रूप से ग्रहण करने की व्यवस्था में बर्तनों का होना अति आवश्यक है और इन बर्तनों में कटोरी, थाली, चम्मच, गिलास आदि भी शामिल हैं। मध्याह्न भोजन योजना के अन्तर्गत भोजन खाने के लिए बर्तन की उपलब्धता संबंधी विद्यार्थियों के विचारों को तालिका 5.4.2 में इस प्रकार से दर्शाया गया है:–

तालिका 5.4.2

भोजन खाने के लिए बर्तन की उपलब्धता

क्र0 स0	विचार/राय	विद्यार्थी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	165	41.25
2	नहीं	203	50.75
3	कभी–कभी	32	8.00
	योग	400	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

उपरोक्त तालिका 5.4.2 में इस योजना के संदर्भ में जब विद्यार्थियों से विद्यालय में भोजन खाने के बर्तनों की उपलब्धता के बारे में पूछा गया तो 41.25 प्रतिशत विद्यार्थियों ने हाँ में जवाब दिया और कहा कि उन्हें खाना बर्तनों में ही दिया जाता है। जबकि 50.75 प्रतिशत ने नहीं में जवाब दिया और कहा कि वे बर्तन अपने घर से लाते है और कटोरी चम्मच अपने बस्ते में ही रखते है और 8 प्रतिशत ने बताया कि कभी–कभी स्कूल में बर्तनों की उपलब्धता होती है परन्तु बर्तन अधिक

साफ–सुथरे नहीं होते। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि इस योजना के संबंध में भोजन खाने के लिए बर्तनों की पर्याप्त उपलब्धता का अभाव है।

भोजन खाने के लिए बर्तन की उपलब्धता विद्यार्थियों के विचारों को चार्ट 5.4.2 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.4.2

भोजन खाने के लिए बर्तन की उपलब्धता

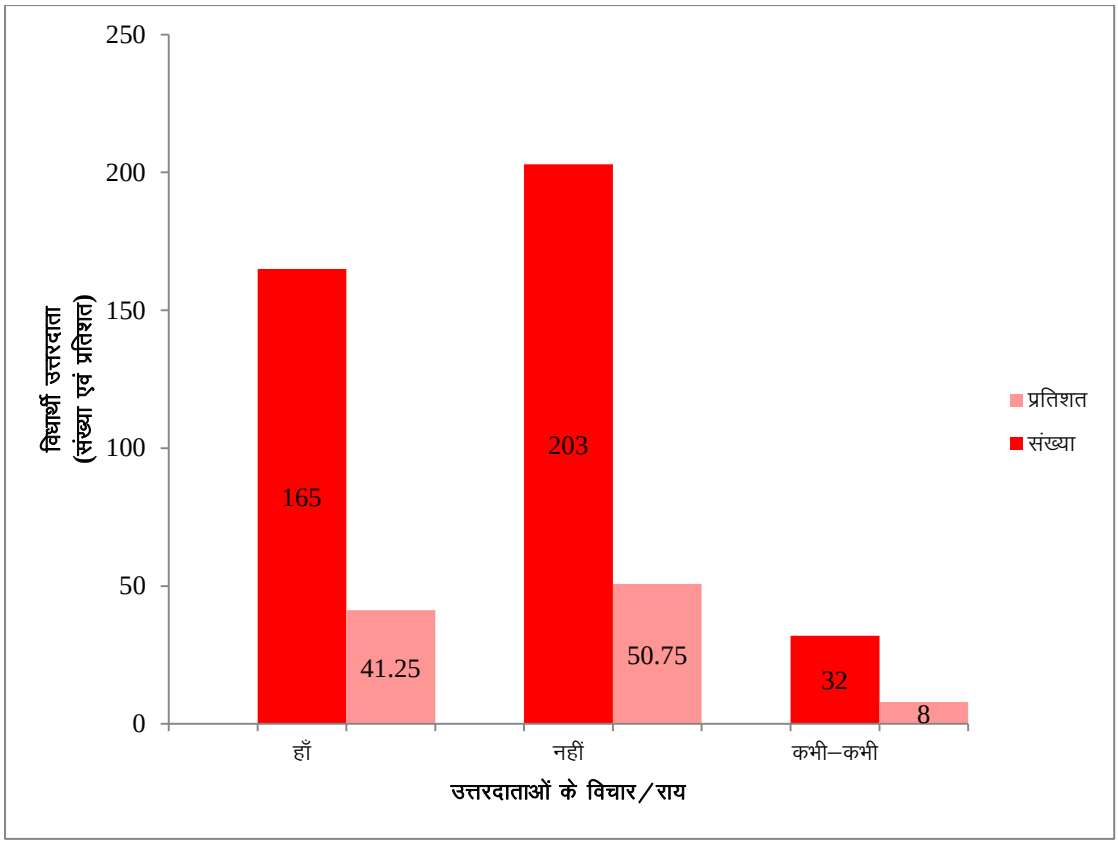

5.4.3 मध्याह्न भोजन योजना के तहत भोजन बनाते समय सफाई का ध्यान रखने संबंधी विद्यार्थियों के विचार

मनुष्य को जीने के लिए भोजन को ग्राहण करना अति आवश्यक है और भोजन को पकाने व ग्रहण करने में सफाई का ध्यान बहुत जरुरी है। इसलिए मध्याह्न भोजन योजना के तहत भोजन बनाते समय सफाई का ध्यान संबंधी विचार विद्यार्थियों के विचारों का विवरण नीचे बनी तालिका 5.4.3 में दर्शाया गया है जो इस प्रकार से हैः–

तालिका 5.4.3

भोजन बनाते समय सफाई का ध्यान

क्र0 स0	विचार/राय	विद्यार्थी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	150	37.50
2	नहीं	215	53.75
3	कभी–कभी	35	8.75
	योग	400	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

भोजन बनाते समय सफाई का ध्यान संबंधी तालिका 5.4.3 को देखने से पता चलता है कि 37.50 प्रतिशत विद्यार्थियों ने हाँ में जवाब दिया और उनका कहना है कि विद्यालय में खाना बनाते समय सफाई का ध्यान रखा जाता है जबकि 53.75 प्रतिशत विघार्थियों ने नहीं में जवाब दिया और उनका भी कहना है कि विद्यालय में सफाई पर ध्यान नहीं दिया जाता व खाना बाहर खुले आंगन में पकाया व खिलाया जाता है और 8.75 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना है कि जब किसी अधिकारी की चैंकिग होती है तो ही कभी–कभी सफाई का अधिक ध्यान रखा जाता है। कुल

मिलाकर हालांकि हम स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत की बात करते हैं पर इस योजना के तहत साफ–सफाई का अभाव है।

भोजन बनाते समय सफाई का ध्यान रखने संबंधी विद्यार्थियों के विचारों को चार्ट 5.4.3 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.4.3

भोजन बनाते समय सफाई का ध्यान

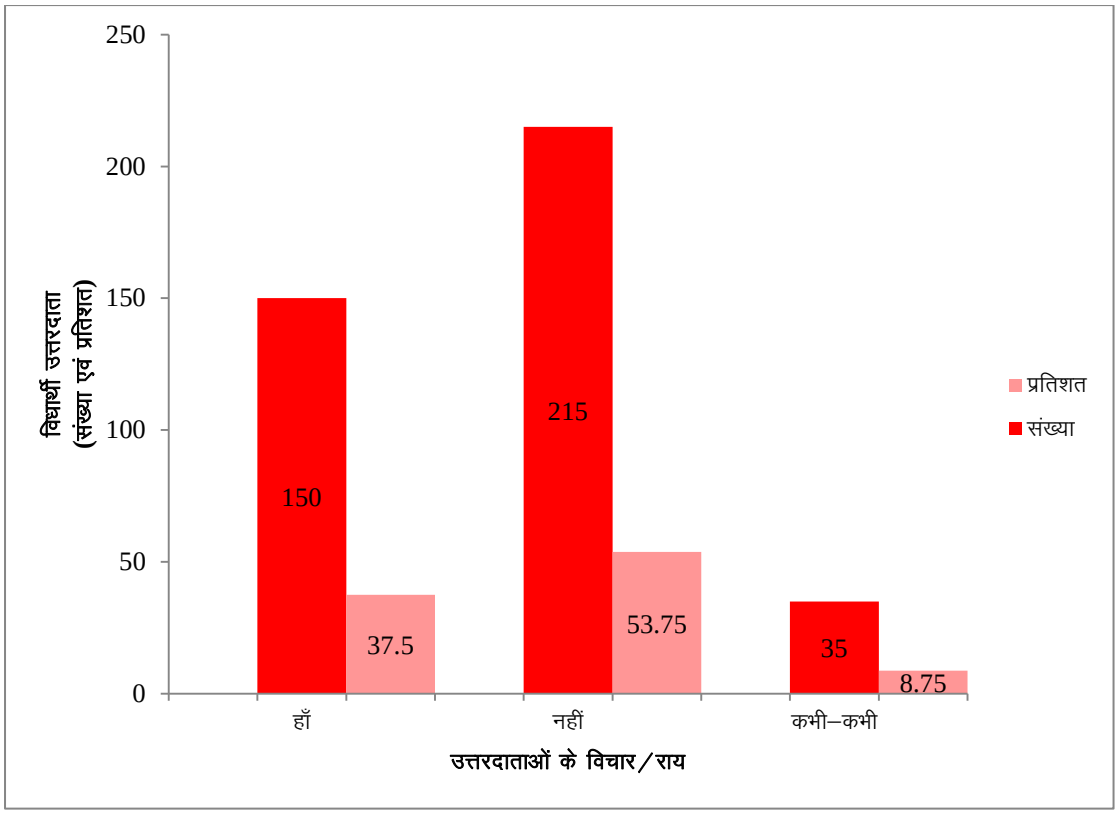

5.4.4 मध्याह्न भोजन योजना के अन्तर्गत भोजन परोसने के समय पंक्तियाँ बनाने संबंधी विद्यार्थियों के विचार

भोजन ग्रहण करने के लिए भी उचित समय व व्यवस्था का निर्धारण होना चाहिए। विद्यालय में जब सभी विद्यार्थियों को इक्ट्ठा भोजन दिया जाता है तब उनके लिए एक उचित व्यवस्था का होना अति आवश्यक है जिसमें सबसे पहले पंक्तियों में बैठाया जाना शामिल है। हिसार मंडल के जिलों के विद्यालयों में मध्याह्न भोजन योजना के तहत भोजन परोसने के समय पंक्तियाँ बनाने संबंधी विद्यार्थियों के विचारों को नीचे तालिका 5.4.4 में दर्शाया गया है:–

तालिका 5.4.4

भोजन परोसने के समय पंक्तियाँ की व्यवस्था

क्र0 स0	विचार/राय	विद्यार्थी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	140	35.00
2	नहीं	160	40.00
3	कभी–कभी	100	25.00
	योग	400	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.4.4 को देखने पर पता चलता है कि जब विद्यार्थियों से पूछा गया कि उन्हें विद्यालय में जब खाना दिया जाता है तो क्या उस समय पंक्तियों में बैठाकर दिया जाता है तो 35 प्रतिशत विद्यार्थियों ने हाँ में जवाब दिया जबकि 40 प्रतिशत विद्यार्थियों ने नहीं में जवाब दिया और 25 प्रतिशत ने बताया कि उन्हें कभी–कभी शिक्षक द्वारा पंक्तियों में बैठा दिया जाता है अर्थात कभी–कभी पंक्तियां

बना ली जाती है तो कभी–कभी पंक्तियाँ नहीं भी बनाई जाती। निष्कर्ष तौर पर यह कहा जा सकता है कि इस योजना के तहत अनुशासन का अभाव है। क्योंकि पंक्तियाँ की व्यवस्था का सुचारु रुप से न होने से व्यवस्था भंग होती है।

भोजन परोसने के समय पंक्तियाँ की व्यवस्था संबंधी विद्यार्थियों के विचारों को चार्ट 5.4.4 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.4.4

भोजन परोसने के समय पंक्तियाँ की व्यवस्था

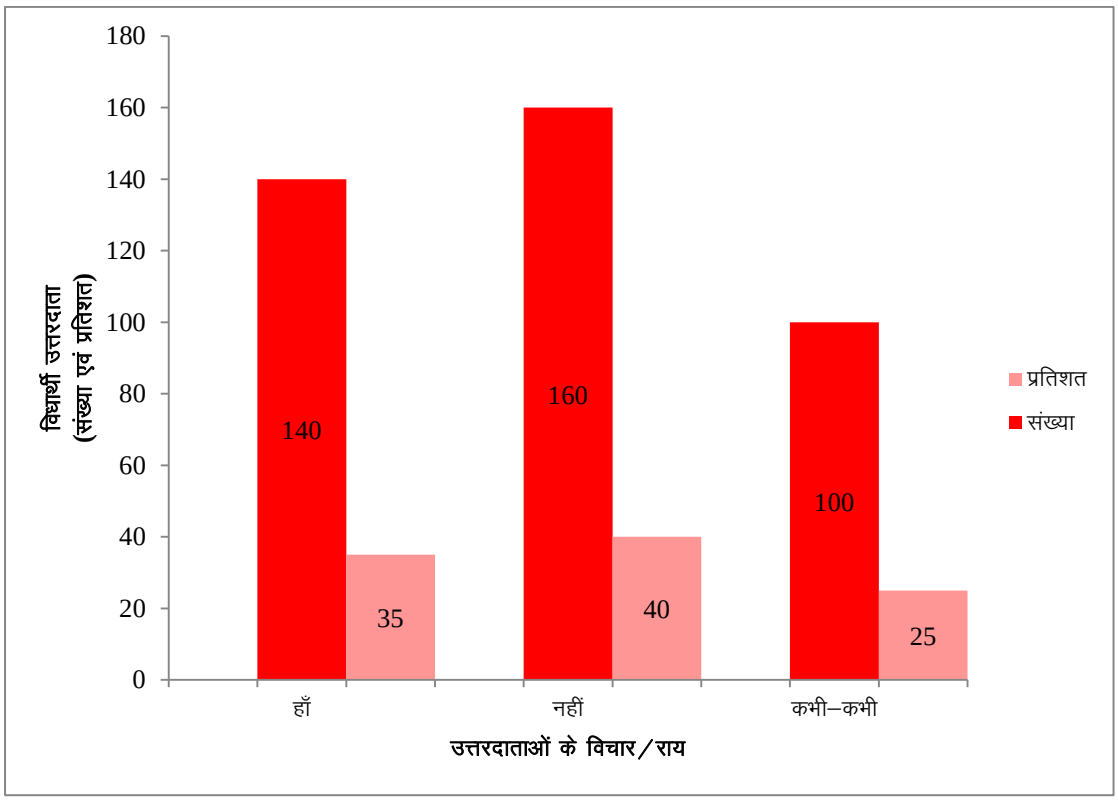

5.4.5 मध्याह्न भोजन योजना के अन्तर्गत विद्यालय में भोजन देने के निश्चित समय संबंधी विद्यार्थियों के विचार

मध्याह्न भोजन योजना के तहत विद्यार्थियों को विद्यालय में भोजन देने की व्यवस्था की गई है मध्याह्न भोजन का अर्थ है कि दोपहर का भोजन अर्थात विद्यालय में भोजन देने के लिए एक निश्चित समय का निर्धारण। मध्याह्न भोजन योजना के अन्तर्गत मध्याह्न भोजन देने का निश्चित समय संबंधी विद्यार्थियों के विचारों को तालिका 5.4.5 में इस प्रकार से दर्शाया गया हैः–

तालिका 5.4.5

मध्याह्न भोजन योजना के तहत विद्यालय में भोजन देने का निश्चित समय

क्र0 स0	विचार/राय	विद्यार्थी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	165	41.25
2	नहीं	195	48.75
3	कुछ हद तक	40	10.00
	योग	400	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.4.5 के अन्तर्गत जब विद्यार्थियों से पूछा गया कि क्या विद्यालय में दोपहर का भोजन देने का समय निश्चित किया हुआ है तो उसमें से 41.25 प्रतिशत विद्यार्थियों ने हाँ में जवाब दिया और 48.75 प्रतिशत विद्यार्थियों ने नहीं में जवाब दिया और उनका कहना है कि विद्यालय में भोजन देने का कोई निश्चित समय नहीं है। जबकि 10 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना है कि कुछ हद तक निश्चित समय पर भोजन दिया जाता है और कई बार तो बहुत ही देर से भोजन दिया

जाता है। सार के तौर पर कहा जा सकता है कि इस योजना के तहत ज्यादातर विद्यार्थियों के अनुसार दोपहर का भोजन समय पर नहीं दिया जाता है।

मध्याह्न भोजन योजना के तहत विद्यालय में भोजन देने का निश्चित समय संबंधी विद्यार्थियों के विचारों को चार्ट 5.4.5 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.4.5

मध्याह्न भोजन योजना के तहत विद्यालय में भोजन देने का निश्चित समय

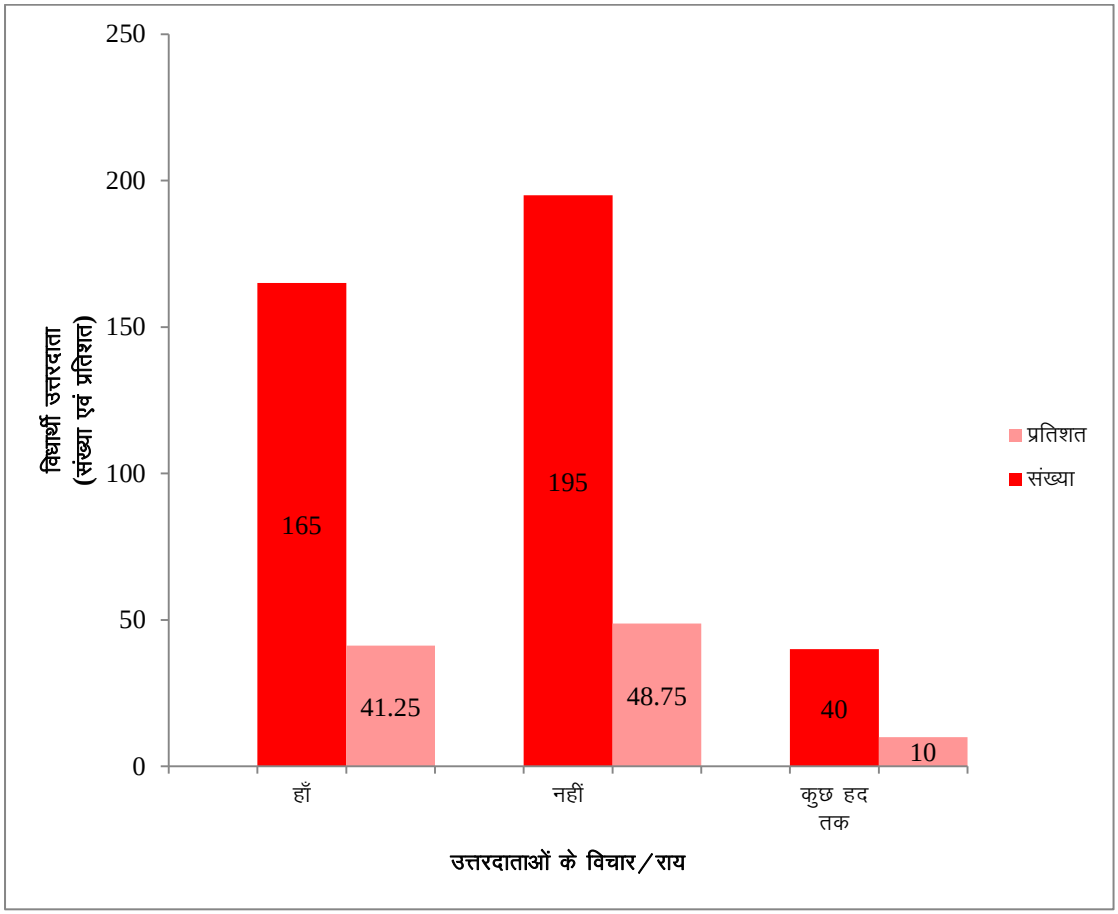

5.4.6 मध्याह्न भोजन योजना के तहत सरकार द्वारा निश्चित किए गए व्यंजनों/रैसीपीज के स्वादिष्ट लगने संबंधी विद्यार्थियों के विचार

भोजन को स्वादिष्ट बनाना रसोइये/कुक सदस्य का काम अवश्य है परन्तु बच्चों की मन की स्थिति चंचल होती है, कई बार उन्हें भोजन अच्छा लगे या ना लगे यह बच्चों की मनोस्थिति पर भी निर्भर करता है। मध्याह्न भोजन योजना के तहत सरकार द्वारा निश्चित किए गए व्यंजनों/रैसीपीज के स्वादिष्ट लगने हेतू विद्यार्थियों की राय पूछी गई, उन संबंधी विचारों का विवरण नीचे तालिका 5.4.6 में दर्शाया गया हैः–

तालिका 5.4.6

सरकार द्वारा निश्चित किए गए व्यंजनों की स्वदिष्टता

क्र0 स0	विचार/राय	विद्यार्थी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	100	25.00
2	नहीं	225	56.25
3	कुछ–कुछ	75	18.75
	योग	400	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.4.6 के अन्तर्गत जब विद्यार्थियों से पूछा गया कि मध्याह्न भोजन योजना के तहत निश्चित किए गए व्यंजन आपको कितने स्वादिष्ट लगते है तो 25 प्रतिशत विद्यार्थियों ने हाँ में जवाब दिया और कहा कि उन्हें भोजन अच्छा लगता है लेकिन 56.25 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा कि उन्हें रोजाना ही पके हुए मीठे या नमकीन चावल खिला दिए जाते है उन्हें ऐसा भोजन अच्छा नहीं लगता जबकि 18.75 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा कि ऐसा भोजन कुछ हद तक स्वादिष्ट होता है

और कई बार तो भोजन उन्हें बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता। सार के तौर पर यह कहा जा सकता है कि तीन–चौथाई उत्तरदाता भोजन की स्वादिष्टता से संतुष्ट नहीं हैं।

सरकार द्वारा निश्चित किए गए व्यंजनो के स्वाद के बारे में विद्यार्थियों के विचारों को चार्ट 5.4.6 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.4.6

सरकार द्वारा निश्चित किए गए व्यंजनों की स्वदिष्टता

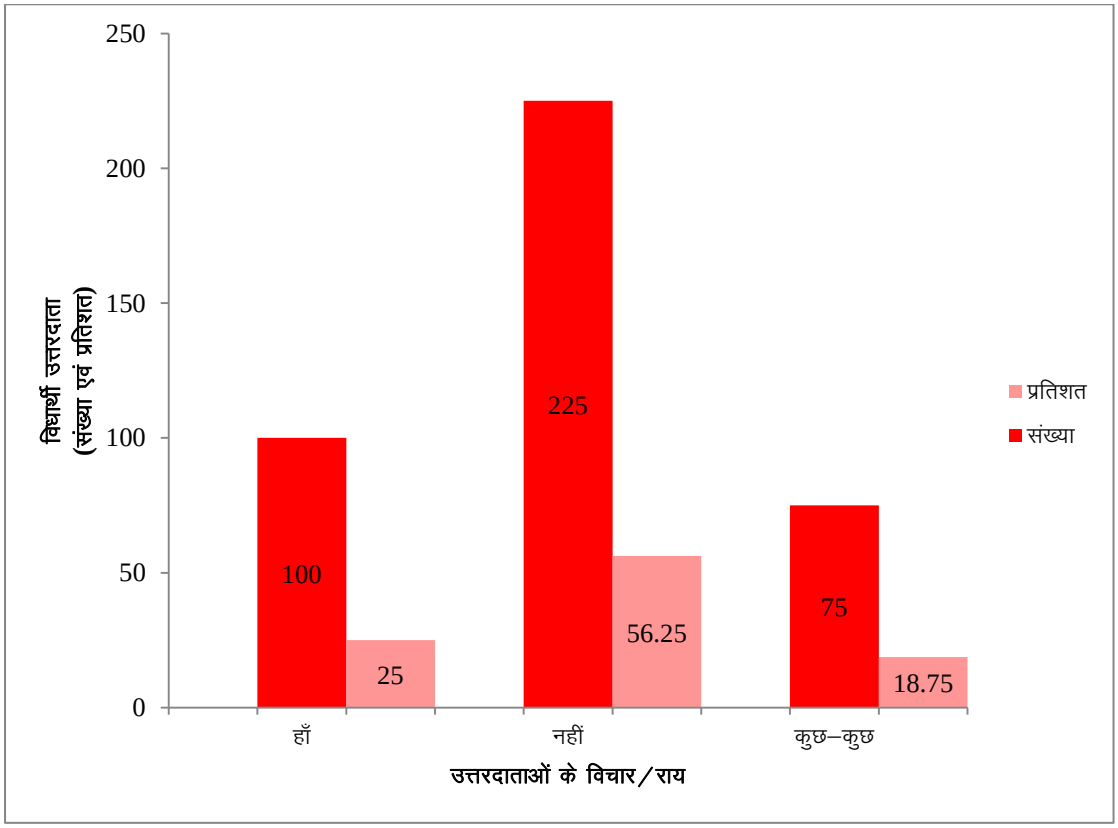

5.4.7 मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत विद्यालय में पीने के पानी की उचित व्यवस्था संबंधी विद्यार्थियों के विचार

भोजन को पकाने के लिए साफ व स्वच्छ जल का प्रयोग ही किया जाना चाहिए और मध्याह्न भोजन योजना के तहत पीने के पानी की उचित व्यवस्था के आदेश भी दिए गए हैं। मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत विद्यालय में पीने के पानी की उचित व्यवस्था संबंधी विद्यार्थियों के विचारों को तालिका 5.4.7 में दर्शाया गया है जो इस प्रकार से है :–

तालिका 5.4.7

विद्यालय में पीने के पानी की उचित व्यवस्था

क्र0 स0	विचार/राय	विद्यार्थी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	178	44.50
2	नहीं	205	51.25
3	कुछ हद तक	17	4.25
	योग	400	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.4.7 के अन्तर्गत जब विद्यार्थियों से मध्याह्न भोजन योजना के तहत विद्यालय में पीने के स्वच्छ पानी की व्यवस्था के बारे में पूछा गया तो 44.50 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना है कि विद्यालय में पानी की उचित व्यवस्था है लेकिन 51.25 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना है कि स्वच्छ पानी की व्यवस्था नहीं है। गर्मियों में तो पानी की काफी किल्लत का सामना करना पडता है। जबकि 4.25 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना है कि कुछ हद तक पानी उचित व साफ होता है।

पानी की टंकियाँ साल भर में एक बार या कई बार तो साफ ही नहीं की जाती। उपरोक्त तालिका के आधार पर मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि मध्याह्न भोजन योजना के तहत विद्यालय में पीने के पानी की उचित व्यवस्था कम ही है।

विद्यालय में पीने के पानी की उचित व्यवस्था के बारे में विद्यार्थियों के विचारों को चार्ट 5.4.7 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.4.7

विद्यालय में पीने के पानी की उचित व्यवस्था

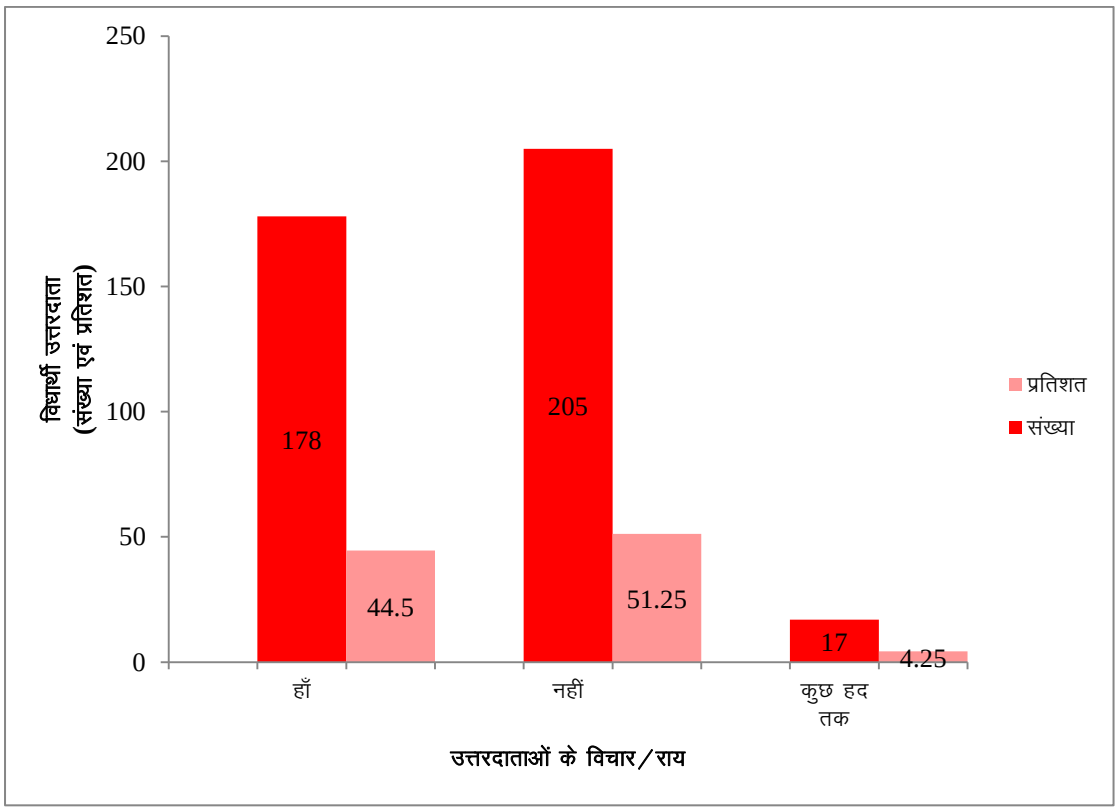

5.4.8 मध्याह्न भोजन योजना के तहत भोजन रैसीपीज में बदलाव संबंधी विद्यार्थियों के विचार

व्यक्ति का मन अति चंचल व स्वाभाविक होता है व समय के परिवर्तन के अनुसार परिवर्तित भी होता है और बच्चे तो बहुत चंचल स्वभाव के होते हैं उन्हें एक ही प्रकार का भोजन प्रिय नहीं लगता। इसलिए मध्याह्न भोजन योजना के तहत भोजन रैसीपीज में बदलाव संबंधी विचारो के विवरण को निम्न तालिका 5.4.8 के माध्यम से दर्शाया गया है जो कि इस प्रकार से हैः–

तालिका 5.4.8

भोजन रैसीपीज में बदलाव संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	विद्यार्थी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	223	55.75
2	नहीं	150	37.50
3	कुछ हद तक	27	06.75
	योग	400	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

उपरोक्त तालिका 5.4.8 के अनुसार जब विद्यार्थियों से पूछा गया कि मध्याह्न भोजन योजना में भोजन संबंधी जो रैसीपीज बनाई जाती है क्या उसमें बदलाव किया जाना चाहिए तो 55.75 प्रतिशत विद्यार्थियों ने हाँ जवाब दिया और सिर्फ 37.50 प्रतिशत विद्यार्थियों ने नहीं में जवाब दिया। नहीं कहने वाले विद्यार्थियों का कहना है कि प्रतिदिन उन्हें चावल व खिचड़ी दी जाती है जो कि उन्हें भाती ही नहीं। जबकि 6.75 प्रतिशत विद्यार्थियों ने इस बारे में बताया कि उन्हें योजना के

तहत पकाए जाने वाले व्यंजन कुछ हद तक ही अच्छे लगते हैं। सार के तौर पर यह कहा जा सकता है कि इस योजना के तहत भोजन रैसीपीज में स्वादिष्टता के आधार पर कुछ बदलाव किए जाने चाहिए।

भोजन रैसीपीज में बदलाव संबंधी विद्यार्थियों के विचारों को चार्ट 5.4.8 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.4.8

भोजन रैसीपीज में बदलाव संबंधी विचार

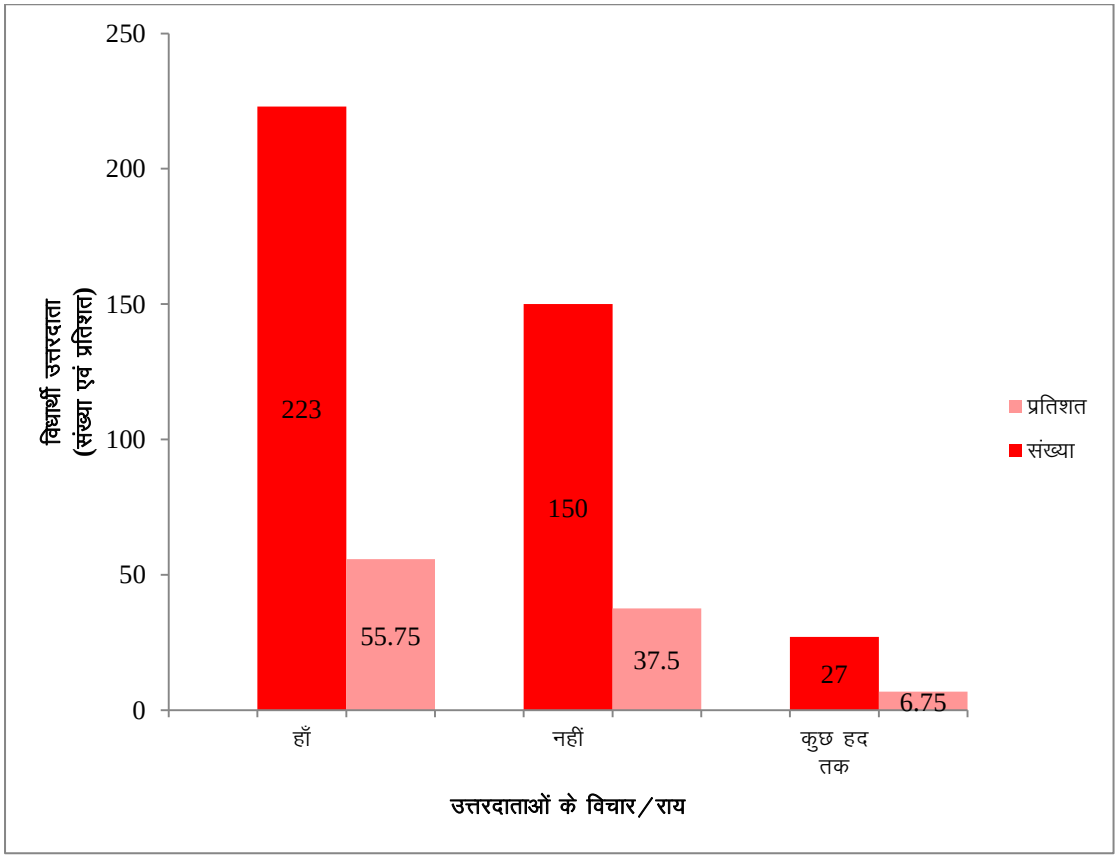

5.4.9 मध्याह्न भोजन योजना के तहत विद्यालय में भोजन संबंधी सारणी लगाए जाने संबंधी विद्यार्थियों के विचार

मध्याह्न भोजन योजना के तहत बच्चों को खाने में क्या–क्या रैसीपीज दी जानी है, इसके बारे में बच्चों को भी जानकारी हो। इसलिए रैसीपीज के विवरण की एक सारणी तैयार की गई है और वह प्रत्येक विद्यालय में लगाई जाती है। इसलिए मध्याह्न भोजन योजना के तहत दिए जाने वाले भोजन संबंधी सारणी के लगाए जाने बारे विद्यार्थियों के विचारों का विवरण नीचे तालिका 5.4.9 में दिया गया हैः–

तालिका 5.4.9

विद्यालय में भोजन संबंधी सारणी की उपलब्धता

क्र0 स0	विचार/राय	विद्यार्थी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	167	41.75
2	नहीं	205	51.25
3	कभी–कभी	28	7.00
	योग	400	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.4.9 में इस योजना के संदर्भ में जब विद्यार्थियों से पूछा गया कि क्या आपके विद्यालय में मध्याह्न भोजन योजना के तहत दिए जाने वाले भोजन की सारणी लगगाई जाती है तो 41.75 प्रतिशत विद्यार्थियों ने हाँ में उत्तर दिया जबकि 51.25 प्रतिशत विद्यार्थियों ने नहीं में जवाब दिया और बताया कि ऐसी किसी प्रकार की कोई सारणी को विद्यालय में नहीं दर्शाया गया और 7 प्रतिशत का कहना है कि जब कोई अधिकारी विद्यालयों में निरीक्षण करने के लिए आते है तो उचित सारणी

की जानकारी अध्यापकों द्वारा दी जाती है अर्थात कभी–कभी ही सारणी को दर्शाया जाता है।

विद्यालय में भोजन संबंधी सारणी के बारे में विद्यार्थियों के विचारों को चार्ट 5.4.9 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.4.9

विद्यालय में भोजन संबंधी सारणी की उपलब्धता

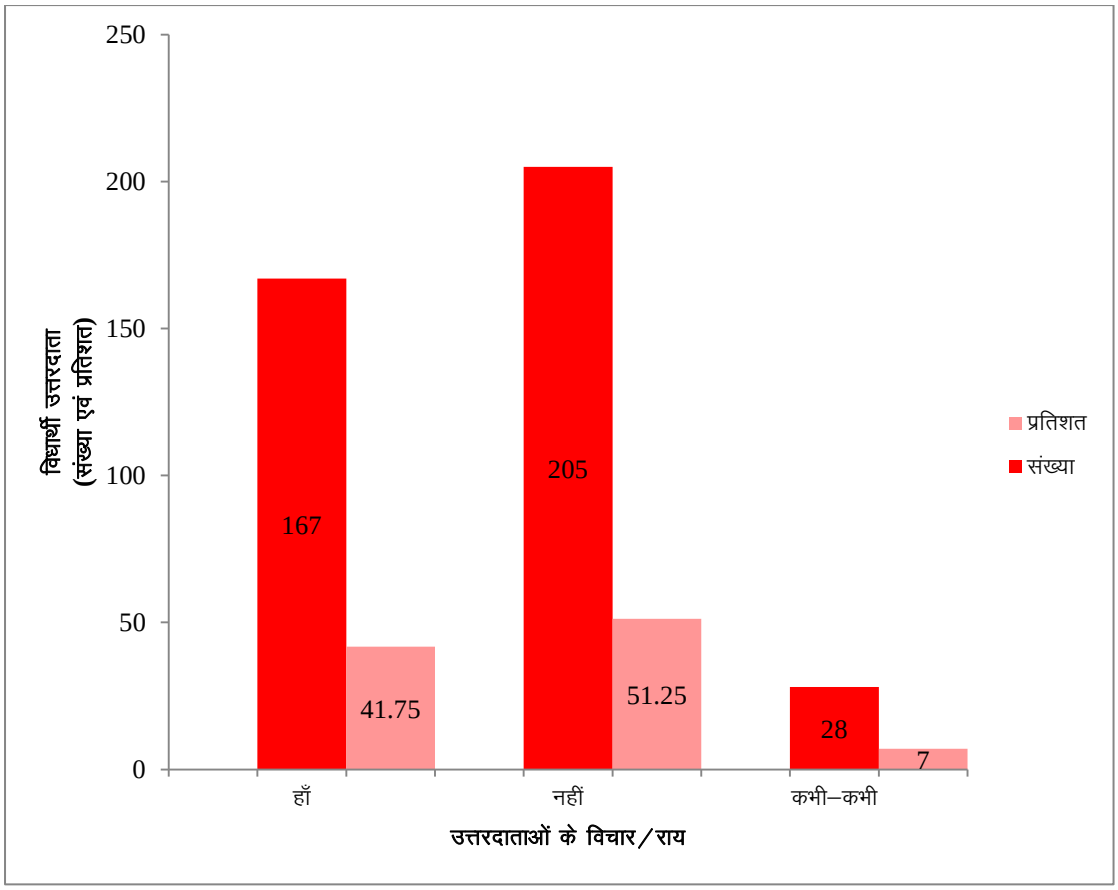

5.4.10 मध्याह्न भोजन योजना के तहत कक्षा में प्रतिदिन विद्यार्थियों की उपस्थिति संबंधी विद्यार्थियों के विचार

मध्याह्न भोजन योजना का उद्देश्य ही विद्यार्थियों की संख्या में बढ़ौतरी करना है। इस योजना से बच्चों को विद्यालय में आने की ललक पैदा हुई है या नहीं। विद्यार्थियों से इस योजना के बारे में विस्तार से जानकारी और कक्षा में प्रतिदिन विद्यार्थियों की उपस्थिति संबंधी विचारों का विवरण नीचे तालिका में दिया गया है जो इस प्रकार से हैः–

तालिका 5.4.10

कक्षा में प्रतिदिन विद्यार्थियों की उपस्थिति संबंधी विवरण

क्र0 स0	विचार/राय	विद्यार्थी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	243	60.75
2	नहीं	95	23.75
3	कभी–कभी	62	15.50
	योग	400	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

इस तालिका 5.4.10 के संदर्भ में देखने पर पता चलता है कि मध्याह्न भोजन योजना के लागू होने के बाद कक्षा में प्रतिदिन विद्यार्थियों की उपस्थिति संबंधी विद्यार्थियों के विचार में 60.75 प्रतिशत विद्यार्थियो ने हाँ में जवाब दिया जबकि 23.75 प्रतिशत विद्यार्थियों ने नहीं में उत्तर दिया लेकिन 15.50 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि कक्षा में प्रतिदिन बच्चों की उपस्थिति कभी–कभी होती है और कभी–कभी नहीं होती। निष्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता है कि इस

योजना ने एक अभिप्रेरक के रुप में काम करते हुए विद्यार्थियों की उपस्थिति को बढ़ाने का कार्य किया है।

कक्षा में प्रतिदिन उपस्थिति के बारे में विद्यार्थियों के विचारों को चार्ट 5.4.10 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.4.10

कक्षा में प्रतिदिन विद्यार्थियों की उपस्थिति संबंधी विवरण

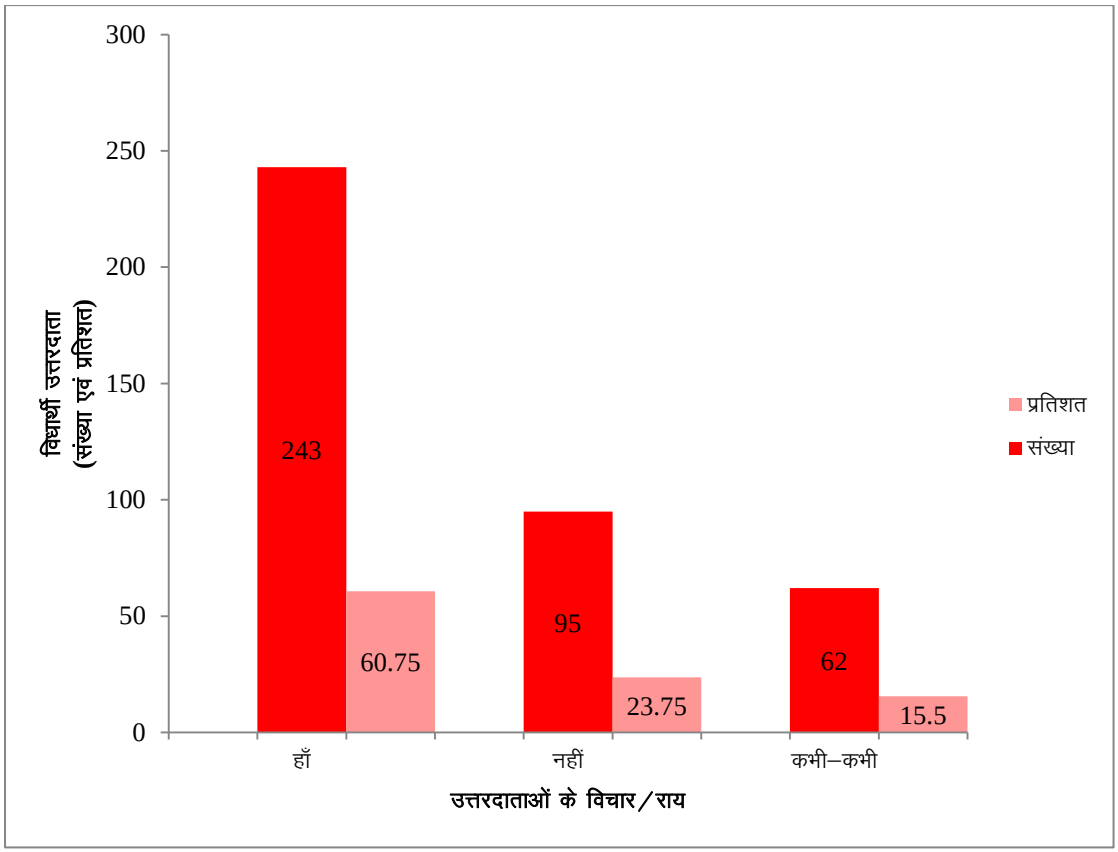

5.4.11 मध्याह्न भोजन योजना के तहत विद्यालय में हाथ धोने के लिए साबुन की व्यवस्था संबंधी विद्यार्थियों के विचार

मध्याह्न भोजन देना जितना आवश्यक है उतना ही बच्चों में हाथ धोने की प्रेरणा को भी बढ़ाना है, ताकि वह किसी भी बीमारी के संक्रमण में न आएं। तालिका 5.4.11 में विद्यार्थियों के मध्याह्न भोजन योजना के तहत खाने के साथ–साथ हाथ की सफाई संबंधी विचार पूछा गया। जिसको निम्न तालिका 5.4.11 के माध्यम से दर्शाया गया है:–

तालिका 5.4.11

विद्यालय में हाथ धोने के लिए साबुन की व्यवस्था संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	विद्यार्थी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	50	12.50
2	नहीं	215	53.75
3	कभी–कभी	135	33.75
	योग	400	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.4.11 में इस योजना के संदर्भ में विद्यार्थियों से पूछा गया कि क्या आपके विद्यालय में साबुन की व्यवस्था की गई है अर्थात दोपहर का भोजन देने से पहले आपको साबुन से हाथ धुलवाए जाते हैं या नहीं। मात्र 12.50 प्रतिशत विद्यार्थियों ने हाँ में जवाब दिया जबकि 53.75 प्रतिशत विद्यार्थियों ने नहीं में जवाब दिया और बताया कि विद्यालयों में साबुन से हाथ धोने की कोई भी उचित व्यवस्था

नहीं है जबकि 33.75 प्रतिशत ने बताया कि कभी–कभी वे बिना हाथ धोए ही भोजन कर लेते हैं।

विद्यालय में हाथ धोने के लिए साबुन की व्यवस्था के बारे में विद्यार्थियों के विचारों को चार्ट 5.4.11 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.4.11

विद्यालय में हाथ धोने के लिए साबुन की व्यवस्था संबंधी विचार

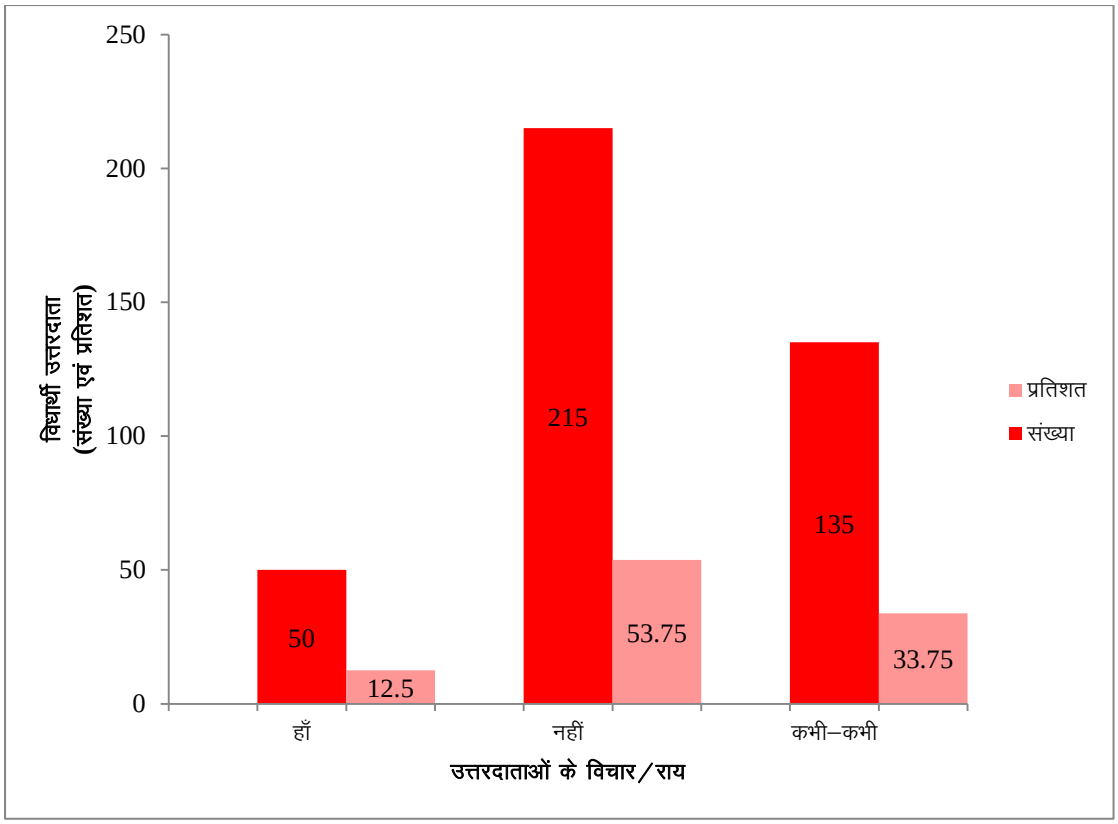

5.4.12 मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत अध्यापको द्वारा भोजन की जांच करने संबंधी विद्यार्थियों के विचार

मध्याह्न भोजन योजना के आदेशानुसार प्रत्येक विद्यालय में अध्यापकों को भोजन खाकर जांचना अति आवश्यक है कि भोजन की सामग्री की मात्रा का सही व उचित प्रयोग किया गया है या नहीं। तालिका 5.4.12 में मध्याह्न भोजन योजना संबंधी अध्यापकों द्वारा भोजन को पहले खाकर जांच करने करने संबंधी विद्यार्थियों के विचारों का विवरण दर्शाया गया है जो इस प्रकार से हैः–

तालिका 5.4.12

अध्यापक द्वारा भोजन की जांच करने संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	विद्यार्थी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	171	42.75
2	नहीं	200	50.00
3	कभी–कभी	29	07.25
	योग	400	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.4.12 में इस योजना के संदर्भ में विद्याार्थियो से पूछा कि दोपहर का जो भोजन आप खाते है उसे अध्यापक द्वारा चैक किया जाता है तो 42.75 प्रतिशत विद्यार्थियों ने हाँ में जवाब दिया और 50 प्रतिशत विद्यार्थियों ने नहीं कहा और बताया कि अध्यापक भोजन की जांच नहीं करते हैं। 7.25 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि कभी–कभी अध्यापक भोजन खा लेते है। सार के तौर पर अध्ययन के

दौरान यह पता चलता है कि ज्यादातर अध्यापक भोजन जांचने में हिचकिचाहट करते हैं।

मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत अध्यापकों द्वारा भोजन की जांच करने संबंधी विद्यार्थियों के विचारों को चार्ट 5.4.12 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.4.12

अध्यापक द्वारा भोजन की जांच करने संबंधी विचार

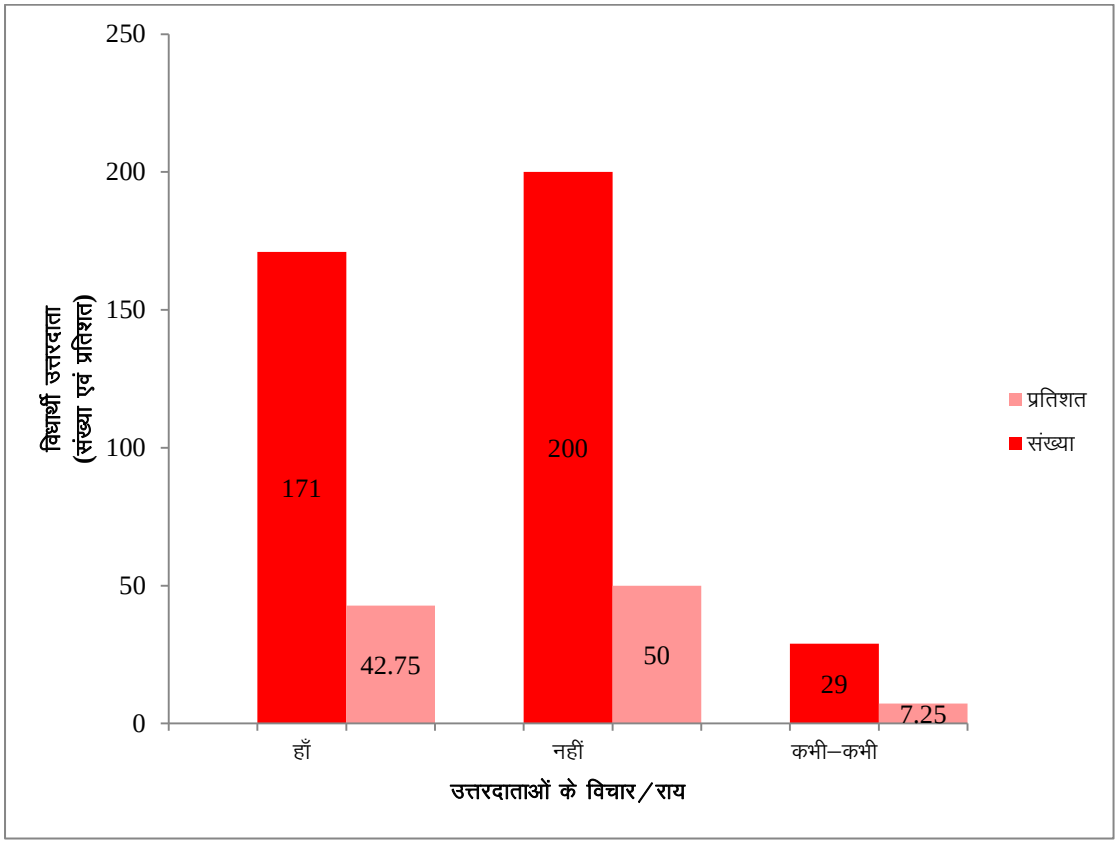

5.4.13 मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत उच्च अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा मध्याह्न भोजन के निरीक्षण करने बारे विद्यार्थियों के विचार

मध्याह्न भोजन योजना द्वारा सरकार का मुख्य उद्देश्य विद्यालयों के स्तर को ऊंचा करना भी है और इस योजना की प्रक्रिया को सही सुचारु रुप से चलाया जाए इसके लिए अधिकारियों और कर्मचारियों को भी नियुक्ति की गई है। तालिका 5.4.13 में मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत भोजन निरीक्षण हेतू उच्च अधिकारी, कर्मचारी निरीक्षण करने आते है इससे संबंधी विद्यार्थियों के विचारों को दर्शाया गया है:–

तालिका 5.4.13

मध्याह्न भोजन का उच्च अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा निरीक्षण

क्र0 स0	विचार/राय	विद्यार्थी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	120	30.00
2	नही	142	35.50
3	कभी–कभी	138	34.50
	योग	400	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.4.13 के संदर्भ में विद्यार्थियों से पूछा गया कि आपको विद्यालय में मध्याह्न भोजन के तहत दोपहर का भोजन जो उन्हें खाने के लिए दिया जाता है क्या उसका निरीक्षण करने के लिए कोई उच्च अधिकारी आता है या नहीं तो जवाब में 30 प्रतिशत विद्यार्थियों ने हाँ में उत्तर दिया जबकि 35.50 प्रतिशत विद्यार्थियों ने नहीं में उत्तर दिया और 34.50 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि अधिकारी/कर्मचारी कभी–कभी भोजन का निरीक्षण करने आते हैं।

उच्च अधिकारी/कर्मचारी द्वारा मध्याह्न भोजन के निरीक्षण संबंधी विद्यार्थियों के विचारों को चार्ट 5.4.13 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.4.13

मध्याह्न भोजन का उच्च अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा निरीक्षण

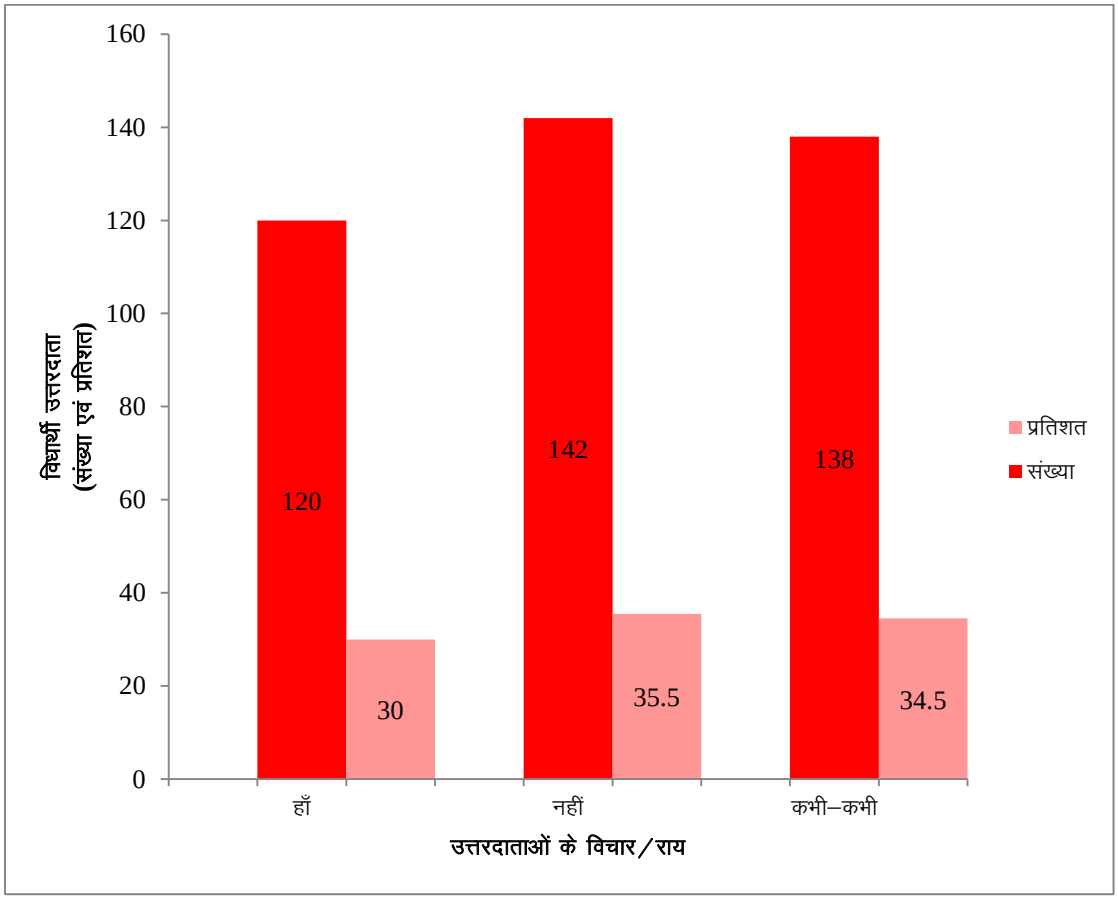

5.4.14 विद्यालय में रसोईघर/मैस की व्यवस्था संबंधी विद्यार्थियों के विचार

भोजन की शरीर को स्वस्थ रखने में अहम भूमिका है भोजन से ही बच्चों के शरीर को पोषक तत्वों की प्राप्ति होती है। इसलिए भोजन की व्यवस्था के लिए उचित स्थान व व्यवस्था का होना अति आवश्यक है। इसलिए भोजन बनाने के लिए एक उचित स्थान रसोईघर की व्यवस्था संबंधी जब विद्यार्थियों से पूछा गया तो उनके इससे संबंधी विचारों को दी गई तालिका 5.4.14 में दर्शाया गया है:–

तालिका 5.4.14

विद्यालय में रसोईघर/मैस की व्यवस्था संबंधी विद्यार्थियों के विचार

क्र0 स0	विचार/राय	विद्यार्थी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	175	43.75
2	नहीं	205	51.25
3	पता नहीं	20	05.00
	योग	400	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.4.14 के अनुसार में जब विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों से भोजन बनाने के लिए उचित स्थान रसोईघर/मैस की व्यवस्था के बारे में पूछा गया तो 43.75 प्रतिशत विद्यार्थियों ने हाँ में जवाब दिया और बताया कि खाना रसोईघर में ही बनाया जाता है। जबकि 51.25 प्रतिशत विद्यार्थियो का कहना है कि हमारे लिए भोजन खुले आंगन में ही बनाया जाता है और कई बार तो वहीं बैठाकर ही खिला दिया जाता है। जबकि 5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा कि उन्हें इस बारे में पता नहीं अर्थात पूरी जानकारी है ही नहीं। अध्ययन से यह पता चलता है कि

ज्यादातर विद्यार्थी इस पक्ष में हैं कि विद्यालय में रसोईघर/मैस की उचित व्यवस्था नहीं है।

मध्याह्न भोजन योजना के तहत विद्यालय में रसोईघर/मैस की व्यवस्था संबंधी विद्यार्थियों के विचारों को चार्ट 5.4.14 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.4.14

विद्यालय में रसोईघर/मैस की व्यवस्था संबंधी विद्यार्थियों के विचार

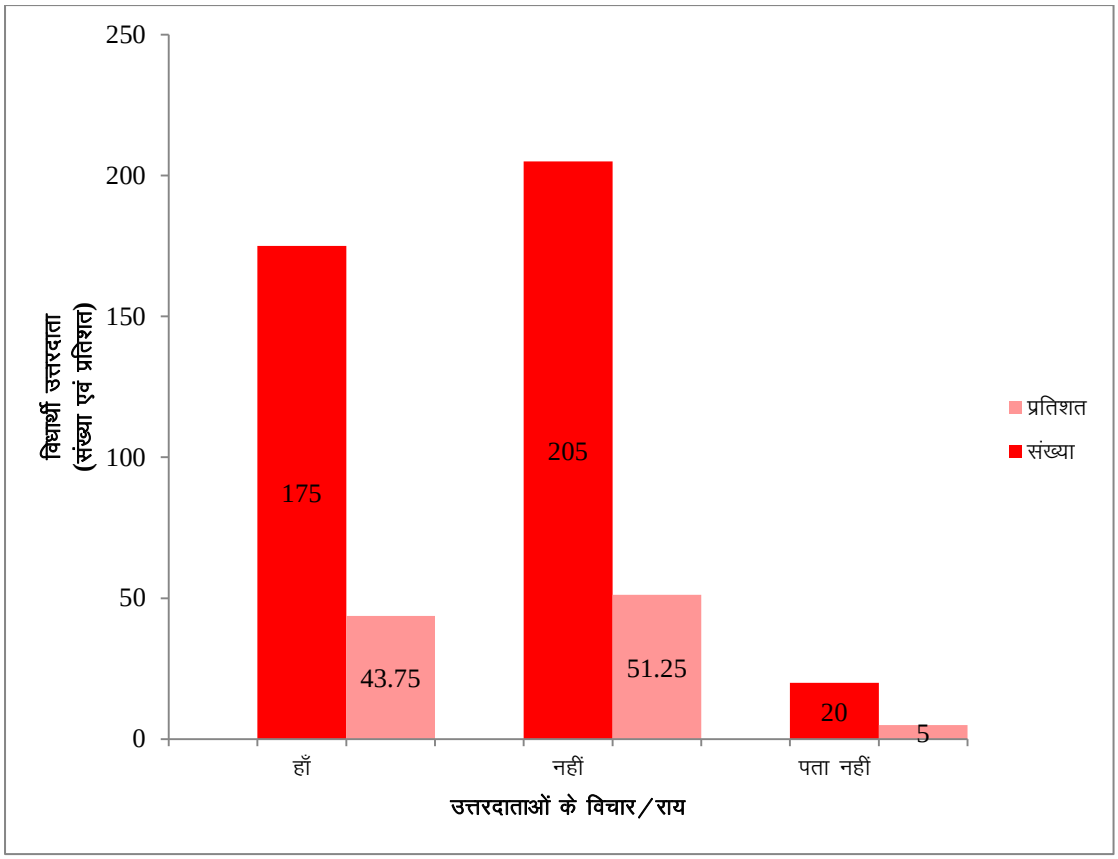

5.4.15 मध्याह्न भोजन योजना के तहत मिलने वाले भोजन में कंकड़–पत्थर आदि मिलने संबंधी विद्यार्थियों के विचार

आज का युग महंगाई का युग है जिसमें खाने–पीने की वस्तुओं के दाम बहुत अधिक हैं इसलिए कई विक्रेता खाने–पीने की वस्तुओं में मिलावट कर देते हैं जैसे पत्थर–कंकड़, कांच इत्यादि। यदि भोजन में साफ–सफाई न हो तो स्वस्थ शरीर में बीमारियों का वास हो जाता है जैसे पेट दर्द होना, उल्टी होना आदि। भोजन में पत्थर–कंकड़ मिलने संबंधी विद्यार्थियों के विचारों को तालिका 5.4.15 में इस प्रकार दर्शाया गया हैः–

तालिका 5.4.15

भोजन में मिलावट/पत्थर–कंकड़ मिलने संबंधी विद्यार्थियों के विचार

क्र0 स0	विचार/राय	विद्यार्थी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	60	15.00
2	नहीं	246	61.50
3	कभी–कभी	94	23.50
	योग	400	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.4.15 के संदर्भ में जब विद्यालय में पढने वाले विद्यार्थियों से पूछा गया कि जो भोजन आपको विद्यालय में दिया जाता है उनमें पत्थर–कंकड़ आदि तो नहीं होते तो 15 प्रतिशत विद्यार्थियों ने हाँ में उत्तर दिया और बताया कि खाने में पत्थर ककंड आदि होते है। जबकि 61.50 प्रतिशत विद्यार्थियों ने नहीं में जवाब

दिया और 23.50 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा कि कभी–कभी ऐसा होता है। लेकिन अक्सर उन्हें अच्छा भोजन ही खाने के लिए परोसा जाता है।

भोजन में मिलावट/पत्थर–कंकड़ मिलने संबंधी विद्यार्थियों के विचारों को चार्ट 5.4.15 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.4.15

भोजन में मिलावट/कंकड़ मिलने संबंधी विद्यार्थियों के विचार

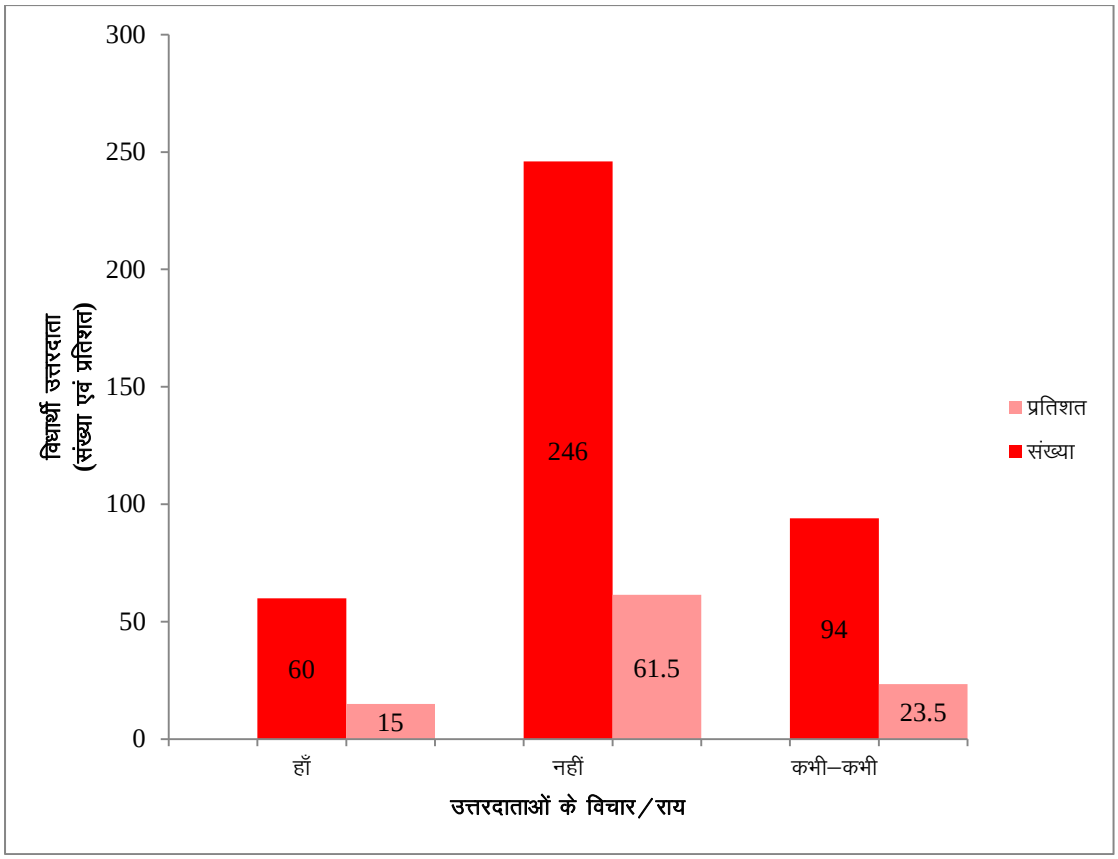

5.4.16 मध्याह्न भोजन योजना के तहत खाने वाले झूठे बर्तनों की सफाई स्वयं करने संबंधी विद्यार्थियों के विचार

भोजन को परोसने वाले बर्तनों को साफ करना अति आवश्यक है और इसकी जिम्मेवारी विद्यालय में खाना पकाने व परोसने वाले रसोइये या कुक सदस्य को ही दी गई है। इस योजना के तहत मिलने वाले भोजन के लिए प्रयोग होने वाले बर्तनों की सफाई आदि संबंधी विद्यार्थियों के विचारों को तालिका 5.4.16 में दर्शाया गया है जो कि इस प्रकार हैः–

तालिका 5.4.16

भोजन में प्रयोग होने वाले बर्तनों की साफ–सफाई स्वयं करने संबंधी विद्यार्थियों के विचार

क्र0 स0	विचार/राय	विद्यार्थी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	37	9.25
2	नहीं	296	74.00
3	कभी–कभी	67	16.75
	योग	400	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.4.16 के तहत जब विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों से भोजन के लिए प्रयोग होने वाले बर्तनों की साफ सफाई के बारे में पूछा गया तो 9.25 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि खाना खाने के बाद स्वयं बर्तनों को साफ करते है। जबकि 74 प्रतिशत विद्यार्थियो ने नहीं में जवाब दिया और बताया कि यह काम रसोई सदस्यों द्वारा किया जाता है। जबकि 16.75 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा कि

कभी–कभी वे स्वयं बर्तनों की सफाई करते हैं लेकिन अधिकतर झूठे बर्तन रसोई सदस्य द्वारा साफ किए जाते हैं।

भोजन में प्रयोग होने वाले बर्तनों की साफ–सफाई स्वयं करने संबंधी विद्यार्थियों के विचारों को चार्ट 5.4.16 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.4.16

भोजन में प्रयोग होने वाले बर्तनों की साफ–सफाई स्वयं करने संबंधी विद्यार्थियों के विचार

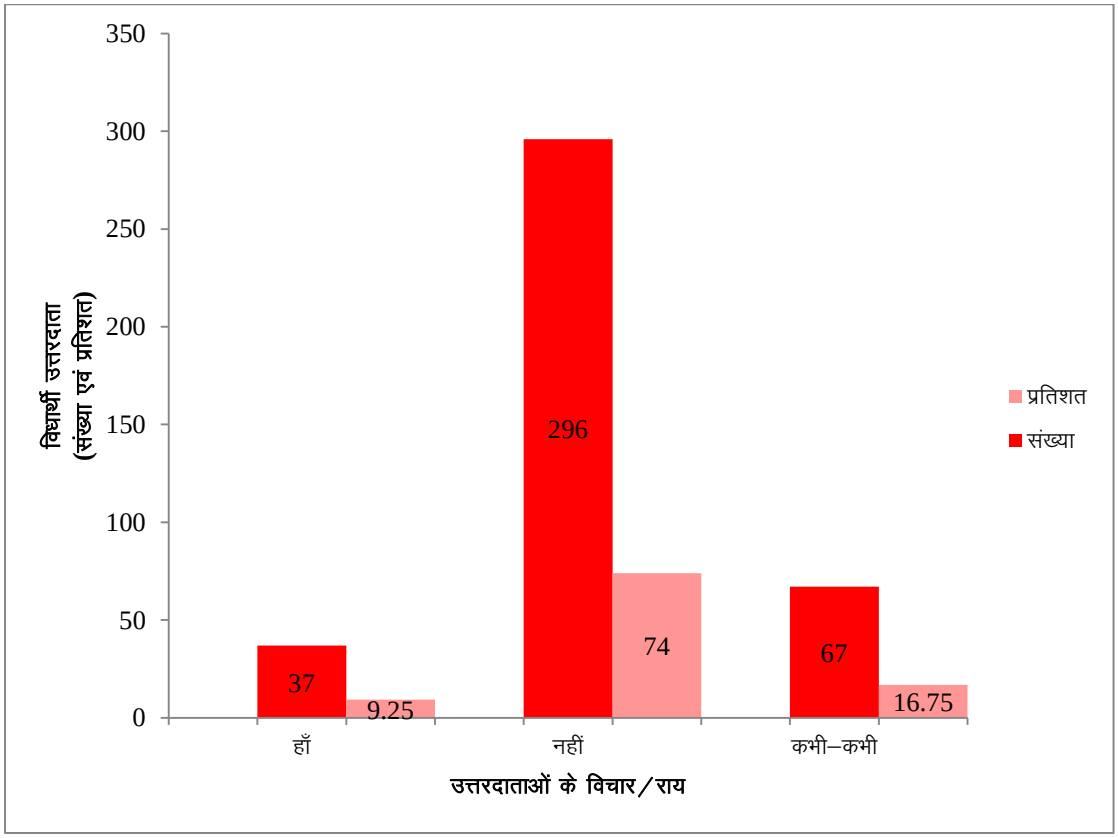

5.4.17 मध्याह्न भोजन योजना के तहत भोजन के समय हाजिरी संबंधी विद्यार्थियों के विचार

किसी भी योजना या कार्य की सफलता उसके अनुशासित नियमों पर ही आधारित होती है। मध्याह्न भोजन योजना के लिए उपस्थित विद्यार्थियों की ली जाने वाले उपस्थिति संख्या का जानना आवश्यक है इसके लिए अध्यापकों द्वारा उनकी हाजिरी संबंधी विचारों को तालिका 5.4.17 में इस प्रकार से दर्शाया गया है:–

तालिका 5.4.17

मध्याह्न भोजन के समय हाजिरी संबंधी राय

क्र0 स0	विचार/राय	विद्यार्थी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	150	37.50
2	नहीं	216	54.00
3	कभी–कभी	34	8.50
	योग	400	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.4.17 के संदर्भ में जब विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों सें पूछा गया कि क्या मध्याह्न भोजन के समय उनकी हाजिरी ली जाती है तो 37.50 प्रतिशत विद्यार्थियों ने हाँ में जवाब दिया और कहा कि मध्याह्न भोजन के समय उनकी हाजिरी ली जाती है। जबकि 54 प्रतिशत विद्यार्थियों ने नहीं में जबाव दिया और बताया भोजन के समय उनकी हाजिरी नहीं ली जाती तथा 8.50 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना है कि मध्याह्न भोजन के समय कभी–कभी ही उनकी हाजिरी ली जाती है।

मध्याह्न भोजन के समय उपस्थिति/हाजिरी लेने संबंधी विद्यार्थियों के विचारों को चार्ट 5.4.17 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.4.17

मध्याह्न भोजन योजना के समय हाजिरी संबंधी राय

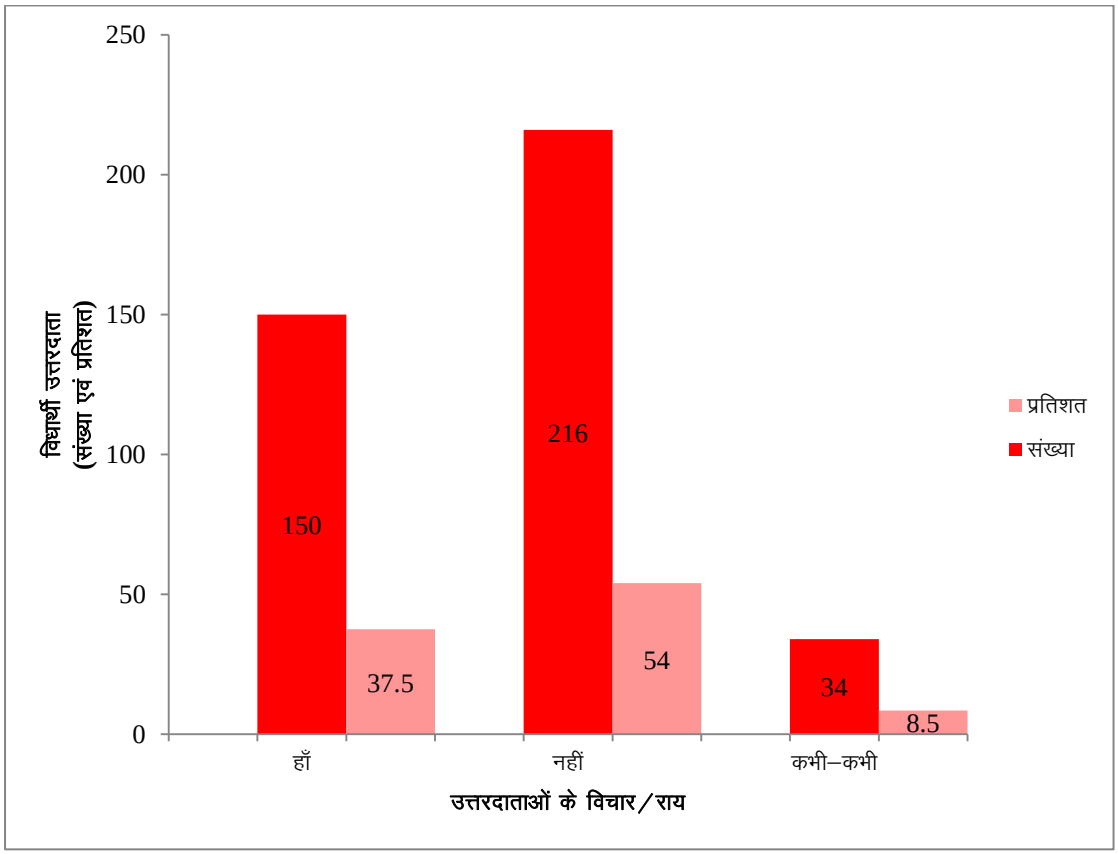

5.4.18 मध्याह्न भोजन योजना के बारे में समय–समय पर अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों को जानकारी देने संबंधी विद्यार्थियों के विचार

किसी भी योजना या कार्य की सफलता के लिए समय–समय पर नियमों में परिवर्तन किया जाता है जोकि विद्यार्थियों को लाभान्वित करने के लिए होता है। इन सब की जानकारी अध्यापकों को होनी चाहिए। इससे अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों को भी अवगत करवाया जाना चाहिए। क्या अध्यापकों द्वारा ऐसी जानकारी उन्हें मिलती है इस बारे में विद्यार्थियों के विचारों को तालिका 5.4.18 में इस प्रकार से दर्शाया गया हैः–

तालिका 5.4.18

योजना के बारे में समय–समय पर अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों को जानकारी देने हेतू विचार

क्र0 स0	विचार/राय	विद्यार्थी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	157	39.25
2	नहीं	154	38.50
3	कभी–कभी	89	22.25
	योग	400	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.4.18 के संदर्भ में जब विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों सें यह पूछा गया कि क्या अध्यापकों द्वारा उन्हें मध्याह्न भोजन योजना की समय–समय पर जानकारी दी जाती है तो 39.25 प्रतिशत विद्यार्थियों ने हाँ में जवाब दिया और बताया कि आज भोजन में कौन सी रैसीपीज बनेगी आदि संबंधी जानकारी दी जाती है। जबकि 38.50 प्रतिशत विद्यार्थियों ने नहीं में जवाब दिया और बताया कि

अधिकतर अध्यापक अध्यापन/अध्ययन कार्य या दूसरे सरकारी कार्यलय संबंधी कार्यो में व्यस्त रहते है और उन्हें भोजन योजना संबंधी किसी प्रकार की जानकारी नहीं दे पाते और 22.25 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा कि कभी–कभी अध्यापकों द्वारा उन्हें इस योजना के बारे में समय–समय पर जानकारी दी जाती है। निष्कर्ष तौर पर यह कहा जा सकता है कि अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों को इस योजना के संबंध में जानकारी कम ही दी जाती है।

योजना के बारे में समय–समय पर अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों को जानकारी देने संबंधी विद्यार्थियों के विचारों को चार्ट 5.4.18 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.4.18

योजना के बारे में समय–समय पर अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों को जानकारी देने हेतू विचार

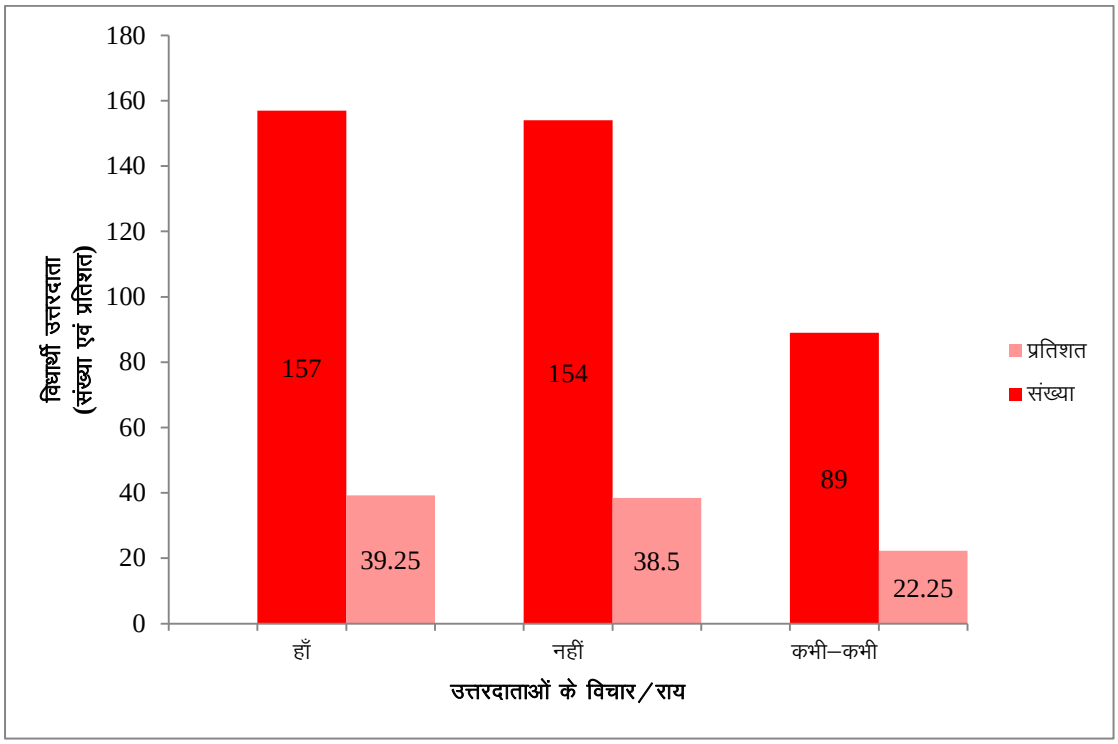

5.4.19 मध्याह्न भोजन योजना के तहत विद्यालयों में विद्यार्थियों को मौसमी फल आदि देने संबंधी विद्यार्थियों के विचार

भोजन से पोषक तत्वों की प्राप्ति तो होती है परन्तु यदि मौसम के अनुसार फल आदि दिए जाएँ तो सोने पे सुहागा वाली बात होती है अर्थात् मौसम में होने वाले फल/सब्जी आदि भी शरीर को स्वस्थ बनाते है। इस संबंध में विद्यार्थियों के विचारों को तालिका 5.4.19 में इस प्रकार से दर्शाया गया है:–

तालिका 5.4.19

मध्याह्न भोजन योजना के तहत मौसमी फल/सब्जी आदि देने संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	विद्यार्थी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	130	32.50
2	नहीं	130	32.50
3	कभी–कभी	140	35.00
	योग	400	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.4.19 के अनुसार में जब विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों सें पूछा गया कि क्या मध्याह्न भोजन योजना के तहत उन्हें भोजन में मौसमी फल/सब्जी आदि दिए जाते हैं तो 32.50 प्रतिशत विद्यार्थियों ने हाँ में जवाब दिया जबकि 32.50 प्रतिशत विद्यार्थियो ने नहीं में जवाब दिया और बताया कि भोजन में सरकार द्वारा निर्धारित रैसीपीज ही अधिकतर उन्हें दी जाती है। जबकि 35 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना है कि उन्हें भोजन के साथ–साथ मौसमी फल/सब्जी आदि

दिए जाते हैं। उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मध्याह्न भोजन योजना के तहत विद्यार्थियों को मौसमी फल बहुत कम ही बार दिए जाते हैं।

मध्याह्न भोजन योजना के तहत मौसमी फल/सब्जी आदि देने संबंधी विद्यार्थियों के विचारों को चार्ट 5.4.19 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.4.19

मध्याह्न भोजन योजना के तहत मौसमी फल/सब्जी आदि देने संबंधी विचार

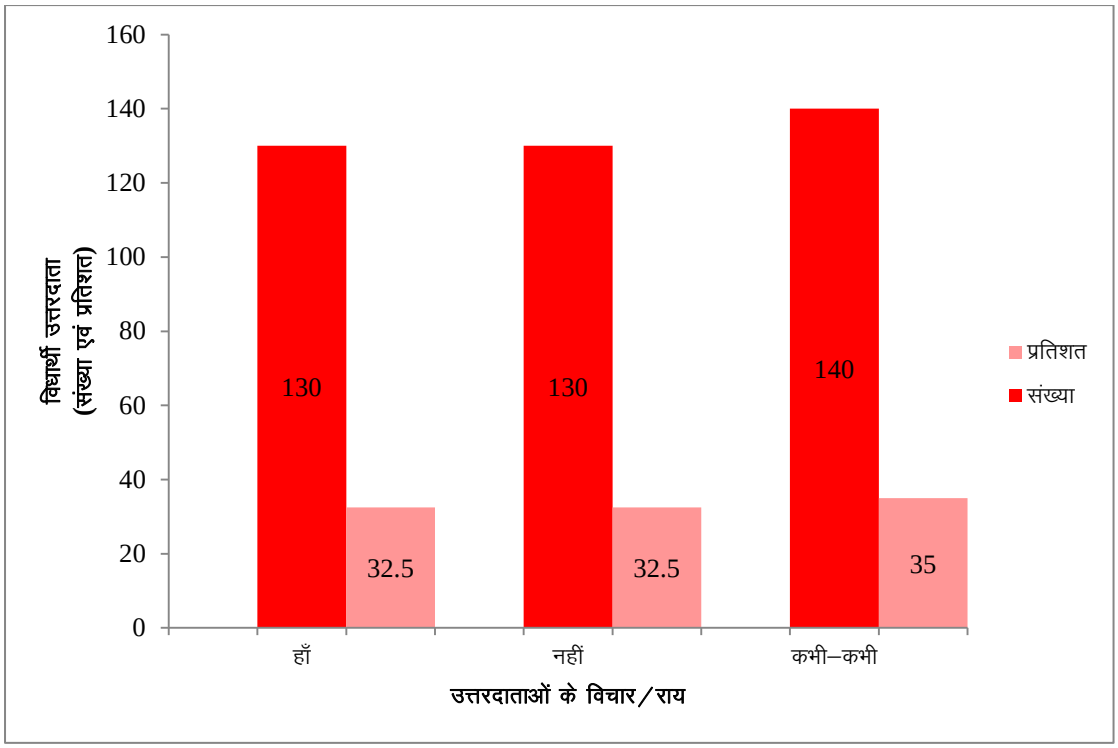

5.5 अध्यापक उत्तरदाताओं के विचार : एक विश्लेषण

हिसार मंडल के पांच जिलों के प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की मध्याह्न भोजन योजना संबंधी विस्तार से जानकारी हेतू प्रश्नावली द्वारा इकट्ठी की गई सूचना के आधार पर उत्तरदाताओं के विचार निम्न प्रकार से हैं:–

5.5.1 मध्याह्न भोजन योजना संबंधी विस्तार से जानकारी हेतू अध्यापकों के विचार

मध्याह्न भोजन योजना जो कि हरियाणा के प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों में लागू की गई है के अन्तर्गत विद्यालय में बच्चों को स्वच्छ और साफ–सुथरा पोष्टिक भोजन खिलाने की जिम्मेवारी अध्यापकों को भी दी गई है। इसलिए इस योजना की जानकारी अध्यापकों को विस्तारपूर्ण होनी चाहिए। क्या अध्यापकों को उसकी पूर्णतया जानकारी है या नहीं इससे संबंधी अध्यापकों के विचारों को इस प्रकार से नीचे तालिका में दर्शाया गया है:–

तालिका 5.5.1

मध्याह्न भोजन योजना की विस्तार से जानकारी संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अध्यापक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	101	63.12
2	नहीं	19	11.88
3	कुछ–कुछ	40	25.00
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.5.1 के अन्तर्गत जब अध्यापकों से यह पूछा गया कि उन्हें मध्याह्न भोजन योजना के बारे में विस्तार से जानकारी है या नहीं तो 63.12 प्रतिशत अध्यापको ने हाँ में जबाव दिया और 11.88 प्रतिशत अध्यापको को मध्याह्न भोजन योजना के बारे में विस्तार से अर्थात पूर्णतया जानकारी है ही नहीं। उनका कहना था कि ये तो मालूम है कि विद्यालयों में यह योजना लागू की गई है परन्तु इसके बारे में अधिक जानकारी नहीं और 25 प्रतिशत अध्यापको को इस योजना की कुछ–कुछ जानकारी अवश्य है।

मध्याह्न भोजन योजना की विस्तार से जानकारी संबंधी अध्यापकों के विचारों को चार्ट 5.5.1 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट.5.5.1

मध्याह्न भोजन योजना की विस्तार से जानकारी संबंधी विचार

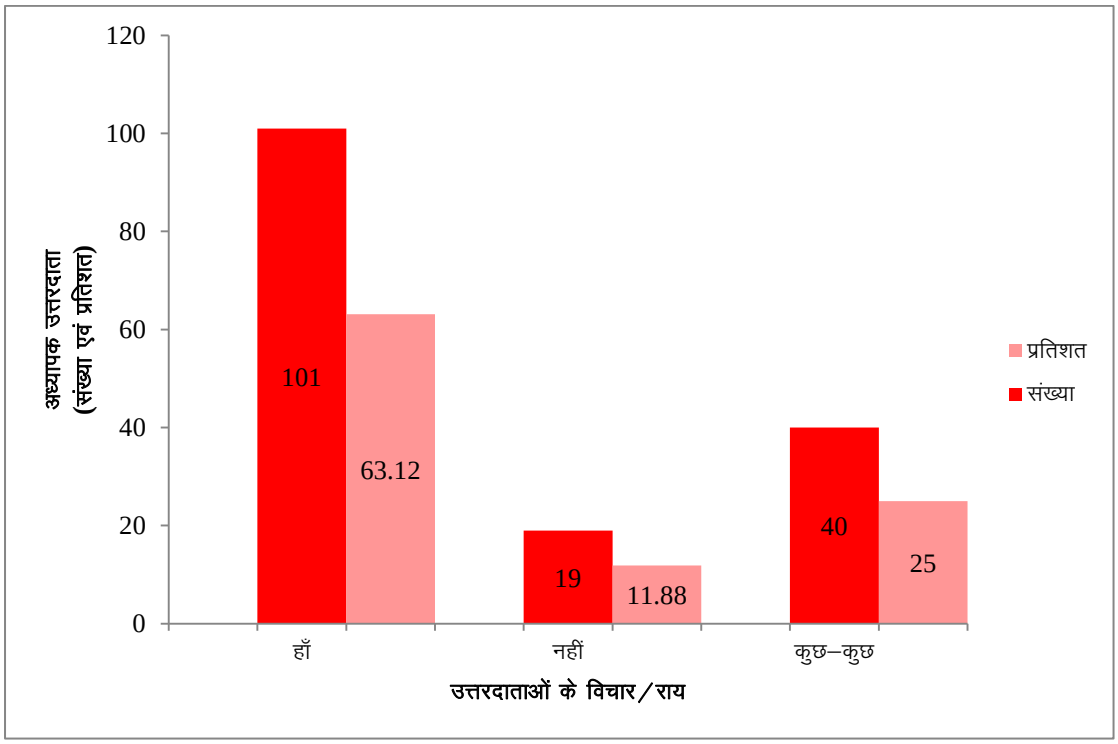

5.5.2 मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत इस स्कीम से विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या में बढ़ोतरी संबंधी अध्यापकों के विचार

इस योजना के लागू करने का मुख्य उद्देश्य विद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या वृद्धि करना है और शिक्षा के स्तर को ऊचाँ उठाने व उचित रूप से लागू करना भी है। इसलिए इससे संबंधी अध्यापकों के विचारों को दर्शाया गया है जो इस प्रकार से हैः–

तालिका 5.5.2

विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अध्यापक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	116	72.50
2	नहीं	25	15.62
3	पता नहीं	19	11.88
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.5.2 को देखने से पता चलता है जब अध्यापकों से इस योजना के उद्देश्य की पूर्ति हेतू पूछा गया तो 72.50 प्रतिशत अध्यापकों ने हाँ में जवाब दिया। उनका मानना है कि मध्याह्न भोजन योजना को विद्यालयों में लागू करने से बच्चों की संख्या व नामांकन में वृद्धि अवश्य हुई है। जबकि 15.62 प्रतिशत अध्यापकों का जवाब नहीं में था और उनका कहना है कि विद्यार्थियों की संख्या में कोई खास वृद्धि नहीं हुई हैं और 11.88 प्रतिशत अध्यापकों को इस बारे में कुछ पता ही नहीं।

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि मध्याह्न भोजन योजना के फलस्वरुप निश्चित तौर पर विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि हुई है।

मध्याह्न भोजन योजना से विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि के बारे में अध्यापकों के विचारों को चार्ट 5.5.2 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.5.2

विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि संबंधी विचार

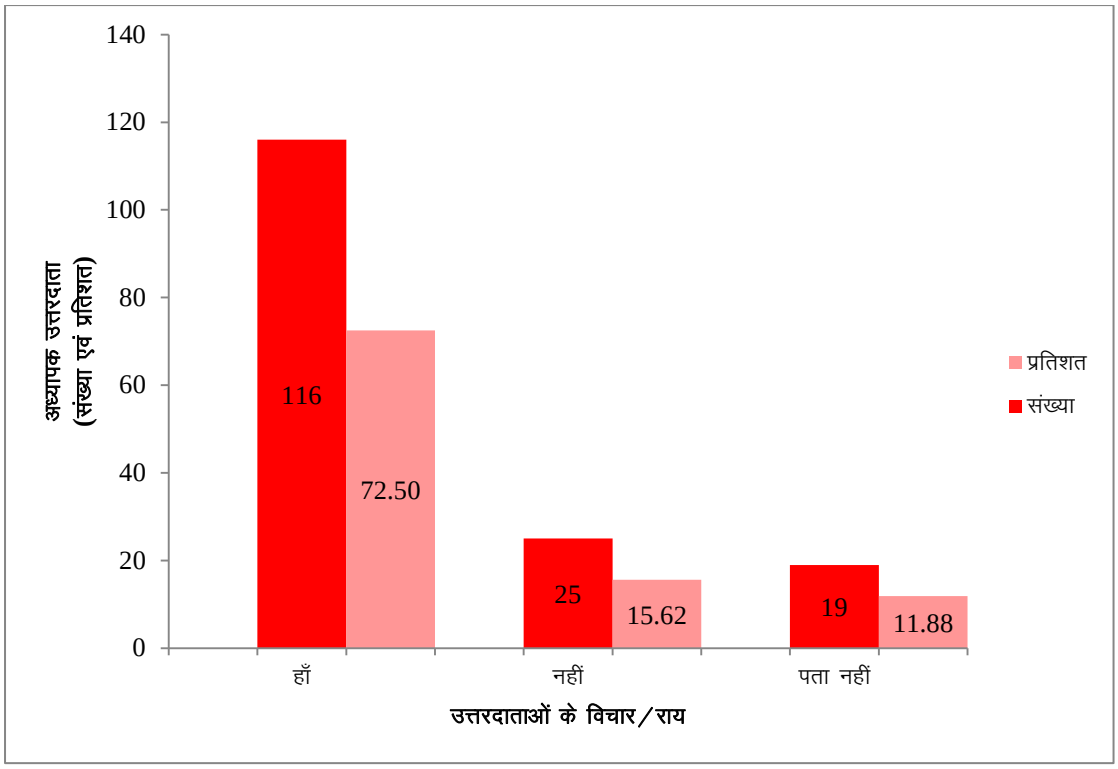

5.5.3 मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत दी जाने वाली धनराशि की समय पर उपलब्धता संबंधी अध्यापकों के विचार

किसी भी योजना व कार्य के लिए धन की आवश्यकता पड़ती है और यदि उस धन की समय पर उपलब्धता न हो तो कार्य पूरा नहीं हो सकता। तालिका 5.5.3 में मध्याह्न भोजन योजना के तहत विद्यालयों में भोजन के लिए दी जाने वाली धनराशि की समय पर उपलब्धता के बारे में अध्यापकों के विचारों को दर्शाया गया है जो इस प्रकार से हैः–

तालिका 5.5.3

राशि की समय पर उपलब्धता

क्र0 स0	विचार/राय	अध्यापक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	30	18.75
2	नहीं	110	68.75
3	कभी–कभी	20	12.50
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.5.3 के अन्तर्गत जब अध्यापको से यह पूछा गया कि विद्यालय में मध्याह्न भोजन योजना के तहत राशि समय पर उपलब्ध हो जाती है तो 18.75 प्रतिशत अध्यापकों ने हाँ में जवाब दिया जबकि 68.75 प्रतिशत अध्यापकों ने नहीं कहा और 12.50 प्रतिशत अध्यापकों ने बताया कि कभी–कभी भोजन के लिए उन्हें पहले स्वयं ही जेब से खर्च करना पड़ता है और कई बार उन्हें राशि मिल जाती है तो कई बार नहीं मिलती। निष्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता है कि इस

योजना के तहत दी जाने वाली धनराशि की समय पर उपलब्धता बहुत आवश्यक है ताकि योजना को सुचारु रुप से चलाया जा सके।

मध्याह्न भोजन योजना के अन्तर्गत राशि की समय पर उपलब्धता के बारे में अध्यापकों के विचारों को चार्ट 5.5.3 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.5.3

राशि की समय पर उपलब्धता

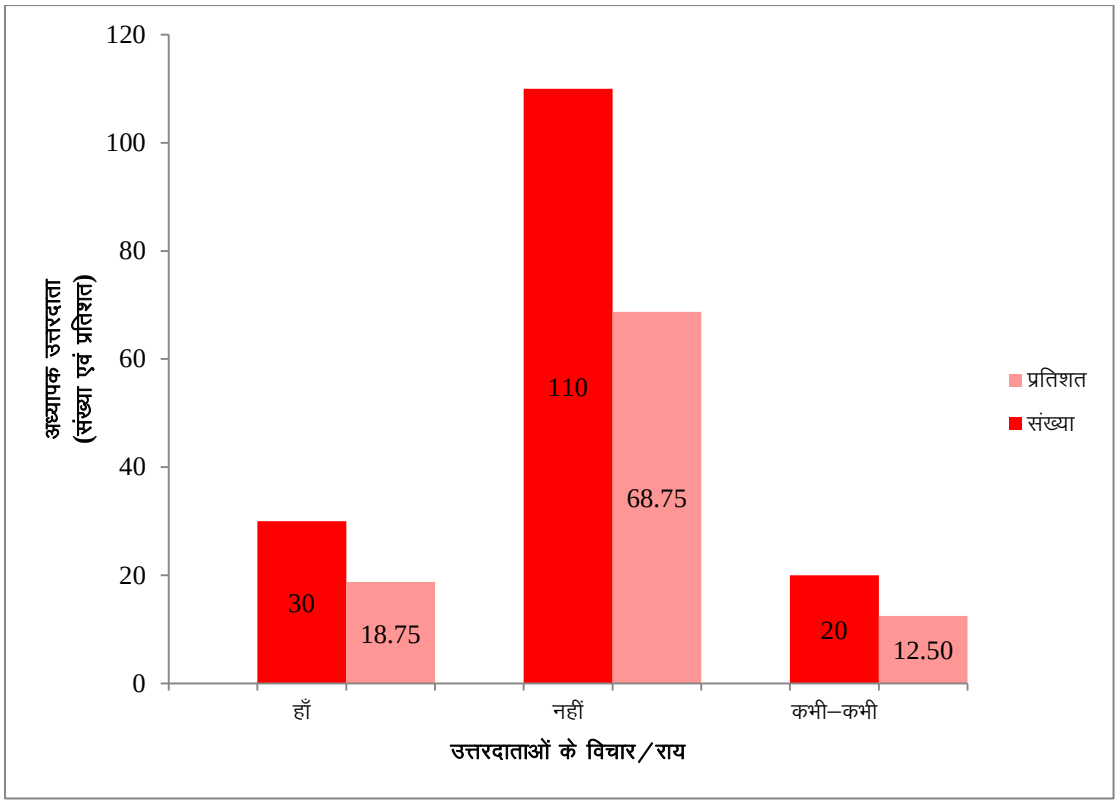

5.5.4 मध्याह्न भोजन योजना गरीब बच्चों के लिए उपयुक्त हैं या नहीं संबंधी अध्यापकों के विचार

भारत में कुपोषण का मुख्य कारण गरीबी है, जिससे पोषक भोजन न मिलने से बहुत से बच्चे कुपोषण का शिकार हो जाते हैं। मध्याह्न भोजन योजना का मुख्य उद्देश्य विद्यालयों में बच्चों को निःशुल्क भोजन प्रदान करना है। गरीब बच्चों के लिए यह योजना बहुत उपयुक्त लगती है। तालिका 5.5.4 में अध्यापकों से पूछा गया कि हरियाणा में सरकार द्वारा चलाई गई मध्याह्न भोजन योजना गरीब बच्चों के लिए सही व उपयुक्त है या नहीं इससे संबंधी उनके विचारों को दर्शाया गया है:–

तालिका 5.5.4

गरीब बच्चों के लिए योजना की उपयुक्तता

क्र0 स0	विचार/राय	अध्यापक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	123	76.88
2	नहीं	18	11.25
3	पता नहीं	19	11.87
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.5.4 देखने से पता चलता है कि जब अध्यापको से पूछा गया कि हरियाणा सरकार द्वारा चलाए गए मध्याह्न भोजन योजना गरीब बच्चों के लिए उपयुक्त है या नहीं तो 76.88 प्रतिशत अध्यापकों ने हाँ में जवाब दिया और उनका कहना है कि यह योजना गरीब बच्चों के लिए सही व उपयुक्त है। जबकि 11.25

प्रतिशत शिक्षकों ने कहा नहीं तथा 11.87 प्रतिशत अध्यापकों ने बताया कि उन्हें इस बारे में कुछ पता नहीं। उपरोक्त तथ्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि मध्याह्न भोजन योजना गरीब बच्चों को शिक्षा प्रदान करने में रामबाण औषधि का काम कर रही है।

मध्याह्न भोजन योजना की गरीब बच्चों के लिए उपयुक्तता के बारे में अध्यापकों के विचारों को चार्ट 5.5.4 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.5.4

गरीब बच्चों के लिए योजना की उपयुक्तता

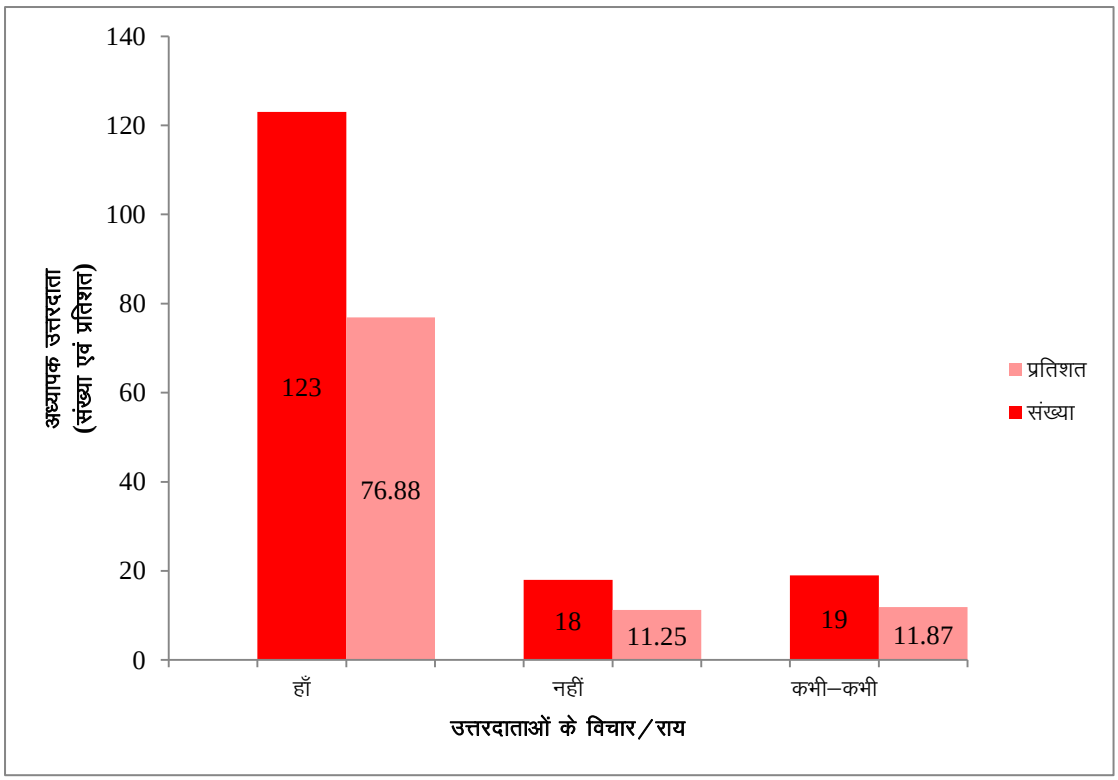

5.5.5. दोपहर के भोजन के कारण अध्यापकों को अध्यापन/अध्ययन कार्य में परेशानी संबंधी अध्यापकों के विचार

विद्यालय में विद्यार्थियों को शिक्षा देना अति आवश्यक समझा जाता है परन्तु मध्याह्न भोजन योजना का उद्देश्य तो शिक्षा के साथ–साथ भोजन देना ही है। शिक्षा के साथ–साथ विद्यालय में भोजन देने से शिक्षा पर प्रभाव अवश्य ही पड़ेगा। मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत विद्यालयों में दोपहर को बच्चों के भोजन देते समय अध्ययन कार्य प्रभावित होता है या नहीं इससे संबंधी अध्यापकों के विचारों को तालिका 5.5.5 में दर्शाया गया है:–

तालिका 5.5.5

मध्याह्न भोजन योजना के कारण अध्यापन/अध्ययन कार्य पर प्रभाव

क्र0 स0	विचार/राय	अध्यापक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	108	67.50
2	नहीं	35	21.88
3	कुछ हद तक	17	10.62
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.5.5 को देखने से पता चलता है कि जब अध्यापकों से पूछा गया कि उन्हें मध्याह्न भोजन योजना से परेशानी का सामना करना पड रहा है तो 67.50 प्रतिशत अध्यापकों ने हाँ कहा और बताया कि सबसे ज्यादा परेशानी अध्यापन/अध्ययन कार्य करवाने में होती है जबकि 21.88 प्रतिशत अध्यापकों ने कहा कि इस योजना से अध्ययन कार्य में उन्हें कोई परेशानी नहीं। इसके तहत

एक अध्यापक को इस योजना का कार्यभार दिया जाता है। 10.62 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि कुछ हद तक उन्हें इस योजना के कारण परेशानी का सामना करना पड़ता है। सार के तौर पर यह कहा जा सकता है कि मध्याह्न भोजन योजना जोकि शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए शुरु की गई थी, वह ही मूलरुप से अध्यापन कार्य में धीरे–धीरे बाधा बनती जा रही है।

मध्याह्न भोजन योजना से अध्यापन/अध्ययन कार्य या अनुशासन रखने में परेशानी का सामना करने संबंधी अध्यापकों के विचारों को चार्ट 5.5.5 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.5.5

मध्याह्न भोजन योजना के कारण अध्यापन/अध्ययन कार्य पर प्रभाव

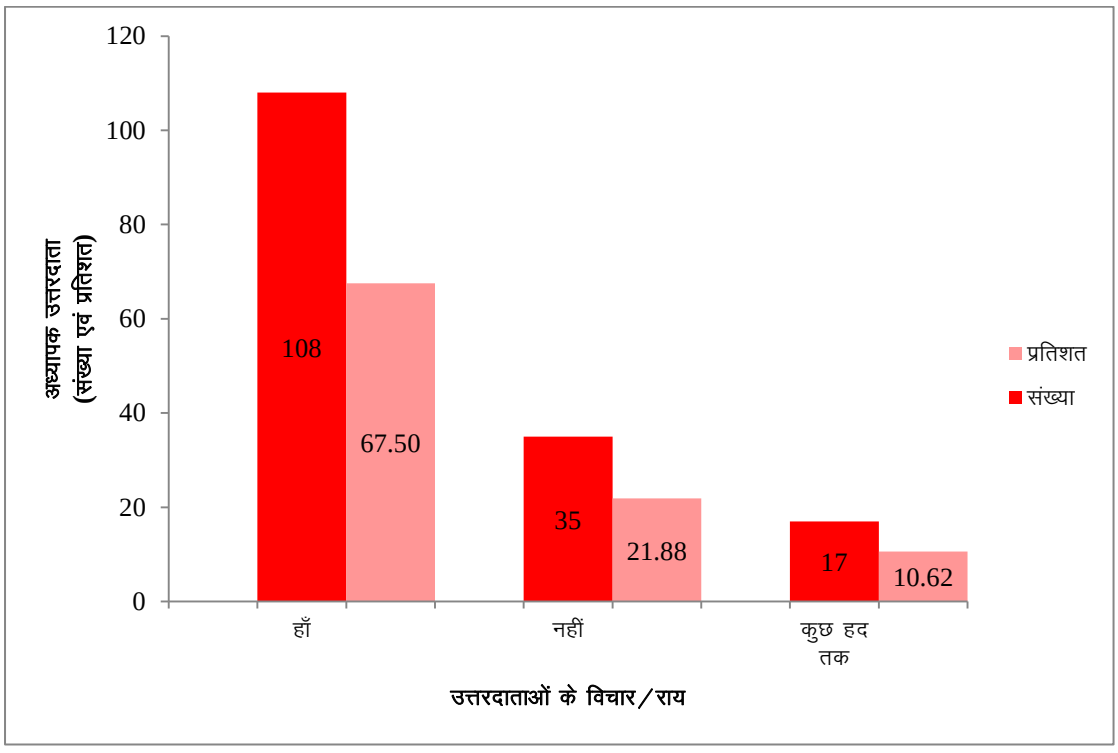

5.5.6 मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत विद्यालयों में भोजन बनाते समय सफाई का विशेष ध्यान रखने संबंधी अध्यापकों के विचार

भोजन बनाने का स्थान साफ–सुथरा हों ताकि उस पर किसी प्रकार के जहरीले कीटाणु न पड़ सकें तभी भोजन अच्छा और पौष्टिक बनता है। मध्याह्न भोजन योजना के तहत भोजन बनाते समय सफाई का विशेष ध्यान रखने संबंधी अध्यापकों के विचारों को तालिका 5.5.6 में दर्शाया गया है जो कि इस प्रकार से है:–

तालिका 5.5.6

भोजन बनाते समय सफाई का ध्यान रखने संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार / राय	अध्यापक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	70	43.76
2	नहीं	45	28.12
3	कभी–कभी	45	28.12
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.5.6 को देखने से पता चलता है कि जब अध्यापकों से पूछा गया कि दोपहर के लिए खाना बनाते समय रसोई और विद्यालय में सफाई का ध्यान रखा जाता है तो 43.76 प्रतिशत अध्यापकों ने हाँ में जवाब दिया और बताया कि भोजन बनाते समय सफाई का ध्यान रखा जाता है जबकि 28.12 प्रतिशत अध्यापकों ने नहीं में जवाब दिया और बताया कि सफाई का ध्यान नहीं रखा जाता जबकि 28.12 प्रतिशत अध्यापकों ने भी बताया कि विद्यालय में कभी–कभी ही सफाई का

ध्यान रखा जाता है जब कभी उच्च प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा निरीक्षण हों या कोई खास त्यौहार या पर्व हों।

भोजन बनाते समय सफाई का ध्यान रखने संबंधी अध्यापकों के विचारों को चार्ट 5.5.6 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.5.6

भोजन बनाते समय सफाई का ध्यान रखने संबंधी विचार

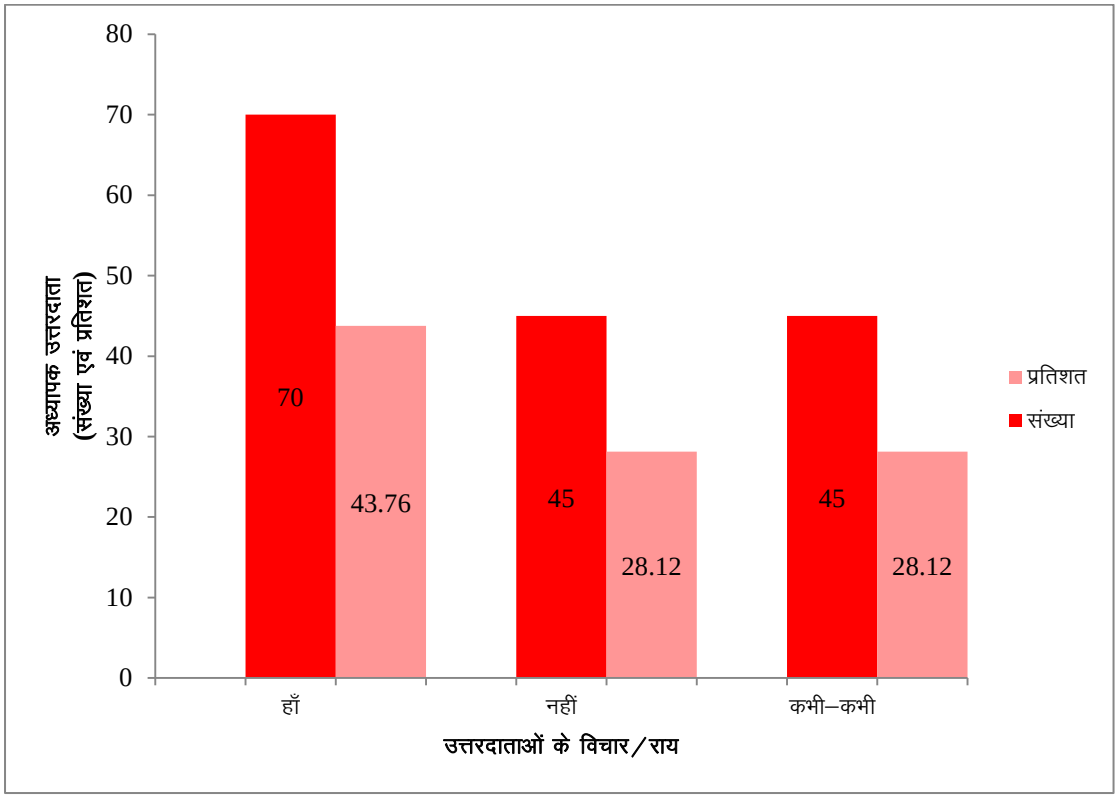

5.5.7 मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत विद्यालयों में अध्यापकों द्वारा भोजन की जांच करने संबंधी अध्यापकों के विचार

मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत विद्यालयों में बनाए गए भोजन जो दोपहर को बच्चों को खिलाया जाता है क्या वह भोजन विद्यार्थियों के लिए ज्यादा गर्म या ठण्ड़ा तो नहीं है तथा भोजन पोष्टिक है या नहीं, अध्यापकों द्वारा इसकी जांच करना आवश्यक है। इसलिए भोजन परोसने से पहले अध्यापक स्वयं भोजन को जांचते हैं या नहीं इससे संबंधी विचारों को तालिका 5.5.7 में दर्शाया गया है जो कि इस प्रकार से हैः–

तालिका 5.5.7

अध्यापक द्वारा भोजन की जांच करने संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अध्यापक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	105	65.63
2	नहीं	30	18.75
3	कभी–कभी	25	15.62
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.5.7 को देखने से यह पता चलता है कि जब अध्यापकों से पूछा गया कि विद्यार्थियों को खाना खिलाने से पहले अध्यापकों द्वारा भोजन की जांच की जाती है या नहीं तो 65.63 प्रतिशत अध्यापकों ने हाँ में जवाब दिया और कहा कि भोजन जांचने का आदेश सरकार द्वारा दिया गया है इसलिए अध्यापक भोजन को

अवश्य चखते हैं। जबकि 18.75 प्रतिशत अध्यापकों ने नहीं में जवाब दिया तथा 15.62 प्रतिशत अध्यापकों ने कहा कि वे कभी–कभी भोजन को चख लेते हैं।

विद्यार्थियों को भोजन परोसने से पहले भोजन की जांच करने के बारे में अध्यापकों के विचारों को चार्ट 5.5.7 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.5.7

अध्यापक द्वारा भोजन की जांच करने संबंधी विचार

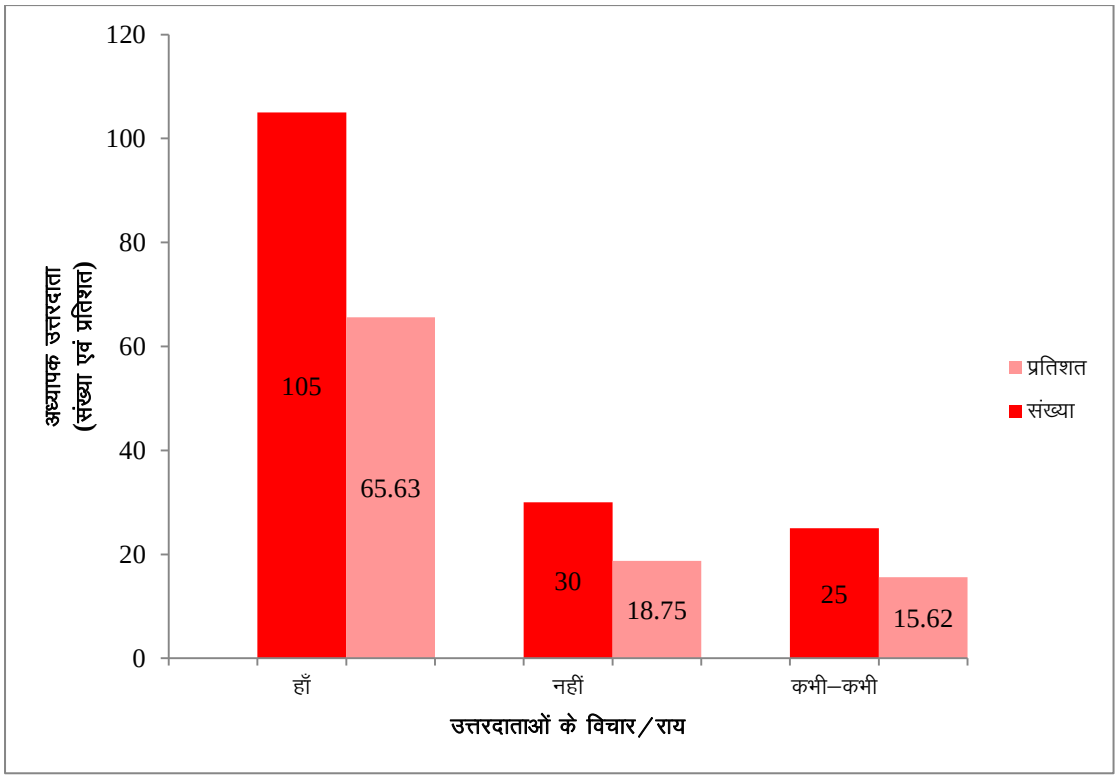

5.5.8 मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत रसोईया/कुक सदस्य की नियुक्ति योग्यता के आधार पर करने संबंधी अध्यापकों के विचार

मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत खाने पकाने के लिए नियुक्ति किए गए रसोइया/कुक सदस्यों की योग्यता निश्चित होती है। उन्हें निर्धारित आधार पर नियुक्त किया जाता है या नहीं, इससे संबंधी अध्यापकों की विचारों को निम्न तालिका 5.5.8 में दर्शाया गया है जो इस प्रकार से है:–

तालिका 5.5.8

रसोईये/कुक सदस्य की नियुक्ति योग्यता के आधार पर करने संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अध्यापक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	61	38.12
2	नहीं	53	33.13
3	पता नहीं	46	28.75
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

उपरोक्त तालिका 5.5.8 से पता चलता है कि जब अध्यापको से पूछा गया कि क्या रसोईये की नियुक्ति का आधार योग्यता है तो 38.12 प्रतिशत अध्यापकों ने हाँ में जवाब दिया। जबकि 33.13 प्रतिशत अध्यापकों ने नहीं में जवाब दिया और बताया कि रसोईया/कुक सदस्य की नियुक्ति योग्यता के आधार पर नहीं की जाती है बल्कि आरक्षण के आधार पर अवश्य होती है। जबकि 28.75 प्रतिशत अध्यापकों का कहना है कि उन्हें इस बारे में कोई जानकारी नहीं है। निष्कर्ष तौर पर कहा

जा सकता है कि रसोईया/कुक सदस्य की नियुक्ति में सहूलियत के दृष्टिकोण को ज्यादा अपनाया जाता है।

मध्याह्न भोजन योजना के अन्तर्गत रसोईये/कुक सदस्य की नियुक्ति योग्यता के आधार पर करने संबंधी अध्यापकों के विचारों को चार्ट 5.5.8 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.5.8

रसोईये/कुक सदस्य की नियुक्ति योग्यता के आधार पर करने संबंधी विचार

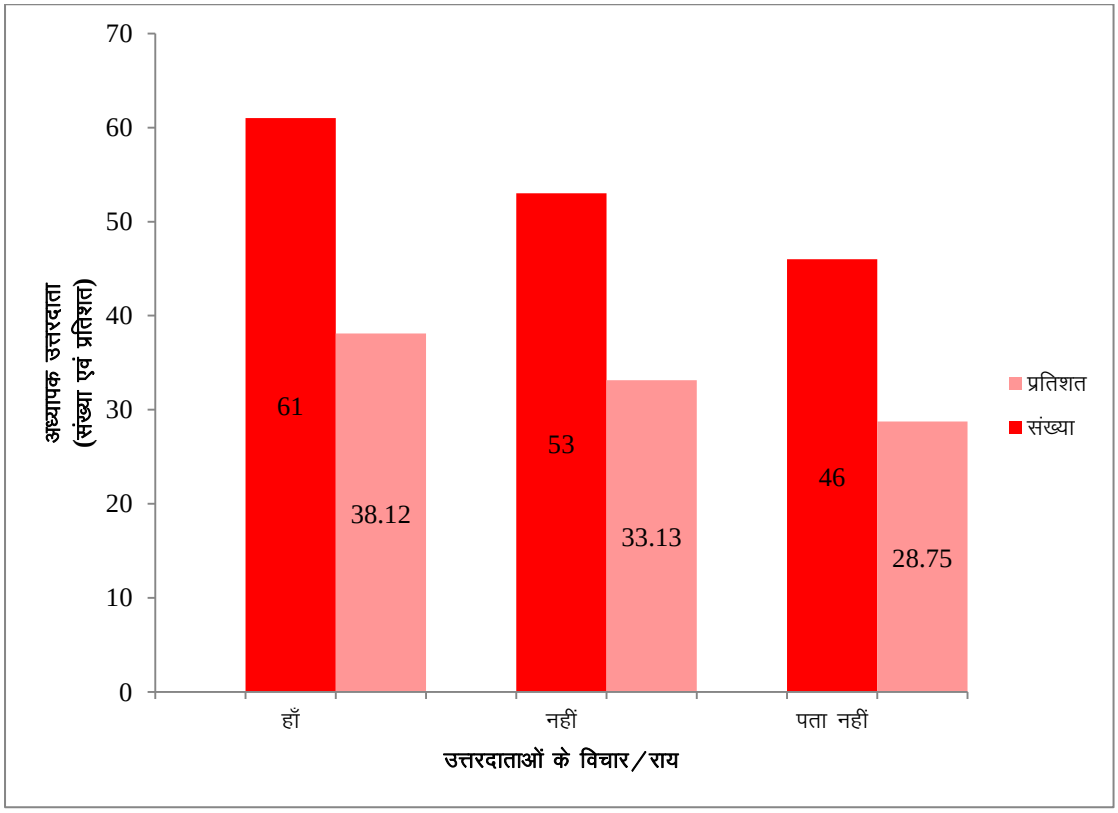

5.5.9 मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत बच्चों में भाईचारे की भावना का विकास संबंधी अध्यापकों के विचार

इस योजना का उद्देश्य है कि बच्चों में भाईचारे और मिलकर रहने की भावना का विकास करना भी हैं अर्थात् बच्चों में भेद–भाव की भावना को समाप्त करना है। मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत बच्चों में भाईचारे और मेल–मिलाप की भावना से संबंधी अध्यापकों के विचारों को दर्शाया गया है जो इस प्रकार से हैः–

तालिका 5.5.9

योजना के कारण बच्चों में भाईचारे की भावना का विकास संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अध्यापक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	115	71.88
2	नहीं	15	9.37
3	कुछ हद तक	30	18.75
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

उपरोक्त तालिका 5.5.9 से पता चलता है कि जब अध्यापको से पूछा गया कि मध्याह्न भोजन योजना से बच्चों में भाईचारे की भावना का विकास हुआ है तो 71.88 प्रतिशत अध्यापकों ने हाँ में जवाब दिया जबकि 9.37 प्रतिशत अध्यापकों ने नहीं में जवाब दिया और कहा कि ऐसा कुछ भी नहीं हुआ क्योंकि बच्चों के मन का कुछ नहीं कहा जा सकता जबकि 18.75 प्रतिशत अध्यापकों ने बताया कि कुछ हद तक भाईचारे की भावना बच्चों में देखने को मिली है जैसे कि बच्चों का इकट्ठा

बैठकर भोजन खाना आदि। निष्कर्ष तौर पर यह कहा जा सकता है कि इस के कारण बच्चों में भाईचारे की भावना का विकास होता है क्योंकि मिलजुलकर खाना खाने से ऐसा संभव होता है।

मध्याह्न भोजन योजना से बच्चों में भाईचारे की भावना का विकास संबंधी अध्यापकों के विचारों को चार्ट 5.5.9 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.5.9

योजना के कारण बच्चों में भाईचारे की भावना का विकास संबंधी विचार

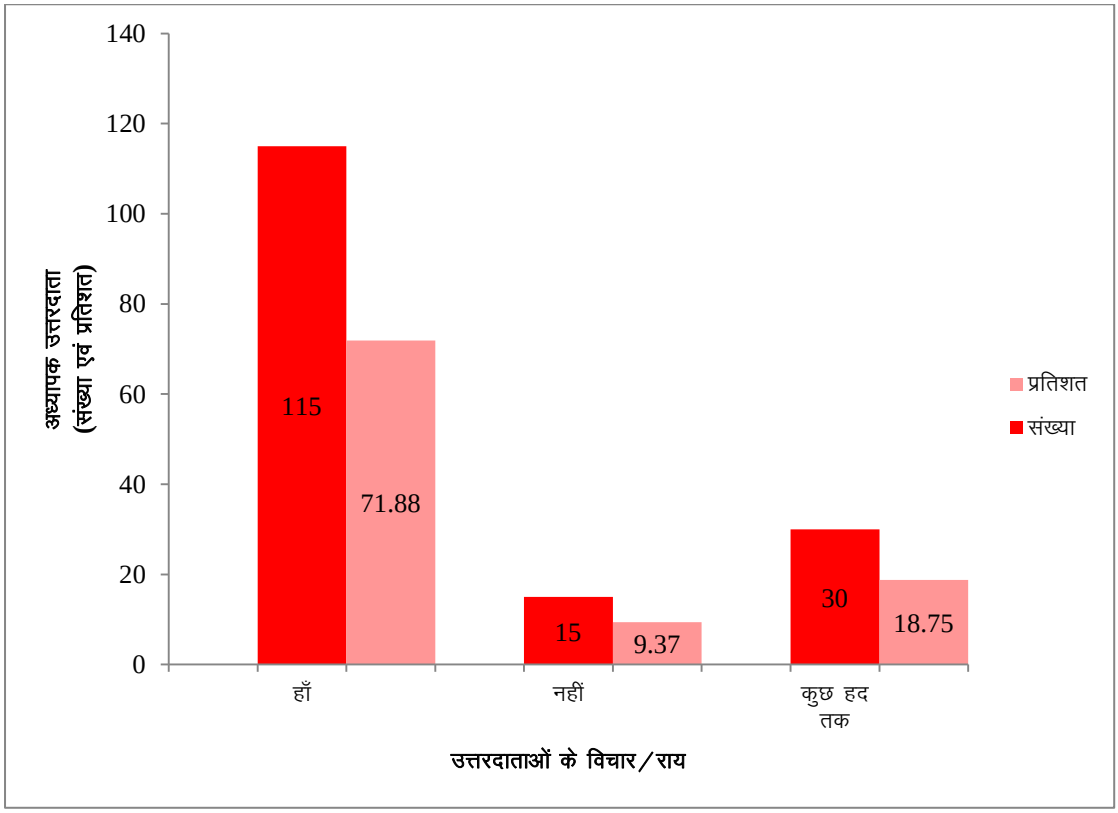

5.5.10 मध्याह्न भोजन योजना के तहत विद्यालय में रसोईघर की उपलब्धता संबंधी अध्यापकों के विचार

भोजन बनाने के लिए एक उचित स्थान और व्यवस्था का होना अति आवश्यक है। मध्याह्न भोजन योजना के तहत सरकार द्वारा विद्यालयों में रसोईघर के निर्माण के लिए धनराशि भी उपलब्ध करवायी जाती है। मध्याह्न भोजन योजना के तहत विद्यालयों में रसोईघर की उपलब्धता संबंधी अध्यापकों के विचारों को नीचे दी तालिका 5.5.10 में दर्शाया गया है:–

तालिका 5.5.10

विद्यालय में रसोईघर की उपलब्धता संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अध्यापक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	65	40.62
2	नहीं	80	50.00
3	पता नहीं	15	9.38
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

उपरोक्त तालिका 5.5.10 से पता चलता है कि जब अध्यापकों से यह जानकारी ली गई कि मध्याह्न भोजन योजना के तहत विद्यालयों में बनने वाले भोजन को विशेष रसोई में ही बनाया जाता है या नहीं तो 40.62 प्रतिशत अध्यापकों ने हाँ में जवाब दिया जबकि 50 प्रतिशत अध्यापकों ने नहीं में जवाब दिया और बताया कि अधिकतर खाना खुले में ही चुल्हे पर बनाया जाता है। वही पर ही परोसा जाता है। जबकि 9.38 प्रतिशत अध्यापकों को इसकी कोई जानकारी नहीं

है। निष्कर्ष तौर पर यह कहा जा सकता है कि योजना की सांच को ध्यान में रखते हुए विद्यालय में रसोईघर की व्यवस्था की मांग है।

मध्याह्न भोजन योजना के तहत विद्यालय में रसोईघर की उपलब्धता संबंधी अध्यापकों के विचारों को चार्ट 5.5.10 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.5.10

विद्यालय में रसोईघर की उपलब्धता संबंधी विचार

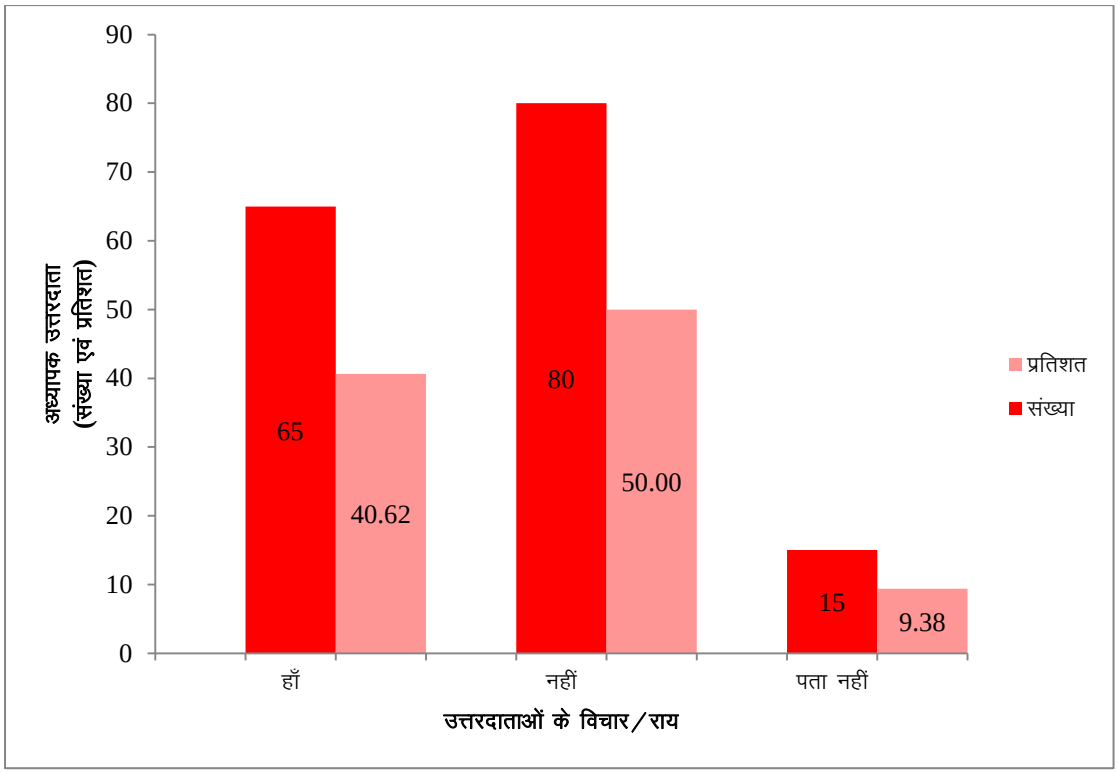

5.5.11 मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत विद्यार्थियों को परोसे जाने वाले भोजन से पोषक तत्वों की प्राप्ति संबंधी अध्यापकों के विचार

मनुष्य के लिए भोजन खाने का अहम उद्देश्य शारीरिक शक्ति का विकास और उर्जा प्राप्त करना है। कहा भी जाता है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ दिमाग निवास करता है। इसी उद्देश्य पूर्ति के लिए मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत भोजन में पोषक तत्वों की प्राप्ति हेतू अध्यापकों के विचारों को नीचे तालिका 5.5.11 में दर्शाया गया है:–

तालिका 5.5.11

विद्यार्थियों को भोजन से पोषक तत्वों की प्राप्ति संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अध्यापक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	93	58.12
2	नहीं	26	16.25
3	कुछ हद तक	41	25.63
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.5.11 देखने पर पता चला कि जब अध्यापको से पूछा गया कि विद्यालयों में मध्याह्न भोजन योजना के तहत निश्चित की गई रैसीपीज में पोषक तत्वों की उपलब्धता होती है तो केवल 58.12 प्रतिशत अध्यापकों ने ही हाँ में जवाब दिया और 16.25 प्रतिशत अध्यापकों ने नहीं में जवाब दिया और कहा कि विद्यालय में प्रतिदिन चावल ही बच्चों खिलाया जाता है प्रतिदिन एक ही भोजन करने से क्या पोषक तत्व मिलेगें। जबकि 25.63 प्रतिशत अध्यापकों ने बताया कि बच्चों को भोजन

से पोषक तत्वों की प्राप्ति कुछ हद तक ही होती है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि मध्याह्न भोजन योजना के तहत विद्यार्थियों को भोजन के समय पोषक तत्वों को ध्यान में रखना चाहिए।

मध्याह्न भोजन से विद्यार्थियों को पोषक तत्वों की प्रप्ति संबंधी अध्यापकों के विचारों को चार्ट 5.5.11 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.5.11

विद्यार्थियों को भोजन से पोषक तत्वों की प्राप्ति संबंधी विचार

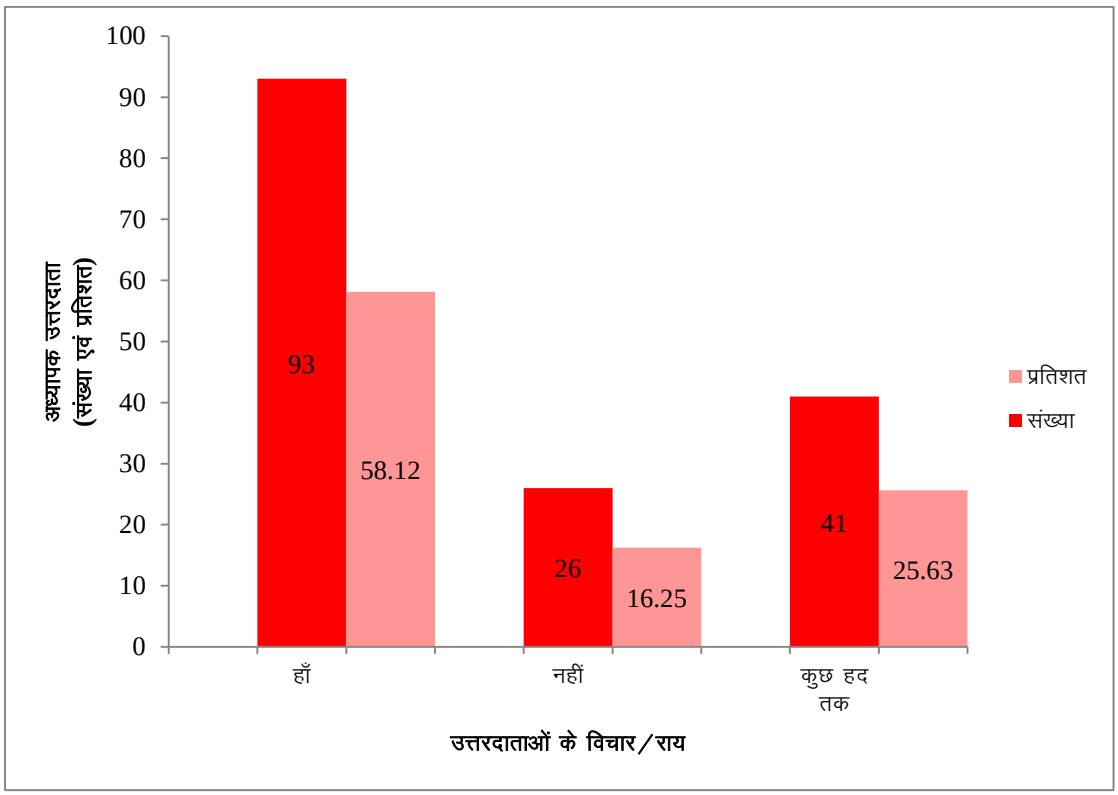

5.5.12 मध्याह्न भोजन योजना के तहत कन्या शिक्षादर में वृद्धि पर पड़ने वाले प्रभाव संबंधी अध्यापकों के विचार

हरियाणा राज्य में कन्याओं की शिक्षा पर समाज में उचित व्यवस्था व अच्छा विचार नहीं रखते हैं और इसी कारण मध्याह्न भोजन योजना को लागू करने का उद्देश्य कन्या शिक्षादर में वृद्धि करने से भी है। इसलिए इस विषय पर अध्यापकों के विचारों को नीचे तालिका में दर्शाया गया है जो कि इस प्रकार से हैः–

तालिका 5.5.12

योजना का कन्या शिक्षादर में वृद्धि पर प्रभाव

क्र0 स0	विचार/राय	अध्यापक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	90	56.25
2	नहीं	40	25.00
3	कुछ हद तक	30	18.75
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

उपरोक्त तालिका 5.5.12 से पता चलता है कि जब अध्यापकों से पूछा गया कि विद्यालयों में मध्याह्न भोजन योजना के लागू होने से विद्यालयों में कन्या शिक्षादर में वृद्धि पर प्रभाव पडा है तो 56.25 प्रतिशत अध्यापकों ने कहा कि इस योजना से लिंग भेद में काफी कमी आई है और कन्या शिक्षादर पर प्रभाव पड़ा है। जबकि 25 प्रतिशत उत्तरदाताओं का विचार नकारात्मक था और 18.75 प्रतिशत अध्यापक मानते हैं कि कन्या शिक्षादर में कुछ हद तक ही वृद्धि हुई है। निष्कर्ष तौर पर यह कहा जा सकता है कि मध्याह्न भोजन योजना के कारण विद्यार्थियों

की उपस्थिति में तो वृद्धि हुई ही है साथ ही साथ कन्या शिक्षादर में भी वृद्धि हुई है।

मध्याह्न भोजन योजना का कन्या शिक्षादर में वृद्धि पर प्रभाव के बारे में अध्यापकों के विचारों को चार्ट 5.5.12 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.5.12

योजना का कन्या शिक्षादर में वृद्धि पर प्रभाव

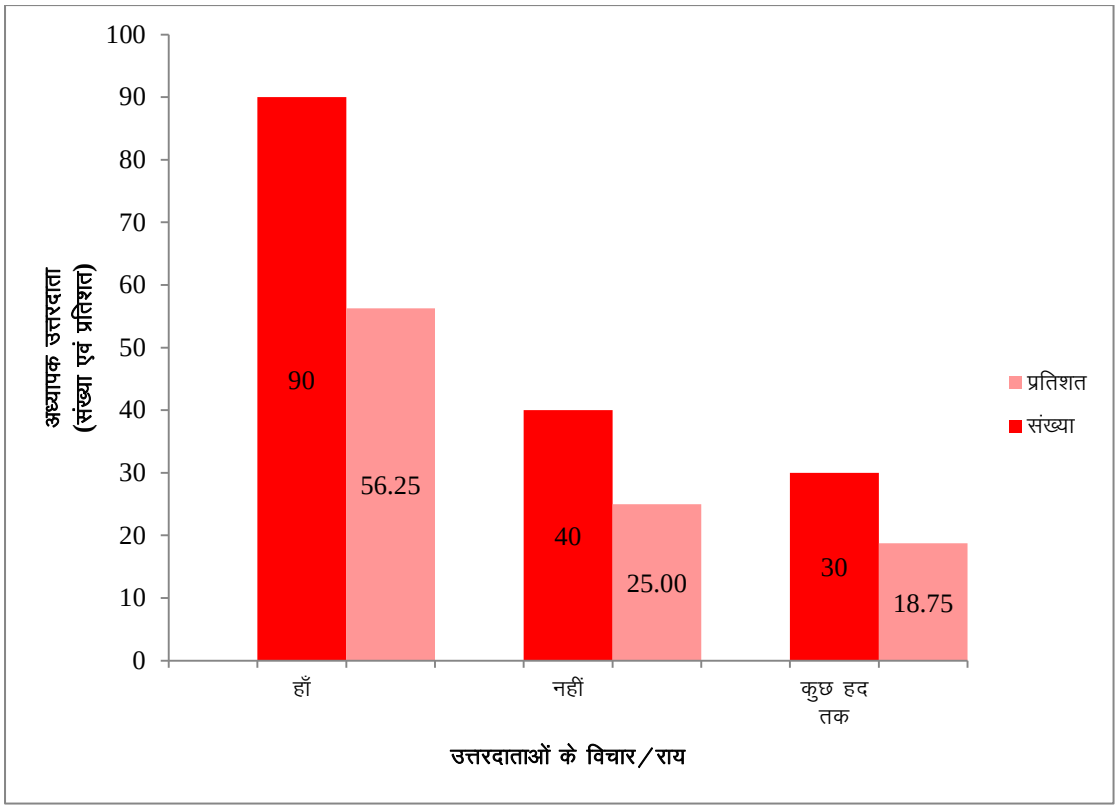

5.5.13 मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत विद्यालयों में योजना संबंधी रिकार्ड रखने संबंधी अध्यापकों के विचार

किसी भी योजना का बजट यानि खर्च और उपयोग निर्धारित किया जाता है और इससे संबंधित लेखा–जोखा अधिकारियों/कर्मचारियों को रखना पड़ता है। इसी प्रकार मध्याह्न भोजन योजना संबंधी प्रत्येक प्रकार का विवरण व रिकार्ड रखने संबंधी अध्यापकों के विचारों को तालिका 5.5.13 में दर्शाया गया है जो कि इस प्रकार से हैः–

तालिका 5.5.13

मध्याह्न भोजन योजना संबंधी रिकार्ड

क्र0 स0	विचार/राय	अध्यापक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	102	63.75
2	नहीं	25	15.63
3	कुछ–कुछ	33	20.62
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.5.13 को देखने से प्रतीत होता है कि जब अध्यापकों से पूछा गया कि विद्यालय में जारी मध्याह्न भोजन योजना संबंधी रिकार्ड रखा जाता है तो 63.75 प्रतिशत अध्यापको ने हाँ में जवाब दिया और बताया कि सरकार द्वारा इस योजना से संबंधित रिकॉर्ड रजिस्टर लगाए गए हैं। जबकि 15.63 प्रतिशत अध्यापकों ने नही में जवाब दिया और 20.62 प्रतिशत अध्यापकों ने बताया कि जब कभी किसी विशेष अधिकारी के निरीक्षण वाले दिन इससे संबंधी रिकार्ड रजिस्टर में दर्ज कर

लिया जाता है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि इस योजना से संबंधित रिकार्ड काफी हद तक रखा जाता है।

मध्याह्न भोजन योजना संबंधी रिकार्ड रखने के बारे में अध्यापकों के विचारों को चार्ट 5.5.13 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.5.13

मध्याह्न भोजन योजना संबंधी रिकार्ड

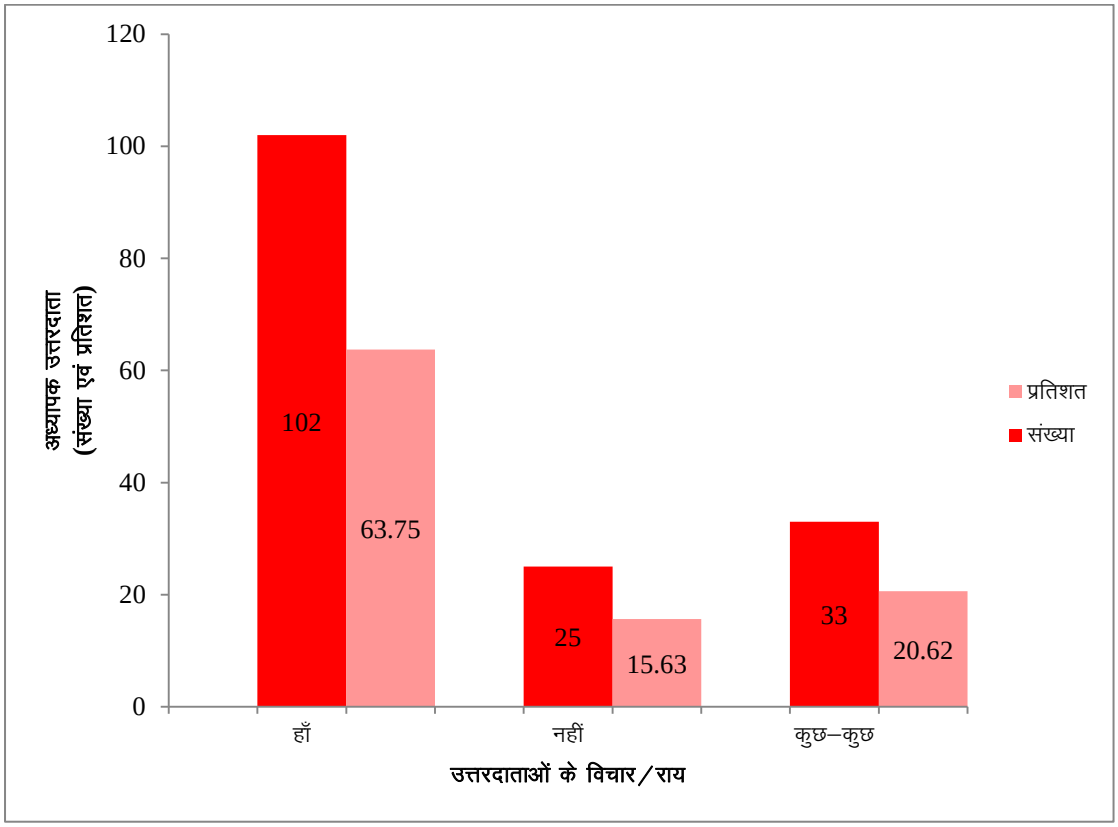

5.5.14 मध्याह्न भोजन योजना के तहत विद्यालय में भोजन के लिए विशेष सदस्य या अध्यापक की नियुक्ति संबंधी अध्यापकों के विचार

किसी भी कार्य योजना की सफलता उसके उचित प्रबंधन पर आधारित होती है। विद्यालयों में भी इस योजना की देख–रेख व रिकार्ड, लेखा आदि के लिए भी किसी विशेष अध्यापक या सदस्य की नियुक्ति अवश्य होनी चाहिए। इससे संबंधी अध्यापकों के विचारों को तालिका 5.5.14 में इस प्रकार दर्शाया गया है:–

तालिका 5.5.14

मध्याह्न भोजन योजना के लिए विशेष सदस्य या अध्यापक की नियुक्ति संबंधी अध्यापकों के विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अध्यापक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	112	70.00
2	नहीं	30	18.75
3	पता नहीं	18	11.25
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.5.14 के संदर्भ में जब विद्यालयों में चल रही मध्याह्न भोजन योजना संबंधी निगरानी या कार्य पूर्ण हेतू किसी सदस्य या अध्यापक की नियुक्ति हेतू अध्यापकों से पूछा गया तो 70 प्रतिशत अध्यापकों ने हाँ में जवाब दिया और बताया कि किसी विशेष सदस्य की नियुक्ति तो नहीं परन्तु विद्यालय में ही कार्यरत पढ़ाने वाले अध्यापकों में से किसी एक अध्यापक या मुखिया की ही जिम्मेवारी होती है कि वे मध्याह्न भोजन की तैयारी व निगरानी रखें जबकि 18.75 प्रतिशत

अध्यापकों ने नहीं जवाब दिया। जबकि 11.25 प्रतिशत अध्यापकों ने कहा कि उन्हें इस बारे में कोई जानकारी है ही नहीं।

मध्याह्न भोजन योजना के लिए विशेष सदस्य या अध्यापक की नियुक्ति संबंधी अध्यापकों के विचारों को चार्ट 5.5.14 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.5.14

मध्याह्न भोजन योजना के लिए विशेष सदस्य या अध्यापक की नियुक्ति संबंधी अध्यापकों के विचार

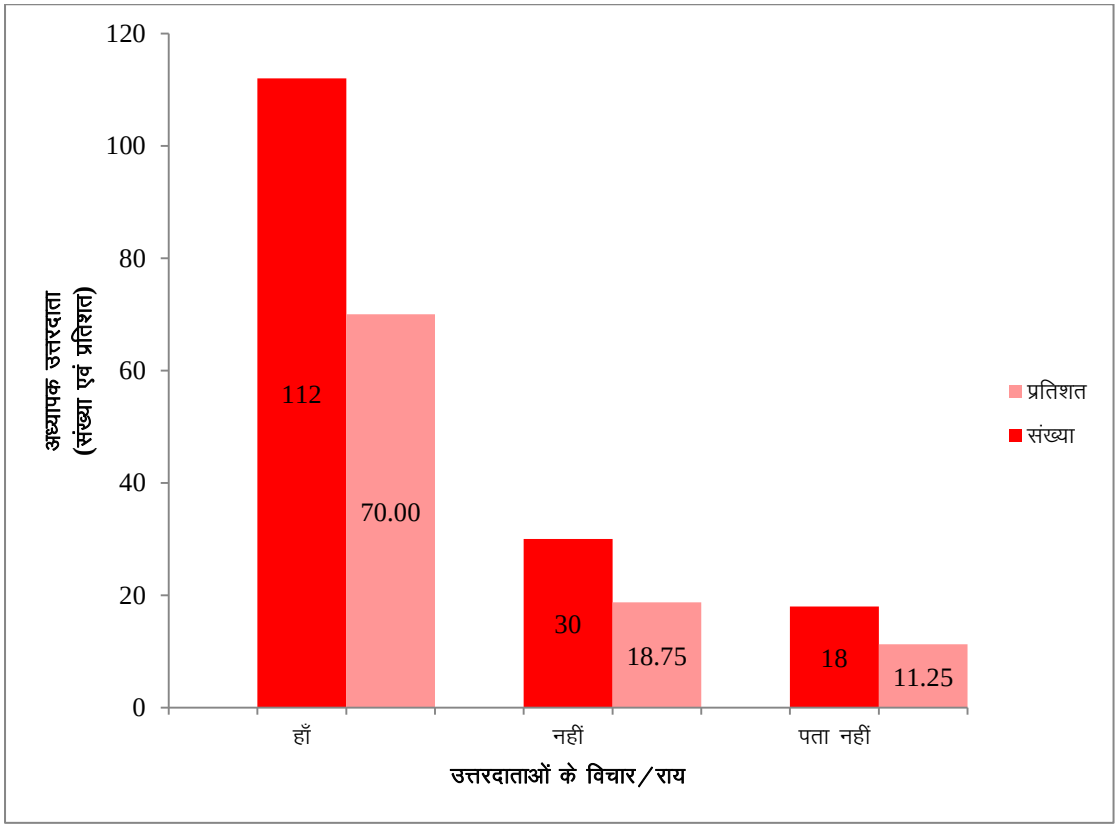

5.5.15 मध्याह्न भोजन योजना के तहत भोजन या खाद्य सामग्री माप तोल कर देने संबंधी अध्यापकों के विचार

भोजन का स्वादिष्ट पूर्ण होना उसकी सही माप तोल की मात्रा या सामग्री पर निर्भर करता है। भोजन चाहे किसी भी तरह पकाया जाए परन्तु उचित व्यवस्था एवं उसकी उचित मात्रा निश्चित होती है। भोजन की उचित मात्रा तथा सामग्री तथा माप तोल से संबंधित अध्यापकों के विचारों को दी गई तालिका 5.5.15 में इस प्रकार से दर्शाया गया है:–

तालिका 5.5.15

भोजन या खाद्य सामग्री माप तोल कर देने संबंधी अध्यापकों के विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अध्यापक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	100	62.50
2	नहीं	35	21.88
3	कभी–कभी	25	15.62
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.5.15 के संदर्भ में जब विद्यालयों में चल रही मध्याह्न भोजन योजना के बारे में अध्यापकों से पूछा गया कि भोजन के समय खाद्य सामग्री माप तोल करके दी जाती है तो 62.50 प्रतिशत अध्यापकों ने हाँ में उत्तर दिया और बताया कि सामग्री तोल कर ही दी जाती है जबकि 21.88 प्रतिशत अध्यापकों ने नहीं में जवाब दिया जबकि 15.62 प्रतिशत अध्यापकों ने कहा कि कभी–कभी खाद्य सामग्री माप तोल कर दी जाती है। सार के तौर पर यह कहा जा सकता है कि

योजना के तहत खाद्य सामग्री को माप तोल कर देने का काफी हद तक प्रयास किया जाता है।

मध्याह्न भोजन योजना के तहत भोजन या खाद्य सामग्री माप तोल कर देने संबंधी अध्यापकों के विचारों को चार्ट 5.5.15 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.5.15

भोजन या खाद्य सामग्री माप तोल कर देने संबंधी अध्यापकों के विचार

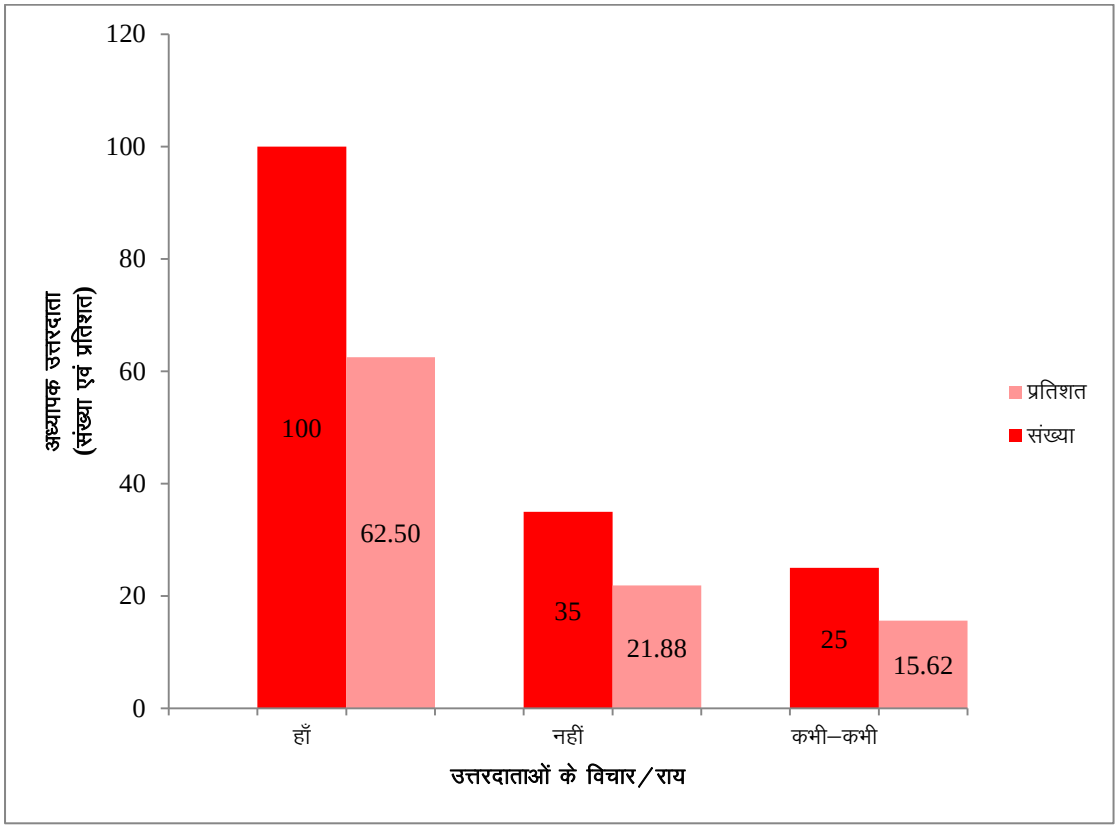

5.5.16 मध्याह्न भोजन योजना के तहत शिक्षा की गुणवत्ता के स्तर में वृद्धि संबंधी अध्यापकों के विचार

विद्यालय में लागू की गई मध्याह्न भोजन योजना का मुख्य उद्देश्य विद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति में वृद्धि करना और शिक्षा की गुणवत्ता के स्तर में वृद्धि करना भी है। इससे संबंधी अध्यापकों के विचारों को नीचे दी गई तालिका 5.5.16 में इस प्रकार से दर्शाया गया हैः–

तालिका 5.5.16

मध्याह्न भोजन योजना के तहत शिक्षा की गुणवत्ता के स्तर में वृद्धि संबंधी अध्यापकों के विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अध्यापक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	40	25.00
2	नहीं	75	46.88
3	कुछ हद तक	45	28.12
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.5.16 के संदर्भ में जब विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों से यह पूछा गया कि विद्यालयों में चल रही मध्याह्न भोजन योजना के तहत विद्यार्थियों की शिक्षा की गुणवत्ता के स्तर में वृद्धि हुई है या नहीं तो 25 प्रतिशत अध्यापकों ने हां में जवाब दिया और बताया कि इस से शिक्षा स्तर में वृद्धि हुई है। जबकि 46.88 प्रतिशत अध्यापकों ने नहीं जवाब दिया और बताया कि इस से शिक्षा के स्तर में वृद्धि तो क्या हुई है बल्कि इस से अध्यापन और अध्ययन कार्य बाधित हो गया है।

और जब बच्चों के सामने ही भोजन तैयार किया जाता है तो सिर्फ बच्चों का ध्यान भोजन की तरफ होता है और वे अध्ययन कार्य में ध्यान नहीं लगा पाते। जबकि 28.12 प्रतिशत अध्यापकों ने कहा कि इस से कुछ हद तक शिक्षा की गुणवत्ता के स्तर में सुधार हुआ है। सार के तौर पर कहा जा सकता है कि मध्याह्न भोजन से शिक्षा के गुणवत्ता के स्तर में कोई खास वृद्धि नहीं हुई है।

मध्याह्न भोजन योजना के तहत शिक्षा की गुणवत्ता के स्तर में वृद्धि संबंधी अध्यापकों के विचारों को चार्ट 5.5.16 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.5.16

मध्याह्न भोजन योजना के तहत शिक्षा की गुणवत्ता के स्तर में वृद्धि संबंधी अध्यापकों के विचार

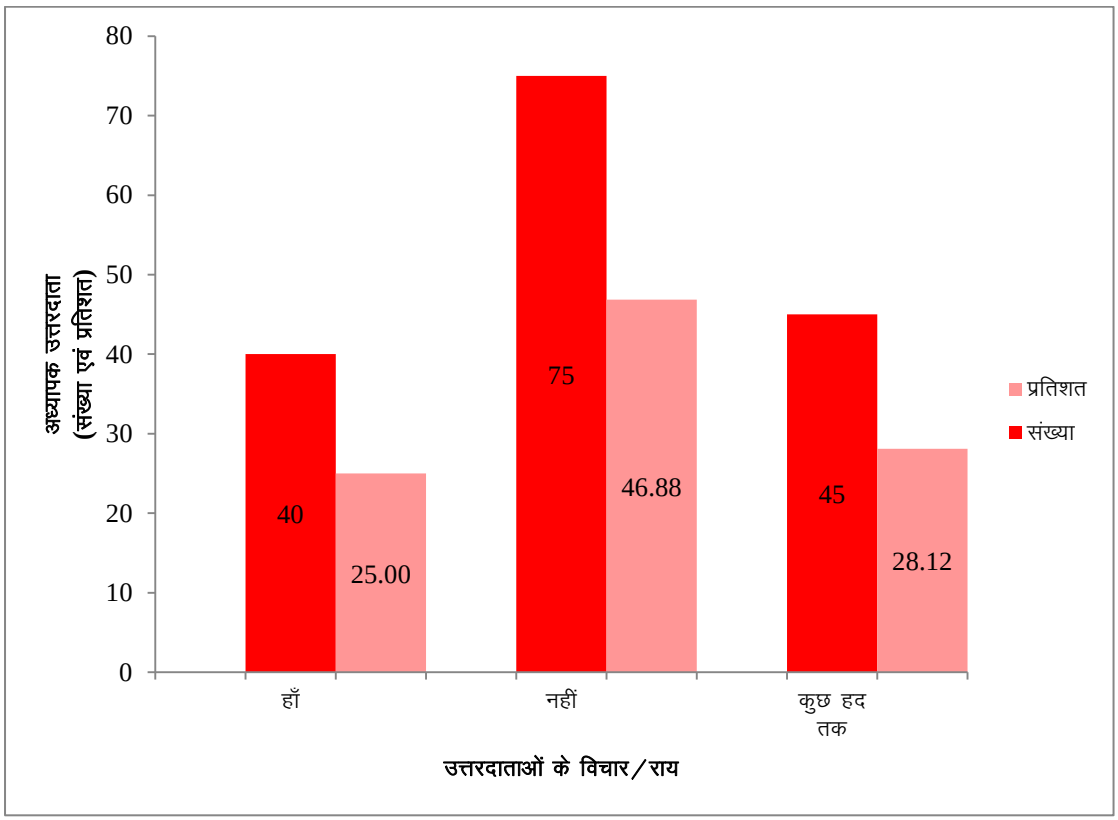

5.5.17 मध्याह्न भोजन योजना को भारत सरकार द्वारा जारी रखने से संबंधी अध्यापकों के विचार

किसी भी योजना की सफलता हेतू व्यक्ति के विचार या राय जानना अति आवश्यक है। व्यक्ति की राय या विचार के आधार पर ही उस योजना की सफलता या असफलता का विश्लेषण किया जा सकता है इसलिए इस योजना को जारी रखने से संबंधी अध्यापकों के विचारों को तालिका 5.5.17 में इस प्रकार से दर्शाया गया है:–

तालिका 5.5.17

मध्याह्न भोजन योजना को भारत सरकार द्वारा जारी रखे जाने संबंधी अध्यापकों के विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अध्यापक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	106	66.25
2	नहीं	40	25.00
3	कभी–कभी	14	08.75
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.5.17 के संदर्भ में जब विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों से यह राय ली गई कि विद्यालयों में भारत सरकार द्वारा लागू की गई मध्याह्न भोजन योजना को जारी रखा जाना चाहिए या नहीं तो 66.25 प्रतिशत अध्यापक इससे सहमत हुए और हाँ में जवाब दिया। जबकि 25 प्रतिशत अध्यापक इस विचार से सहमत नहीं हुए और नहीं में जवाब दिया और बताया कि इस योजना से उनके अध्यापन और अध्ययन कार्य बाधित और प्रभावित होते है। जबकि 08.75 प्रतिशत अध्यापकों ने

कहा कि कभी–कभी विद्यालय में बच्चों को भोजन दिया जाना चाहिए या किसी अन्य संस्था को यह कार्य सौंप दिया जाना चाहिए। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि निःसंदेह रुप से इस योजना को जारी रखा जाना चाहिए।

मध्याह्न भोजन योजना को भारत सरकार द्वारा जारी रखा जाने संबंधी अध्यापकों के विचारों को चार्ट 5.5.17 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.5.17

मध्याह्न भोजन योजना को भारत सरकार द्वारा जारी रखे जाने संबंधी अध्यापकों के विचार

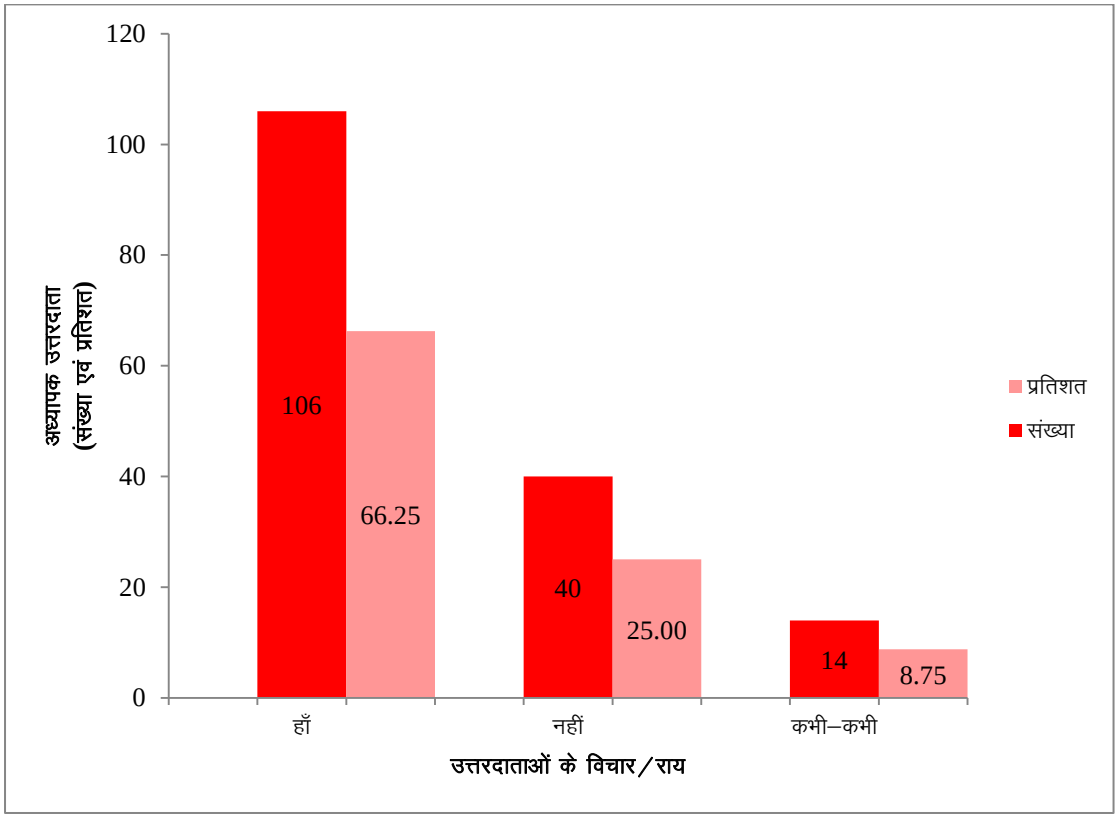

5.5.18 मध्याह्न भोजन योजना के तहत भोजन पकाने के लिए गैस सिलैण्डर का ईंधन के रूप में प्रयोग संबंधी अध्यापकों के विचार

भोजन को अच्छा और स्वादिष्ट पकाने के लिए ईंधन की आवश्यकता होती है और मध्याह्न भोजन योजना के तहत भोजन पकाने के लिए गैस सिलैण्डर का प्रयोग किया जाता है या नहीं। इससे संबंधी अध्यापकों के विचारों को दी गई तालिका 5.5.18 में इस प्रकार से दर्शाया गया है:–

तालिका 5.5.18

भोजन पकाने के लिए गैस सिलैण्डर के ईंधन का प्रयोग संबंधी अध्यापकों के विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अध्यापक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	45	28.12
2	नहीं	86	53.75
3	कभी–कभी	29	18.13
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.5.18 को देखने से पता चलता है कि जब विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों से मध्याह्न भोजन पकाने के लिए गैस सिलैण्डर के ईंधन का प्रयोग करने संबंधी राय पूछी गई तो 28.12 प्रतिशत अध्यापकों ने ही हाँ में जवाब दिया। जबकि 53.75 प्रतिशत अध्यापकों ने नहीं में जवाब दिया और बताया कि सरकार द्वारा भोजन पकाने के लिए गैंस सिलैण्डर चुल्हे तो दिए परन्तु उन्हें भरवाने आदि की उचित व्यवस्था नहीं की। जबकि 18.13 प्रतिशत अध्यापकों का कहना है कि

कभी–कभी विद्यालय में गैस सिलैण्डर का प्रयोग होता है। लेकिन अधिकतर लकड़ी के ईंधन से चलने वाले चुल्हों का ही प्रयोग किया जाता है। कुल मिलकार यह कहा जा सकता है कि सरकारी निर्देशों के फलस्वरुप सिलैण्डर का ईंधन के रुप में प्रयोग नहीं हो रहा है।

भोजन पकाने के लिए गैस सिलैण्डर के ईंधन का प्रयोग करने संबंधी अध्यापकों के विचारों को चार्ट 5.5.18 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.5.18

भोजन पकाने के लिए गैस सिलैण्डर के ईंधन का प्रयोग संबंधी अध्यापकों के विचार

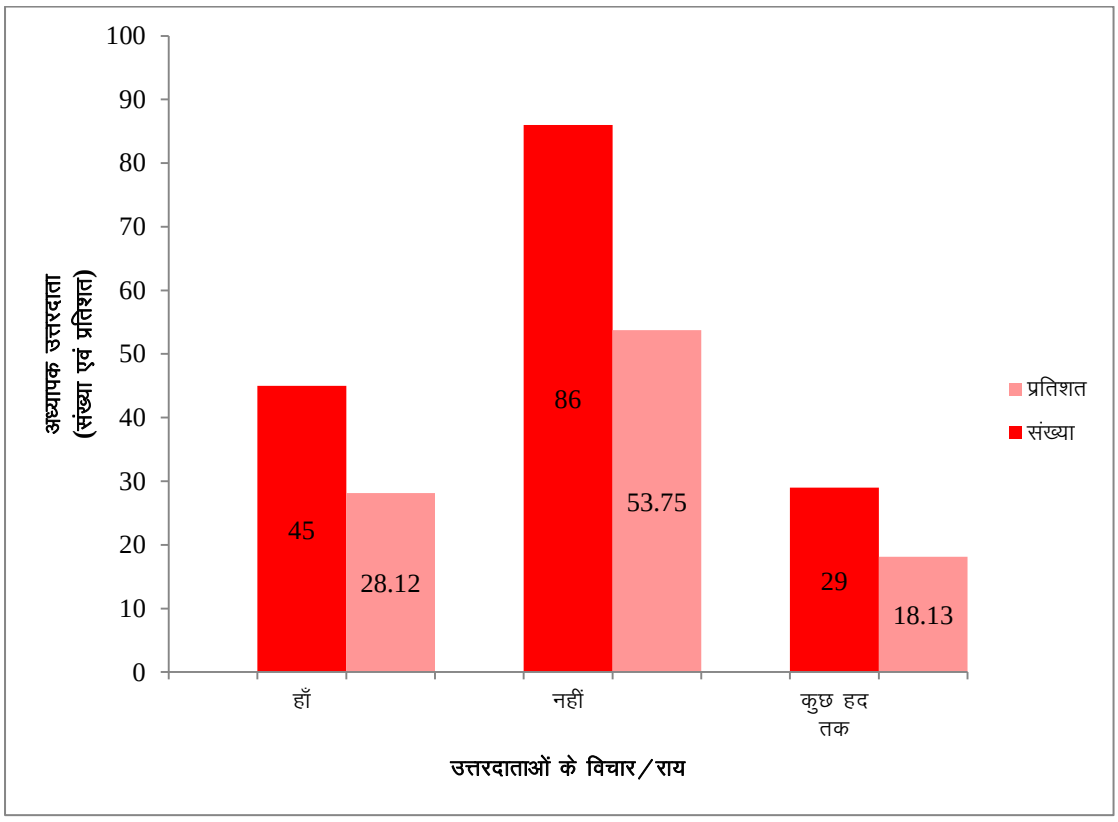

5.5.19 मध्याह्न भोजन योजना के तहत भोजन की मात्रा प्रति छात्र उचित है या नहीं संबंधी अध्यापकों के विचार

एक व्यक्ति को स्वस्थ रहने के लिए भोजन ग्रहण करना अति आवश्यक है परन्तु भोजन की उचित मात्रा भी निश्चित होनी आवश्यक है। खास तौर पर बढ़ते बच्चों के लिए भोजन की उचित मात्रा का होना जरूरी है और इसलिए इससे संबंधी अध्यापकों के विचारों को दी गई तालिका 5.5.19 में इस प्रकार से दर्शाया गया है:–

तालिका 5.5.19

मध्याह्न भोजन योजना के तहत भोजन की प्रति छात्र उचित मात्रा संबंधी अध्यापकों के विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अध्यापक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	120	75.00
2	नहीं	26	16.25
3	पता नहीं	14	08.75
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.5.19 के संदर्भ में जब विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों से पूछा गया कि विद्यालयों में चल रही मध्याह्न भोजन योजना के तहत विद्यार्थियों को दिए जाने वाले भोजन की मात्रा प्रति छात्र उचित है या नहीं तो 75 प्रतिशत अध्यापकों ने हाँ में जवाब दिया और बताया कि प्रति छात्र उचित मात्रा विशेषज्ञों की राय से ही निश्चित की गई है जबकि 16.25 प्रतिशत अध्यापकों ने नहीं जवाब दिया। और

बताया कि सभी विद्यार्थियों के लिए एक समान भोजन की मात्रा उचित होना आवश्यक नहीं हैं जबकि 08.75 प्रतिशत अध्यापकों ने कहा कि उन्हें इस बारे कुछ नहीं पता।

मध्याह्न भोजन योजना के तहत भोजन की मात्रा प्रति छात्र उचित होने संबंधी अध्यापकों के विचारों को चार्ट 5.5.19 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.5.19

मध्याह्न भोजन योजना के तहत भोजन की प्रति छात्र उचित मात्रा संबंधी अध्यापकों के विचार

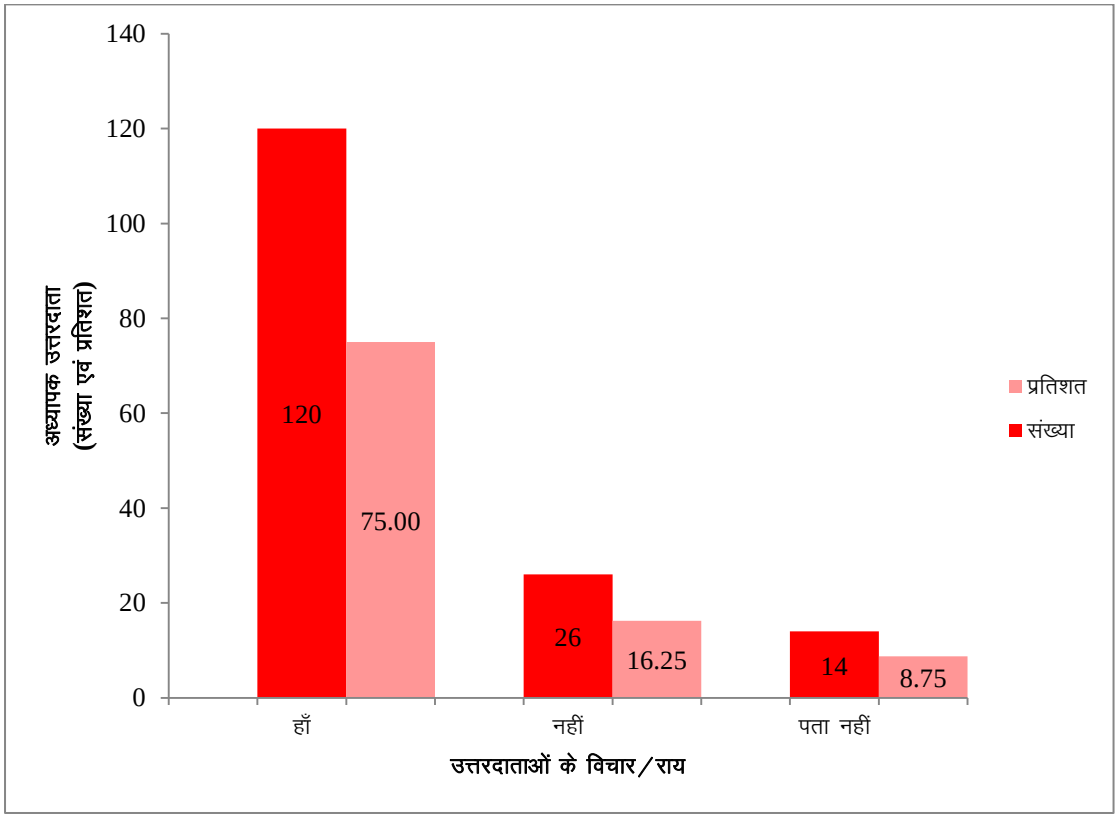

5.6 अभिभावक उत्तरदाताओं के विचारः एक विश्लेषण

हिसार मंडल के प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों के छात्र अभिभावकों की मध्याह्न भोजन योजना संबंधी जानकारी हेतू साक्षात्कार अनुसूचित के माध्यम से 160 अभिभावको से उनके विचार जाने गए। उनसे प्राप्त उत्तरों की संख्या व प्रतिशत के अनुसार व्याख्या की गई है जो इस प्रकार प्रस्तुत हैः–

5.6.1 मध्याह्न भोजन योजना की विस्तार से जानकारी संबंधी अभिभावकों के विचार

एक विद्यार्थी जीवन में विद्यालय और अध्यापक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है परन्तु माता–पिता बच्चों के पहले गुरू और रखवाले होते है। उनसे बेहतर ध्यान बच्चों को कौन रख पाता है इसलिए मध्याह्न भोजन योजना की विस्तार से जानकारी हेतू अभिभवाकों के विचारों की नीचे गई तालिका 5.6.1 में दिया गया है जो कि इस प्रकार से हैः–

तालिका 5.6.1

मध्याह्न भोजन योजना की विस्तार से जानकारी

क्र0 स0	विचार/राय	अभिभावक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	16	10.00
2	नहीं	104	65.00
3	कुछ–कुछ	40	25.00
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.6.1 के संदर्भ में पता चला कि जब विद्यार्थियों के अभिभावकों से पूछा गया कि विद्यालय में चल रही मध्याह्न भोजन योजना की उन्हें विस्तार से जानकारी है या नहीं तो 10 प्रतिशत अभिभावकों ने हाँ में जवाब दिया जबकि 65 प्रतिशत अभिभावकों का नहीं मे जवाब आया और 25 प्रतिशत अभिभावकों को विद्यालय में चलाई जा रही मध्याह्न भोजन योजना के बारे में कुछ–कुछ सामान्य जानकारी है कि उन्हें दोपहर में विद्यालय में भोजन परोसा जाता है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि अभिभावकों में मध्याह्न भोजन योजना के बारे में विस्तार से जानकारी का काफी अभाव है।

मध्याह्न भोजन योजना के बारे में विस्तार से जानकारी संबंधी अभिभावकों के विचारों को चार्ट 5.6.1 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.6.1

मध्याह्न भोजन योजना की विस्तार से जानकारी

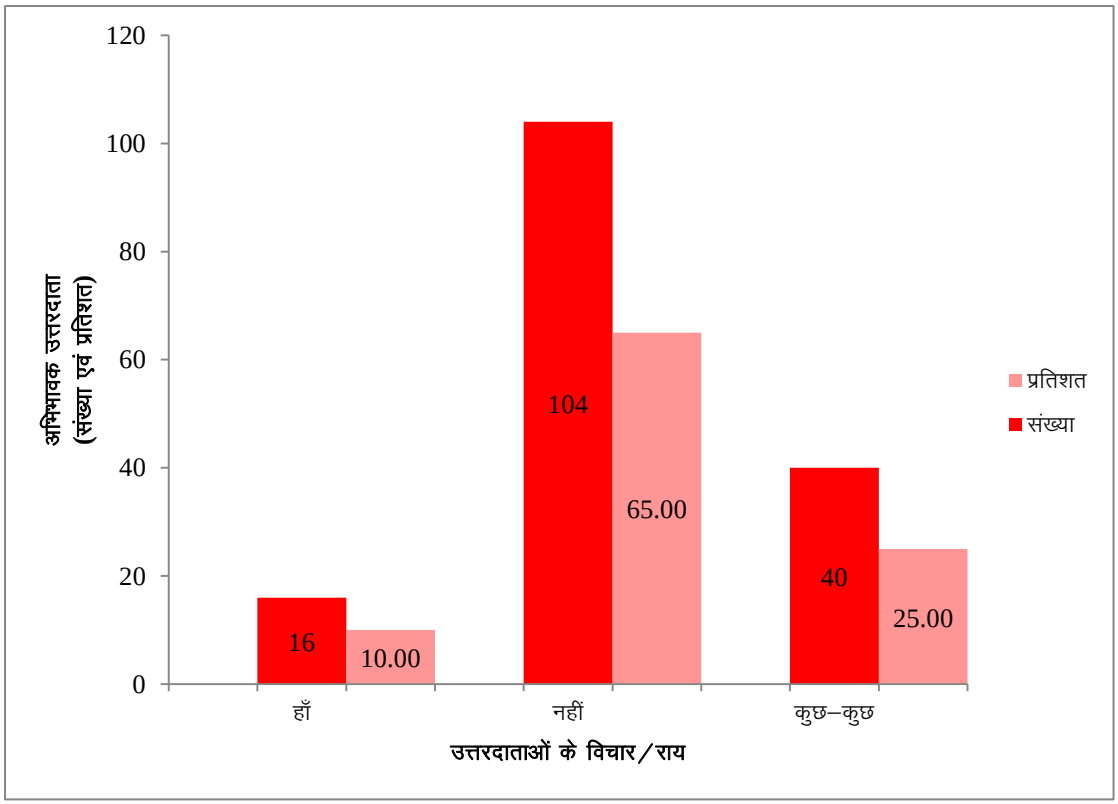

5.6.2 सरकार द्वारा चलाई गई मध्याह्न भोजन योजना बच्चों के लिए उपयुक्त है या नहीं संबंधी माता–पिता के विचार

किसी भी योजना को चलाने का मुख्य उद्देश्य लाभार्थियों को लाभ देना होता है। इसलिए सरकार द्वारा चलाई गई यह योजना बच्चों के लिए उपयुक्त है या नहीं संबंधी अभिभावकों के विचार निम्न तालिका 5.6.2 में दर्शाया गया है जो कि इस प्रकार से हैः–

तालिका 5.6.2

क्या सरकार द्वारा चलाई गई योजना बच्चों के लिए उपयुक्त

क्र0 स0	विचार/राय	अभिभावक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	120	75.00
2	नहीं	25	15.62
3	कुछ हद तक	15	9.38
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.6.2 के संदर्भ में पता चलता है कि जब विद्यार्थियों के अभिभावकों से पूछा गया कि क्या सरकार द्वारा विद्यालयों में चल रही मध्याह्न भोजन योजना बच्चों के लिए उपयुक्त है या नहीं तो 75 प्रतिशत अभिभावक ने हाँ में जवाब दिया और कहा कि वे इस योजना को अच्छा मानते हैं जबकि 15.62 प्रतिशत अभिभावकों का नहीं मे जवाब आया, उनका कहना है कि बच्चों को प्रतिदिन चावल से बना भोजन ही अधिक दिया जाता है और अन्य सामग्री कम दी जाती है। जबकि 9.38 प्रतिशत अभिभावकों का कहना है कि कुछ हद तक योजना बच्चों के लिए उपयुक्त

है। निष्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता है कि मध्याह्न भोजन योजना से ज्यादातर अभिभावक संतुष्ट हैं।

सरकार द्वारा चलाई जा रही मध्याह्न भोजन योजना की बच्चों के लिए उपयुक्तता संबंधी अभिभावकों के विचारों को चार्ट 5.6.2 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.6.2

क्या सरकार द्वारा चलाई गई योजना बच्चों के लिए उपयुक्त

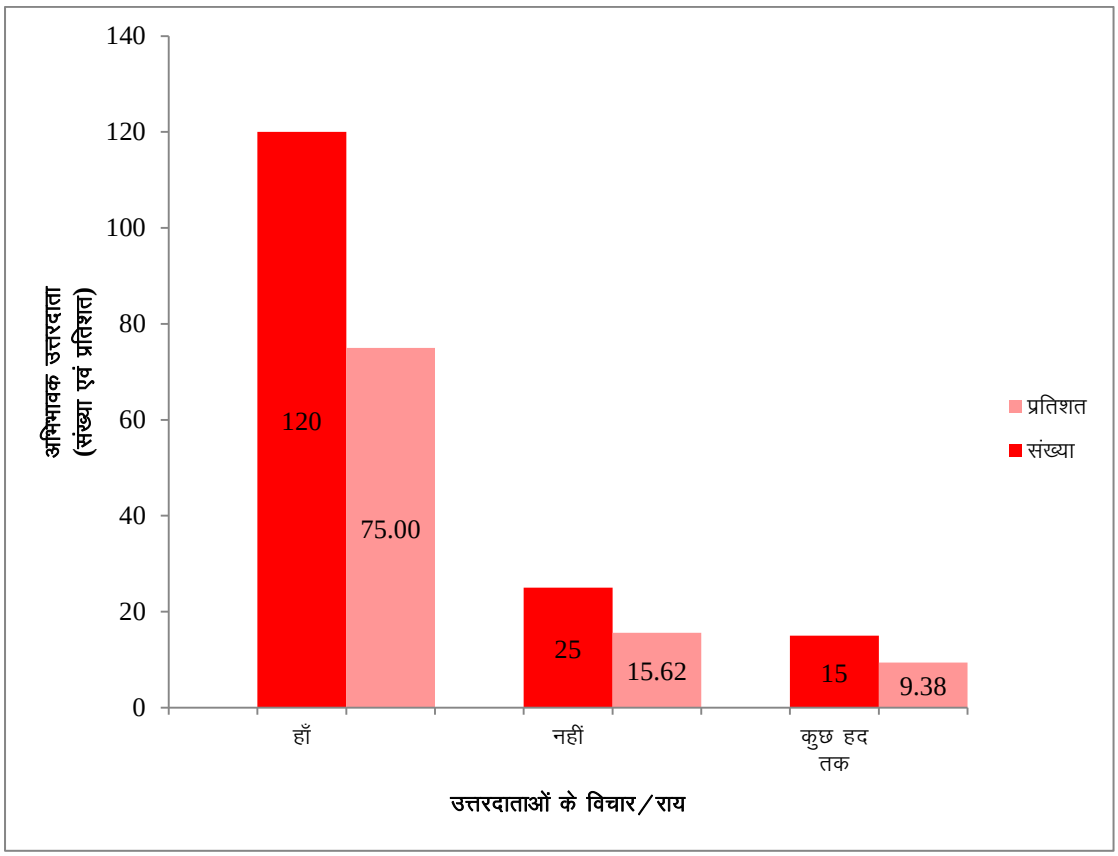

5.6.3 मध्याह्न भोजन योजना के तहत निश्चित की गई सामग्री के लिए सहमति संबंधी माता–पिता के विचार

मध्याह्न भोजन योजना सरकार द्वारा लागू की गई और इस योजना में भोजन सामग्री का निर्धारण भी सरकार द्वारा ही किया गया। परन्तु योजना के तहत निश्चित की गई सामग्री के बारे में माता–पिता को जानकरी है या नहीं और क्या वे सरकार द्वारा मध्याह्न भोजन में दी जा रही सामग्री से सहमत है या नहीं इससे संबंधी अभिभावकों के विचारों को निम्न तालिका 5.6.3 में दर्शाया गया है जो कि इस प्रकार से हैः–

तालिका 5.6.3

योजना के तहत निश्चित की गई सामग्री से सहमत

क्र0 स0	विचार/राय	अभिभावक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	67	41.88
2	नहीं	43	26.87
3	कुछ हद तक	50	31.25
	योग	160	100.00

?(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.6.3 के संदर्भ में पता चला कि जब विद्यार्थियों अभिभावकों से पूछा गया कि सरकार द्वारा विद्यालयों में चल रही मध्याह्न भोजन योजना के तहत जो बच्चों को भोजन सामग्री दी जाती है क्या आप इससे सहमत है या नहीं कि अच्छा भोजन परोसा जाता है। तो 41.88 प्रतिशत अभिभावक इस योजना को अच्छा मानते है और हाँ में जवाब दिया जबकि 26.87 प्रतिशत अभिभावकों का नहीं में जवाब

आया और कहते है कि बच्चे घर पर आकर शिकायत करते है कि उन्हें अधिकतर चावल ही खाने को मिलते हैं जबकि 31.25 प्रतिशत अभिभावकों का कहना है कि कुछ हद तक यह योजना बच्चो के लिए उपयुक्त है क्योंकि बच्चों को विद्यालय में भोजन तो खाने को मिलता ही है।

मध्याह्न भोजन योजना के तहत निश्चित की गई सामग्री से सहमता संबंधी अभिभावकों के विचारों को चार्ट 5.6.3 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.6.3

योजना के तहत निश्चित की गई सामग्री से सहमत

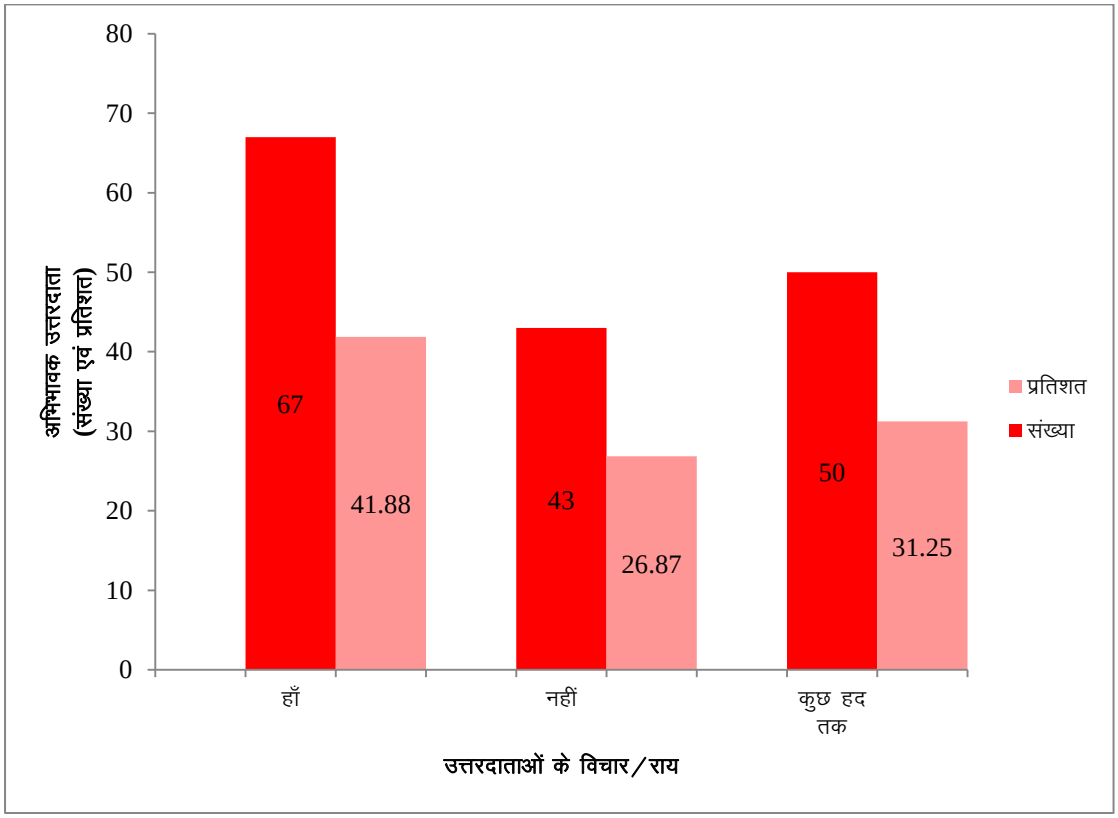

5.6.4 मध्याह्न भोजन योजना के तहत माता–पिता द्वारा विद्यालय में निरीक्षण संबंधी विचार

हालांकि मध्याह्न भोजन योजना सरकार की मुख्य योजनाओं में से एक है और इसके निरीक्षण के लिए अधिकारियों की नियुक्ति भी की गई है। परन्तु इस योजना के तहत विद्यालय में जो भोजन बच्चों को दिया जाता है क्या माता–पिता स्वयं भोजन कर निरीक्षण करने जाते है या नहीं, संबंधी विचारों को नीचे तालिका 5.6.4 में दर्शाया गया है जो इस प्रकार से हैः–

तालिका 5.6.4

विद्यालय में बच्चों को दी जाने वाली भोजन सामग्री का माता–पिता द्वारा निरीक्षण

क्र0 स0	विचार/राय	अभिभावक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	32	20.00
2	नहीं	90	56.25
3	कभी–कभी	38	23.75
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.6.4 के संदर्भ में पता चलता है कि जब विद्यार्थियों के अभिभावकों से पूछा गया कि सरकार द्वारा विद्यालयों में चल रही मध्याह्न भोजन योजना के तहत जो बच्चों को भोजन सामग्री दी जाती है आप इसका निरीक्षण करने जाते है तो 20 प्रतिशत अभिभावकों ने हाँ में जवाब दिया जबकि 56.75 प्रतिशत अभिभावकों का नहीं मे जवाब आया और उनका कहना है कि उनके पास समय ही नहीं है कि वे विद्यालय जा कर निरीक्षण कर सकें जबकि 23.75 प्रतिशत अभिभावकों का कहना

है कि वे कभी–कभार विद्यालय अवश्य जाते हैं। सार तौर पर इस योजना में अभिभावकों की सहभागिता का अभाव है।

सरकार द्वारा विद्यालयों में चलाई जा रही मध्याह्न भोजन योजना के तहत बच्चों को दी जाने वाली भोजन सामग्री का अभिभावकों द्वारा निरीक्षण करने संबंधी अभिभावकों के विचारों को चार्ट 5.6.4 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.6.4

विद्यालय में बच्चों को दी जाने वाली भोजन सामग्री का माता–पिता द्वारा निरीक्षण

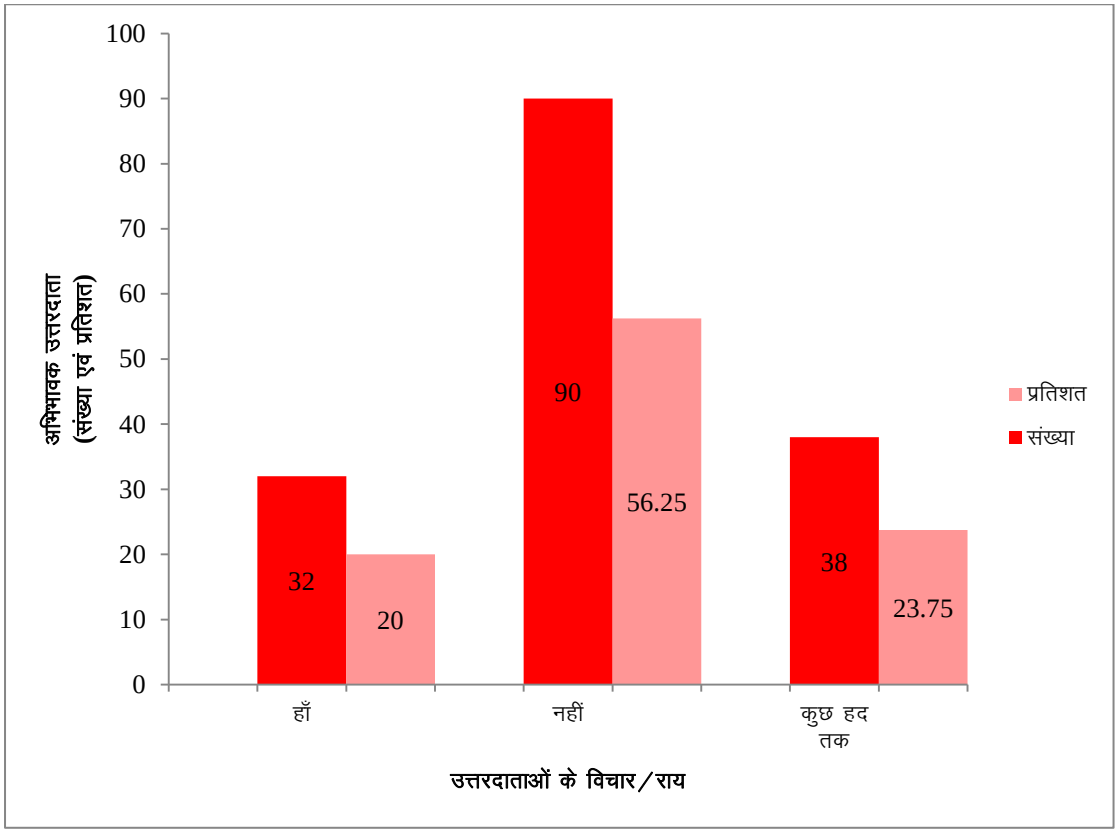

5.6.5 बच्चों के विद्यालय में सफाई पर ध्यान दिए जाने संबंधी अभिभवाकों के विचार

कहा भी जाता है कि स्वच्छ स्थान पर ही देवताओं का निवास होता है अर्थात् जिस जगह पर सफाई का विशेष ध्यान दिया जाता है वहां सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती है। इसलिए विशेष तौर पर भोजन के स्थान पर सफाई का होना आवश्यक है। इससे संबंधी अभिभावकों के विचारों को नीचे दी गई तालिका में दर्शाया गया हैः–

तालिका 5.6.5

बच्चों के विद्यालय में सफाई पर ध्यान दिए जाने संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अभिभावक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	45	28.13
2	नहीं	90	56.25
3	कभी–कभी	25	15.62
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.6.5 के संदर्भ में पता चलता है कि जब विद्यार्थियों के अभिभावकों से पूछा गया कि सरकार द्वारा विद्यालयों में चल रही मध्याह्न भोजन योजना के तहत जो बच्चों के लिए भोजन बनाते व परोसते समय सफाई पर ध्यान दिया जाता है तो 28.13 प्रतिशत अभिभावकों ने हाँ में जवाब दिया जबकि 56.25 प्रतिशत अभिभावकों का नहीं मे जवाब आया उनका कहना है कि भोजन खुले में ही बनाया जाता है और वही परोसा जाता है जबकि 15.62 प्रतिशत अभिभावकों का कहना है

कि वे विद्यालयों में कभी–कभी सफाई पर ध्यान रखा जाता है। निष्कर्ष तौर पर इस योजना में सफाई का अभाव महसूस होता है।

मध्याह्न भोजन योजना के अन्तर्गत बच्चों को दिया जाने वाले भोजन को बनाते एवं परोसते समय सफाई पर ध्यान देने संबंधी अभिभावकों के विचारों को चार्ट 5.6.5 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.6.5

बच्चों के विद्यालय में सफाई पर ध्यान दिए जाने संबंधी विचार

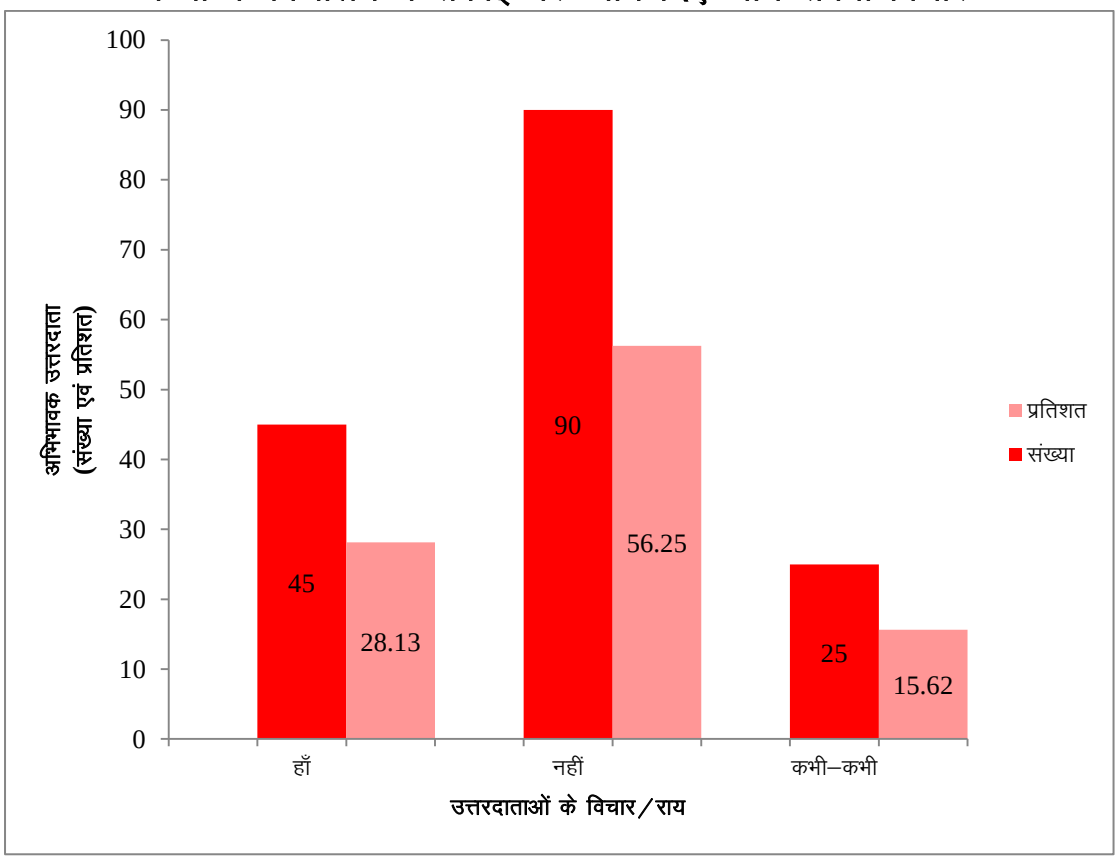

5.6.6 मध्याह्न भोजन योजना के तहत बच्चों को दिए जाने वाले भोजन के अलावा अन्य सामग्री देने संबंधी अभिभावकों के विचार

विद्यालय में दिए जाने भोजन के अलावा भी क्या कोई अन्य सामग्री खाने में दी जाती है जैसे– फल, मेवे, बिस्कुट अन्य भोजन सामग्री आदि। मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत अन्य प्रकार की खाद्य सामग्री देने संबंधी अभिभावकों के विचारों को नीचे दी गई तालिका 5.6.6 में दर्शाया गया है जो कि इस प्रकार से है:–

तालिका 5.6.6

बच्चों को भोजन के अलावा अन्य सामग्री दिए जाने संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अभिभावक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	30	18.75
2	नहीं	90	56.25
3	पता नहीं	40	25.00
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.6.6 के संदर्भ में पता चलता है कि जब विद्यार्थियों के अभिभावकों से पूछा गया कि सरकार द्वारा विद्यालयों में चल रही मध्याह्न भोजन योजना के तहत बच्चों को भोजन के अलावा कुछ और भी दिया जाता है तो 18.75 प्रतिशत अभिभावकों ने हाँ में जवाब दिया और कहा कि बच्चों को फल और बिस्कुट आदि भी दिये जाते हैं। जबकि 56.25 प्रतिशत अभिभावकों ने नहीं में जबाव दिया और 25 प्रतिशत अभिभावकों का कहना है कि उन्हें इस बारे में कुछ भी पता नहीं है।

मध्याह्न भोजन योजना के अन्तर्गत बच्चों को भोजन के अलावा अन्य सामग्री दिए जाने संबंधी अभिभावकों के विचारों को चार्ट 5.6.6 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.6.6

बच्चों को भोजन के अलावा अन्य सामग्री दिए जाने संबंधी विचार

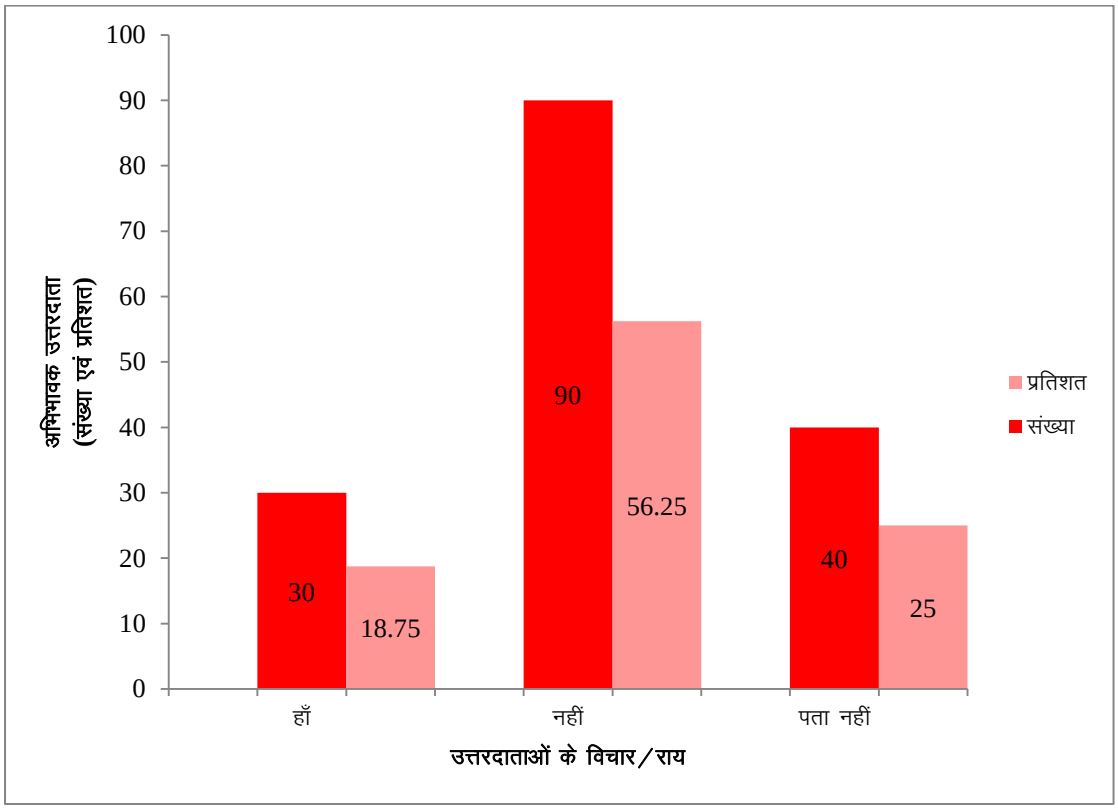

5.6.7. मध्याह्न भोजन योजना की गरीब बच्चों के लिए उपयुक्तता संबंधी अभिभावकों के विचार

मध्याह्न भोजन योजना विद्यालय में हालांकि सभी बच्चों के लिए उपयुक्त है परन्तु क्या यह भोजन योजना गरीब बच्चों के लिए अति उपयुक्त है और क्या उन्हें विद्यालय में आने के लिए प्रेरित करती है। इसके प्रति अभिभावकों के विचारों को तालिका 5.6.7 में इस प्रकार से दर्शाया गया हैः–

तालिका 5.6.7

मध्याह्न भोजन योजना की गरीब बच्चों के लिए उपयुक्तता

क्र0 स0	विचार/राय	अभिभावक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	130	81.25
2	नहीं	11	6.88
3	कुछ हद तक	19	11.87
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.6.7 के अनुसार पता चलता है कि जब विद्यार्थियों के अभिभावकों से पूछा गया कि सरकार द्वारा विद्यालयों में चल रही मध्याह्न भोजन योजना सिर्फ गरीब बच्चों के लिए ही उपयुर्क्त है या सभी के लिए तो 81.25 प्रतिशत अभिभावकों ने हाँ में जवाब दिया क्योंकि गरीब बच्चों के माता–पिता उन्हें दो वक्त का पेट भर भोजन नहीं दे पाते और इस भोजन योजना से गरीब बच्चों को भोजन की पूर्ति अवश्य हो जाती है। जबकि 6.88 प्रतिशत अभिभावकों का नहीं मे जवाब आया और

11.87 प्रतिशत अभिभावकों का कहना है कि ये योजना कुछ हद तक गरीब बच्चों के लिए ही उपर्युक्त है।

मध्याह्न भोजन योजना की गरीब बच्चों के लिए उपयुक्तता संबंधी अभिभावकों के विचारों को चार्ट 5.6.7 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.6.7

मध्याह्न भोजन योजना की गरीब बच्चों के लिए उपयुक्तता

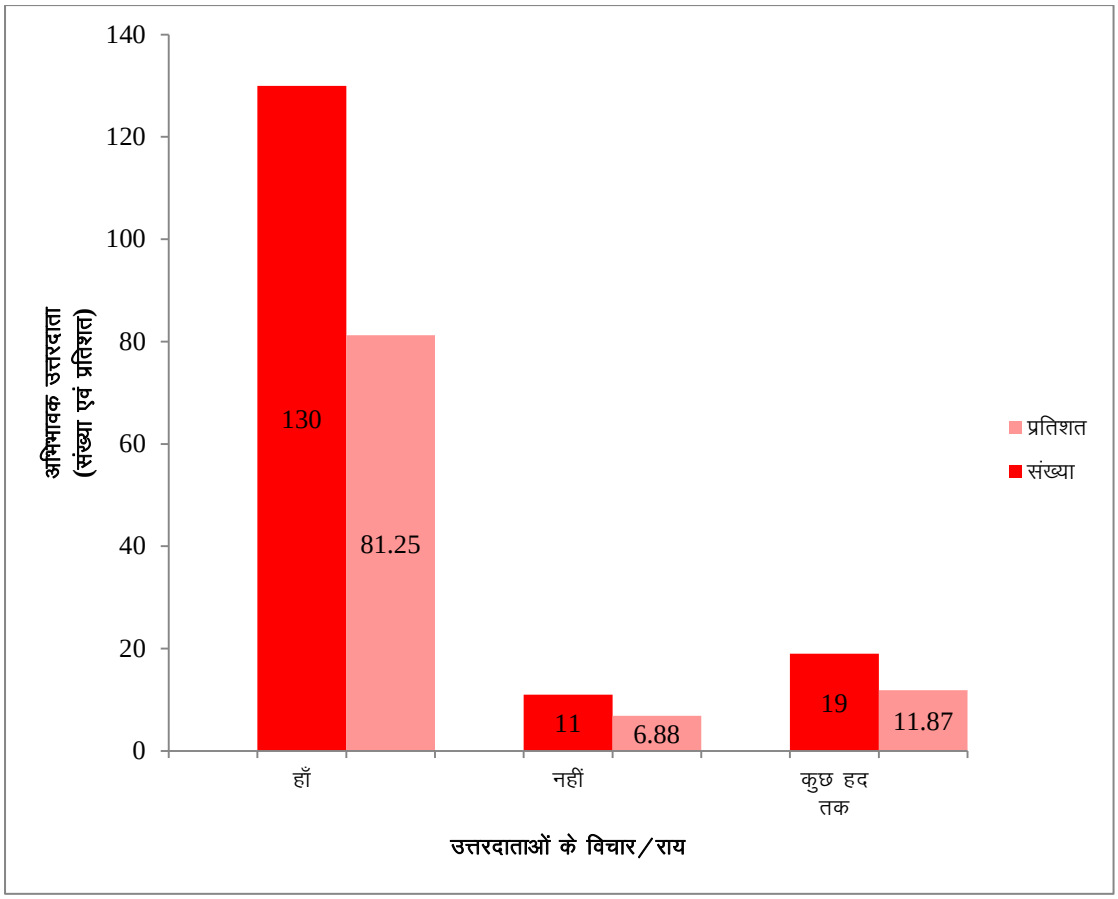

5.6.8 मध्याह्न भोजन योजना के तहत बच्चों को सिर्फ भोजन खाने के लिए ही विद्यालयों में भेजने संबंधी अभिभावकों के विचार

भारत में अधिकतर लोग गरीबी रेखा से नीचे जीवन व्यतीत कर रहे हैं। यहां तक कि कई परिवारों के पास अपने बच्चों को भरपेट भोजन खिलाने के प्रर्याप्त धन नहीं है, वे अपने बच्चों को शिक्षा भी नहीं दे सकते। मध्याह्न भोजन योजना के अन्तर्गत जब माता–पिता से उनके विचार जाने गए कि क्या वे अपने बच्चों को सिर्फ भोजन खाने के लिए ही विद्यालय में भेजते है या नहीं। इससे संबंधी अभिभावकों के विचारों को तालिका 5.6.8 में इस प्रकार से दर्शाया गया हैः–

तालिका 5.6.8

बच्चों को विद्यालय में सिर्फ भोजन के लिए भेजने संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अभिभावक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	70	43.75
2	नहीं	60	37.50
3	कुछ हद तक	30	18.75
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.6.8 के संदर्भ में पता चलता है कि जब विद्यार्थियों अभिभावकों से पूछा गया कि सरकार द्वारा विद्यालयों में चल रही मध्याह्न भोजन योजना के तहत दिए जाने वाले भोजन के लिए ही अपने बच्चों को स्कूल में भेजते है तो 43.75 प्रतिशत अभिभावकों ने हाँ में जवाब दिया और बताया कि उनकी मजबूरी है कि इस उद्देश्य के लिए ही बच्चों को स्कूल में भेजा जाता है ताकि बच्चों को पर्याप्त मात्रा

में भोजन मिल सकें। जबकि 37.50 प्रतिशत अभिभावकों का नहीं मे जवाब आया जबकि 18.75 प्रतिशत अभिभावकों ने कहा कि कुछ हद तक इस सोच के कारण ही बच्चों को विद्यालय भेजते हैं और यह भी सोचते हैं कि साथ में शिक्षा भी ग्रहण कर लेंगे।

बच्चों को विद्यालय में सिर्फ भोजन के लिए भेजने संबंधी अभिभावकों के विचारों को चार्ट 5.6.8 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.6.8

बच्चों को विद्यालय में सिर्फ भोजन के लिए भेजने संबंधी विचार

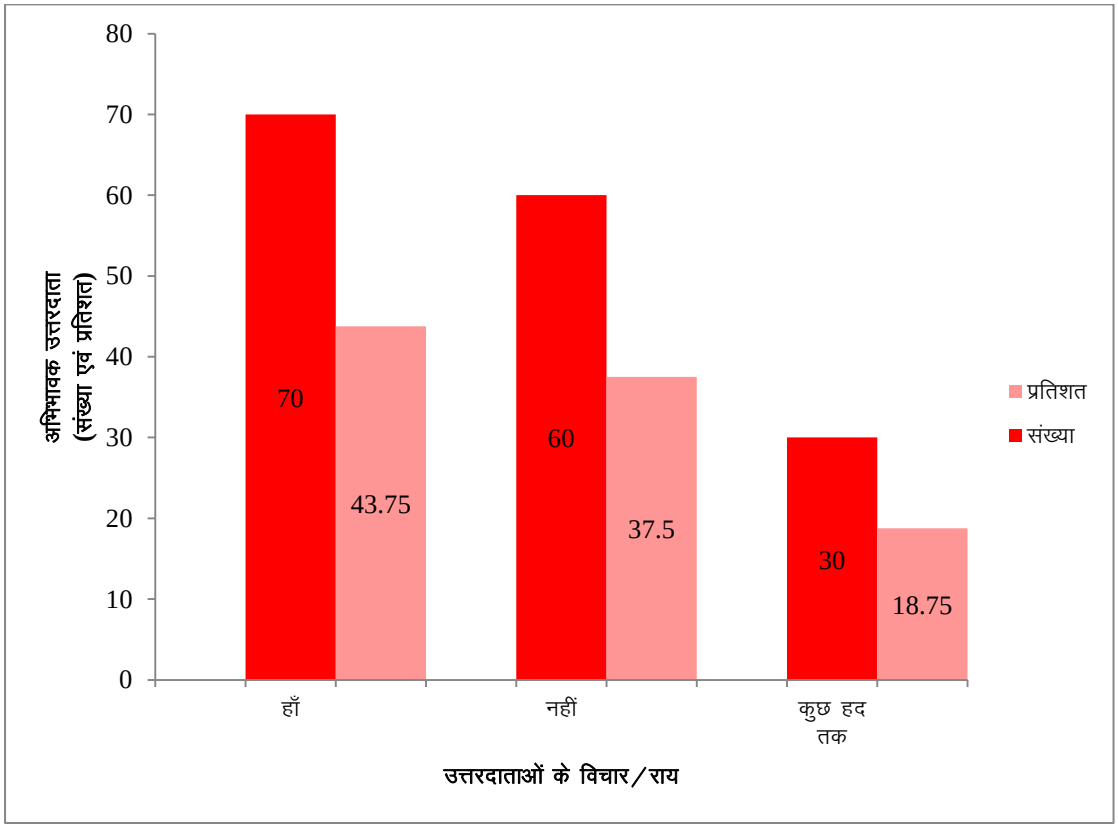

5.6.9 मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत विद्यालयों में भोजन की समय पर उपलब्धता संबंधी अभिभावकों के विचार

भोजन से शरीर को पौष्टिक तत्व तभी प्राप्त होते है जब भोजन को सही ढंग और सही समय पर खाया जाए। भारतीय ऋषि–मुनियों का भी विचार है कि भोजन सही व उचित समय पर ही खाया जाना चाहिए तभी शरीर को सुचारु रुप से चलाया जा सकता है। विद्यालयों में बच्चों को भोजन की सही समय पर उपलब्धता संबंधी माता–पिता के विचारों को नीचे तालिका में दर्शाया गया हैः–

तालिका 5.6.9

बच्चों को भोजन समय पर उपलब्ध करवाने संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अभिभावक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	58	36.25
2	नहीं	72	45.00
3	कुछ हद तक	30	18.75
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.6.9 के अनुसार पता चलता है कि जब विद्यार्थियों के अभिभावकों से पूछा गया कि सरकार द्वारा विद्यालयों में चल रही मध्याह्न भोजन योजना के तहत भोजन समय पर ही उपलब्ध करवाया जाता है तो 36.25 प्रतिशत अभिभावकों ने हाँ में जवाब दिया जबकि 45 प्रतिशत अभिभावकों का नहीं मे जवाब आया और उन्होंने कहा कि बच्चे घर पर आकर बताते हैं कि उन्हें जब भूख लगती है तब तो उन्हें भोजन नहीं मिलता। जबकि 18.25 प्रतिशत अभिभावकों का कहना है कि कुछ

हद तक बच्चों को समय पर भोजन दिया जाता है। उन्हें यह सब उनके बच्चे घर आने पर ही बताते है।

मध्याह्न भोजन योजना के अन्तर्गत बच्चों को समय पर भोजन उपलब्ध करवाने संबंधी अभिभावकों के विचारों को चार्ट 5.6.9 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.6.9

बच्चों को भोजन समय पर उपलब्ध करवाने संबंधी विचार

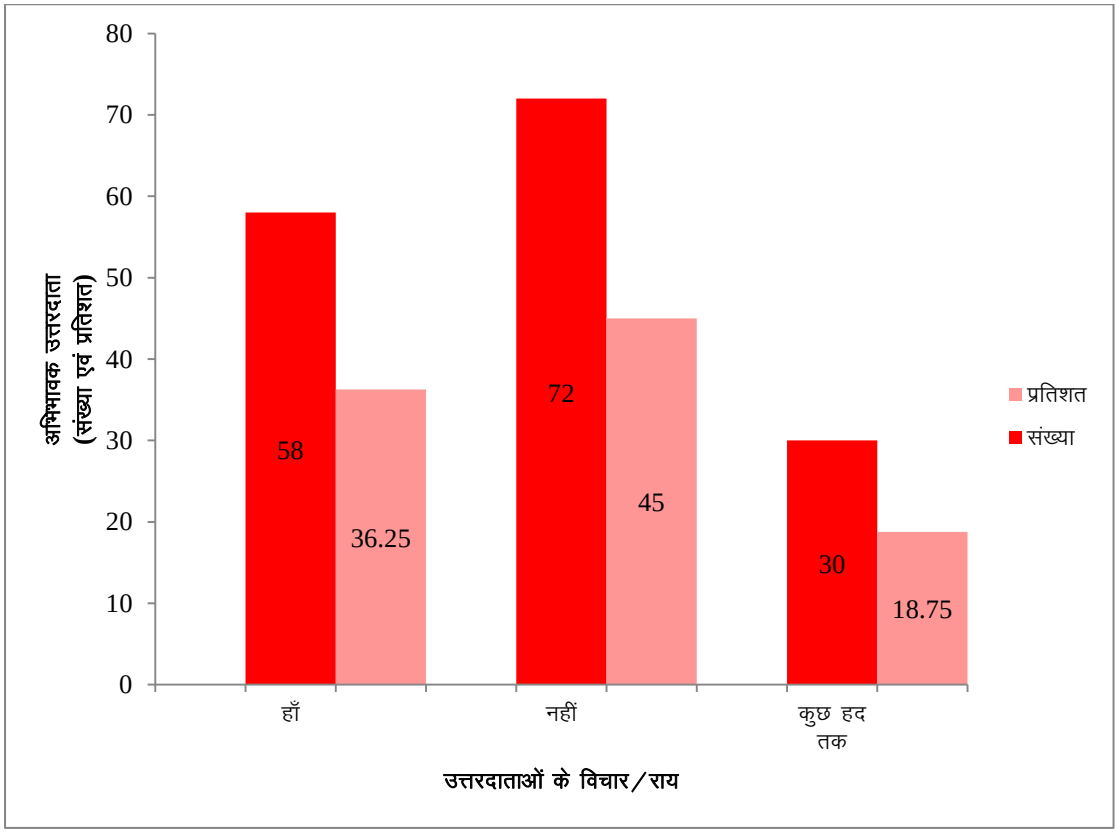

5.6.10 मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत विद्यालय में बच्चों को दी जाने वाली भोजन सामग्री की जानकारी संबंधी अभिभावकों के विचार

मध्याह्न भोजन योजना के तहत बच्चों को विद्यालय में दी दिए जाने वाले भोजन की खाद्य सामग्री के बारे में अभिभावकों से पूछा गया और यह भी जानने की कोशिश की गई कि बच्चों से इस बारे में पूछते हैं या नहीं। इससे संबंधी अभिभावकों के विचारों को नीचे दी गई तालिका 5.6.10 में इस प्रकार से दर्शाया गया है जो कि इस प्रकार से हैः–

तालिका 5.6.10

योजना के तहत दी जाने वाली भोजन सामग्री की जानकारी संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अभिभावक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	34	21.25
2	नहीं	90	56.25
3	कुछ हद तक	36	22.50
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.6.10 के अनुसार पता चला कि जब विद्यार्थियों के अभिभावकों से पूछा गया कि सरकार द्वारा विद्यालयों में चल रही मध्याह्न भोजन योजना के तहत बच्चों को जो सामग्री दी जाती है उसकी उन्हें पूर्णतया जानकारी है तो 21.25 प्रतिशत अभिभावकों ने हाँ में जवाब दिया जबकि 56.25 प्रतिशत अभिभावकों का नहीं में जवाब आया कि उन्हें इसकी जानकारी नहीं है और 22.50 प्रतिशत अभिभावकों का कहना है कि बच्चों को दोपहर के भोजन में दी जाने वाली भोजन

सामग्री के बारे में उन्हें कुछ हद तक जानकारी है। यह जानकारी उन्हें उनके बच्चों से मिलती है जब बच्चे विद्यालय से आकर उन्हें बताते है।

मध्याह्न भोजन योजना के तहत विद्यालयों में बच्चों को दी जाने वाली भोजन सामग्री की जानकारी संबंधी अभिभावकों के विचारों को चार्ट 5.6.10 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.6.10

योजना के तहत दी जाने वाली भोजन सामग्री की जानकारी संबंधी विचार

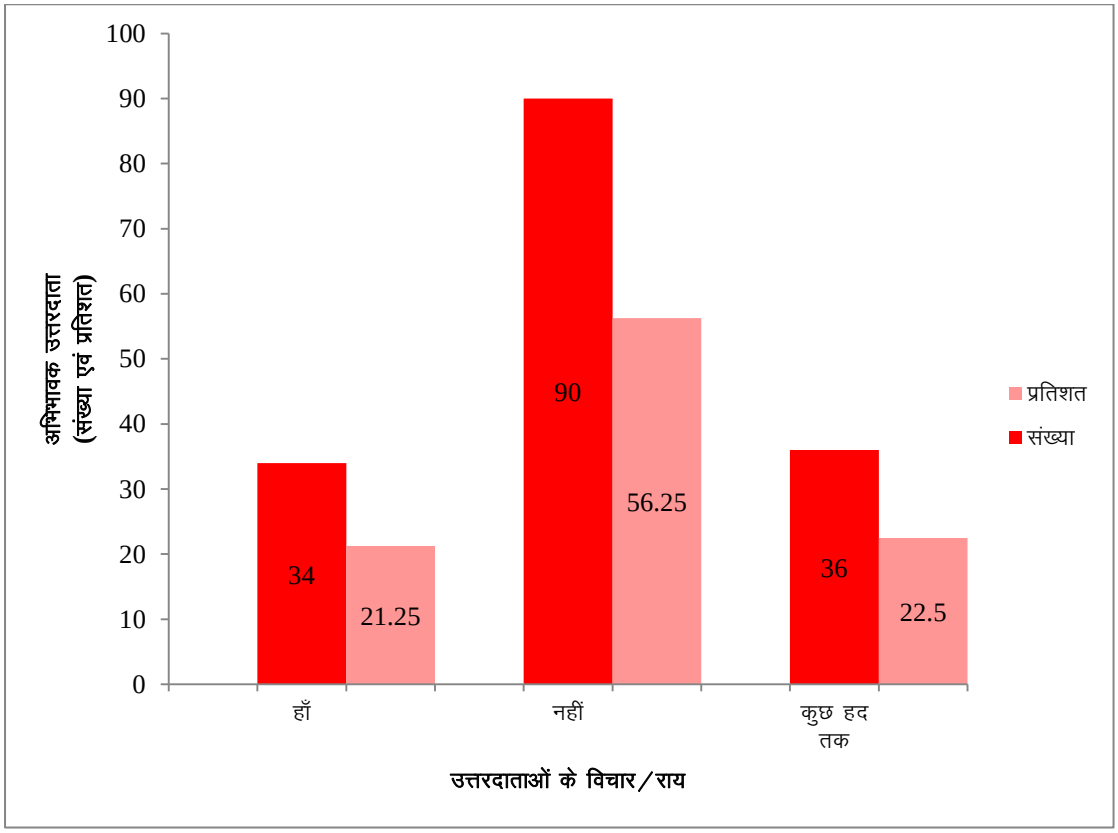

5.6.11 मध्याह्न भोजन योजना से बच्चों की शिक्षा में वृद्धि संबंधी अभिभावकों के विचार

इस योजना का मुख्य उद्देश्य विद्यालय में बच्चों की संख्या में वृद्धि करना है। परन्तु इसके साथ–साथ शिक्षा में वृद्धि भी अति आवश्यक है। मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत शिक्षा में वृद्धि संबंधी बच्चों के अभिभावकों के विचारों को नीचे दी गई तालिका 5.6.11 में इस प्रकार दर्शाया गया हैः–

तालिका 5.6.11

योजना से बच्चों की शिक्षा में वृद्धि होने संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अभिभावक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	67	41.88
2	नहीं	73	45.62
3	कुछ हद तक	20	12.50
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.6.11 से पता चलता है कि जब विद्यार्थियों के अभिभावकों से पूछा गया कि सरकार द्वारा विद्यालयों में चल रही मध्याह्न भोजन योजना से उनके बच्चों की शिक्षा में वुद्वि हुई है या नहीं तो 41.88 प्रतिशत अभिभावकों ने हाँ में जवाब दिया जबकि 45.62 प्रतिशत अभिभावकों का नहीं में जवाब आया और 12.50 प्रतिशत अभिभावकों का कहना है कि कुछ हद तक शिक्षा में वृद्धि हुई है। माता–पिता का कहना है कि पहले उनके बच्चे विद्यालय में जाते ही नहीं थे परन्तु इस योजना के कारण अब वे विद्यालय में जाने लगे हैं।

मध्याह्न भोजन योजना से बच्चों की शिक्षा में वृद्धि होने संबंधी अभिभावकों के विचारों को चार्ट 5.6.11 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.6.11

योजना से बच्चों की शिक्षा में वृद्धि होने संबंधी विचार

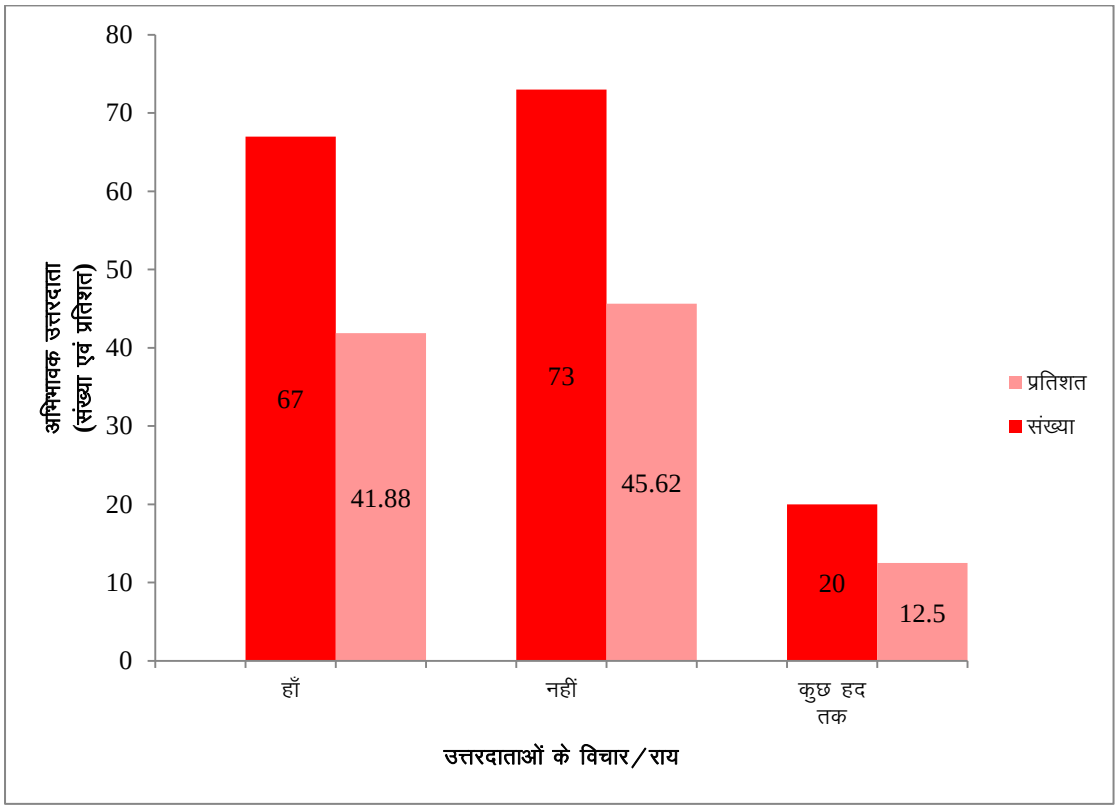

5.6.12 मध्याह्न भोजन योजना को विद्यालय में जारी रखने संबंधी अभिभावकों की राय

मध्याह्न भोजन योजना विद्यालयों के लिए एक अच्छी व उचित योजना है परन्तु माता–पिता इस योजना के बारे में क्या विचार रखते हैं। मध्याह्न भोजन योजना को विद्यालय में जारी रखा जाए या नहीं इससे संबंधी अभिभावकों की राय को नीचे तालिका 5.6.12 में में दर्शाया गया है जो कि इस प्रकार से हैः–

तालिका 5.6.12

मध्याह्न भोजन योजना को जारी रखने संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अभिभावक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	125	78.12
2	नहीं	15	09.38
3	आवश्यकतानुसार	20	12.50
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.6.12 के अन्तर्गत जब बच्चों के अभिभावकों से यह राय ली गई कि सरकार द्वारा जारी की गई मध्याह्न भोजन योजना जो कि विद्यालय में चल रही है क्या इस योजना को विद्यालयों में जारी रखा जाए तो 78.12 प्रतिशत अभिभावकों ने हाँ में राय दी और 9.38 प्रतिशत अभिभावकों ने नहीं में जवाब दिया जबकि सिर्फ 12.50 प्रतिशत अभिभावकों ने कहा कि इस योजना को आवश्यकतानुसार जारी रखा जाए और यह भी तो सरकार पर भी निभर करता है

कि वह योजना को जारी रखेगा या नहीं और यह भी कहा कि यह तो सरकार पर ही निर्भर करता है कि वह योजना को जारी रखे या नहीं।

विद्यालयों में मध्याह्न भोजन योजना को जारी रखने संबंधी अभिभावकों की राय विचारों को चार्ट 5.6.12 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.6.12

मध्याह्न भोजन योजना को जारी रखने संबंधी विचार

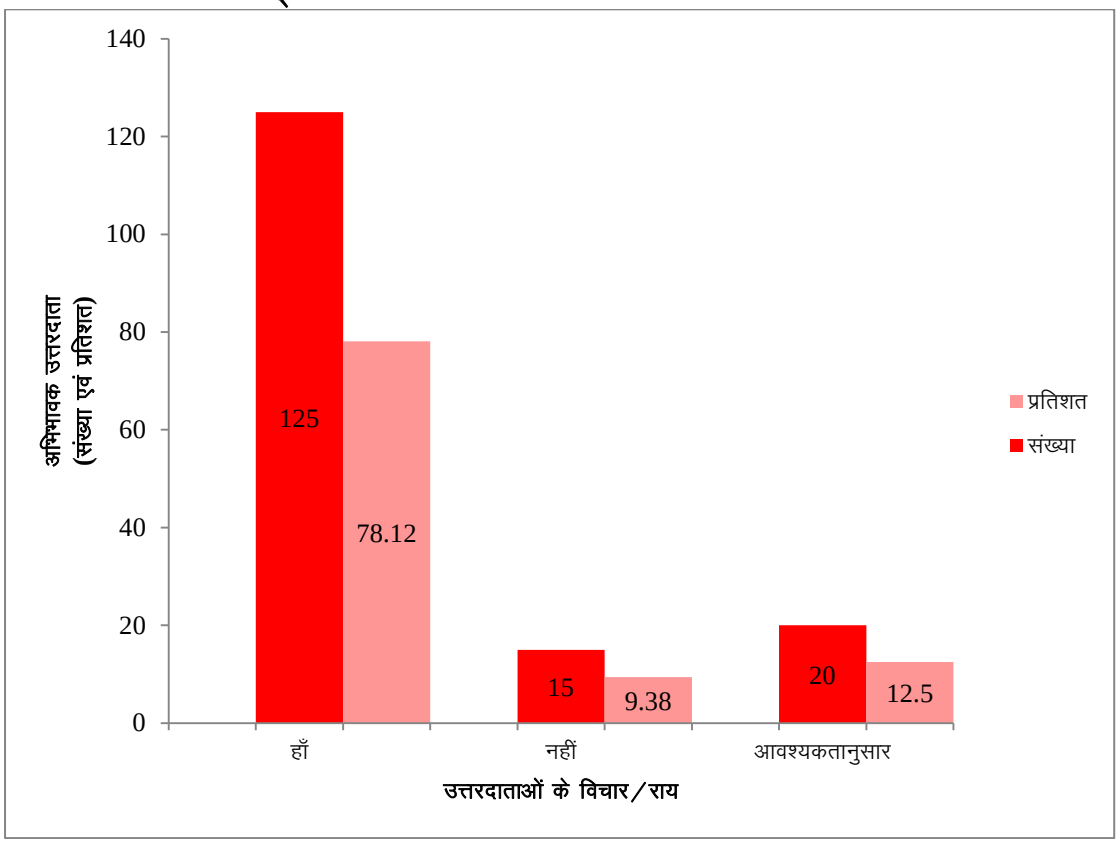

5.6.13 मध्याह्न भोजन योजना के तहत शिक्षा समिति के सदस्यों द्वारा निरीक्षण करने संबंधी अभिभावकों के विचार

सरकार द्वारा प्रत्येक विद्यालयों में एक शिक्षा समिति के गठन का प्रावधान किया गया है जिसमें विद्यालय से अध्यापकों, पंचायतों/नगरपालिकाओं के सदस्यों को भी इस शिक्षा समिति में शामिल किया गया है। उन सदस्यों का समय–समय पर इस योजना के तहत विद्यालय में निरीक्षण करने संबंधी अभिभावकों के विचारों को नीचे दी गई तालिका 5.6.13 में इस प्रकार से दर्शाया गया हैः–

तालिका 5.6.13

मध्याह्न भोजन योजना के तहत शिक्षा समिति के सदस्यों द्वारा निरीक्षण करने संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अभिभावक उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	57	35.62
2	नहीं	60	37.50
3	कभी–कभी	43	26.88
	योग	160	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.6.13 के संदर्भ में जब विद्यालयों में जारी मध्याह्न भोजन योजना के अर्न्तगत अभिभावकों से पूछा गया कि क्या विद्यालय में गठित शिक्षा समिति के गांव/शहर के सदस्य निरीक्षण करने हेतू विद्यालयों में आते है तो 35.62 प्रतिशत अभिभावकों ने हाँ में जवाब दिया। जबकि 37.50 प्रतिशत ने नहीं जवाब दिया। जबकि 26.88 प्रतिशत अभिभावकों का कहना है कि कभी–कभी गांव/शहर के

स्कूलों में शिक्षा समिति के सदस्य और अधिकारी निरीक्षण हेतू अवश्य आते हैं। जब किसी उच्च अधिकारी द्वारा विद्यालयों में निरीक्षण होता है तो वे भी विद्यालयों में पहुँच ही जाते है।

मध्याह्न भोजन योजना के तहत शिक्षा समिति के सदस्यों द्वारा गांव/कस्बे के विद्यालयों में निरीक्षण करने संबंधी अभिभावकों के विचारों को चार्ट 5.6.13 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.6.13

मध्याह्न भोजन योजना के तहत शिक्षा समिति के सदस्यों द्वारा निरीक्षण करने संबंधी विचार

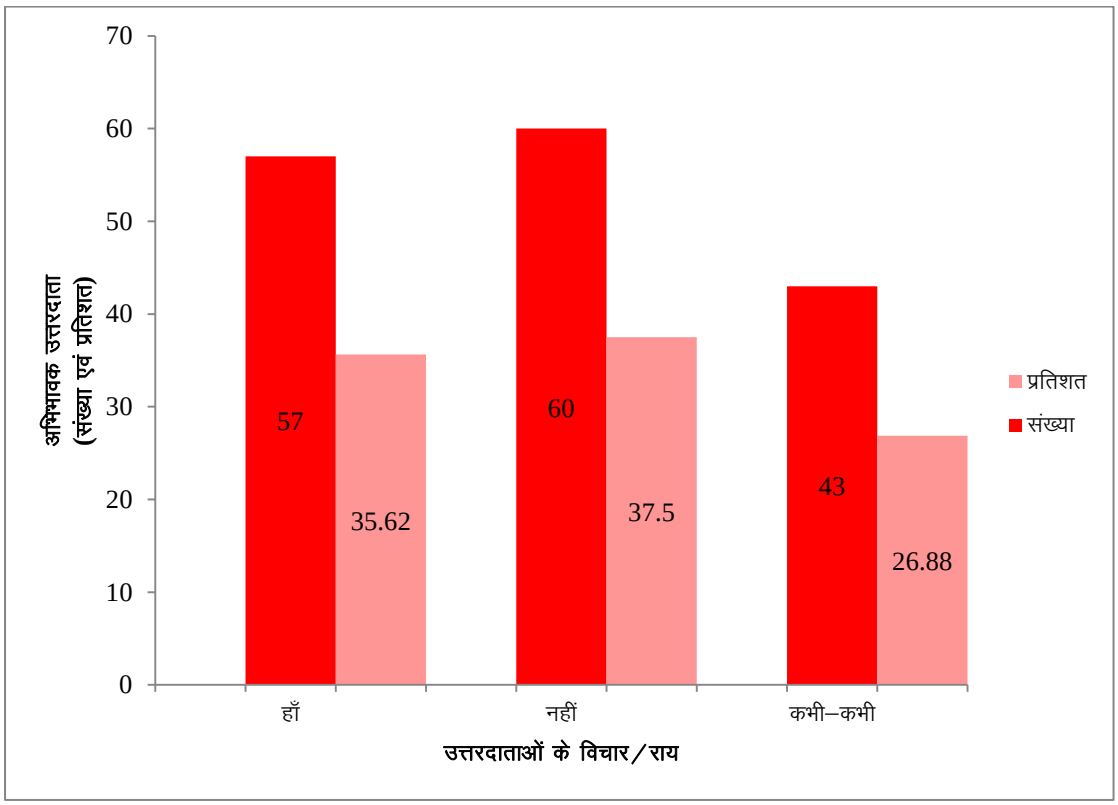

5.7 अधिकारी/कर्मचारी उत्तरदाताओं के विचारः एक विश्लेषण

हिसार मंडल में कुल पाँच जिलों में से दो–दो खण्डों में से मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत शोध के दौरान अधिकारी/कर्मचारी वर्ग से प्रश्न पूछने के लिए भी प्रश्नावली का निर्माण किया गया तथा प्रत्येक जिले से 16 अधिकारियों/कर्मचारियों का चुनाव किया गया जिनसे शोध से संबंधित प्रश्न पूछे गए। इस प्रकार कुल 80 अधिकारियों/कर्मचारियों से प्रश्नावली भरवाई गई उनके द्वारा दिए गए अमूल्य विचारों को निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया गया हैः–

5.7.1 मध्याह्न भोजन योजना का मुख्य उद्देश्य जानने संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचार

मानव जीवन एक संघर्षपूर्ण जीवन है और वह किसी न किसी उद्देश्य की पूर्ति में लगा ही रहता है। इसी प्रकार सभी व्यक्तियों के कल्याण व जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिए निम्न प्रकार की योजनाएं चलाई जाती हैं। मध्याह्न भोजन योजना बच्चों से जुड़ी हुई एक योजना है। किसी भी कल्याण के लिए चलाई गई योजना का मुख्य उद्देश्य तो कोई ना कोई निर्धारित किया ही जाता है। इस योजना के उद्देश्य संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को तालिका 5.7.1 में इस प्रकार से दर्शाया गया हैः–

तालिका 5.7.1

योजन को लागू करने का उद्देश्य संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अधिकारी/कर्मचारी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	रोजगार के लिए	2	02.50
2	कुपोषण की समस्या का समाधान	5	06.25
3	शिक्षा दर बढाने के लिए	7	08.75
4	विद्यार्थियों की उपस्थिति बढ़ाने के लिए	15	18.75
5	उपरोक्त सभी	51	63.75
	योग	80	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.7.1 के संदर्भ में अधिकारियों से सबसे पहले विचार पूछा गया कि सरकार द्वारा विद्यालयों में चल रही मध्याह्न भोजन योजना का मुख्य उद्देश्य क्या है तो 2.50 प्रतिशत ने जवाब दिया कि यह योजना रोजगार के लिए शुरू की गई है और 6.25 प्रतिशत अधिकारियों ने कहा कि इस योजना से बच्चों को कुपोषण की समस्या से निजात मिलेगी। 8.75 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों का विचार है कि इस योजना से शिक्षा दर में वृद्धि होगी और 18.75 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों का मत है कि इस योजना का मुख्य उद्देश्य विद्यालयों में बच्चों की संख्या में बढोतरी करना है और 63.75 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों का यह मानना है कि इस योजना से रोजगार की समस्या, कुपोषण की समस्या और शिक्षा दर में बढोतरी के साथ–साथ विद्यालयों में बच्चों की उपस्थिति में आवश्यक वृद्धि करना है।

मध्याह्न भोजन योजना को लागू करने के उद्देश्य के बारे में अधिकारी/कर्मचारियों के विचारों को चार्ट 5.7.1 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.7.1

योजना को लागू करने का उद्देश्य संबंधी विचार

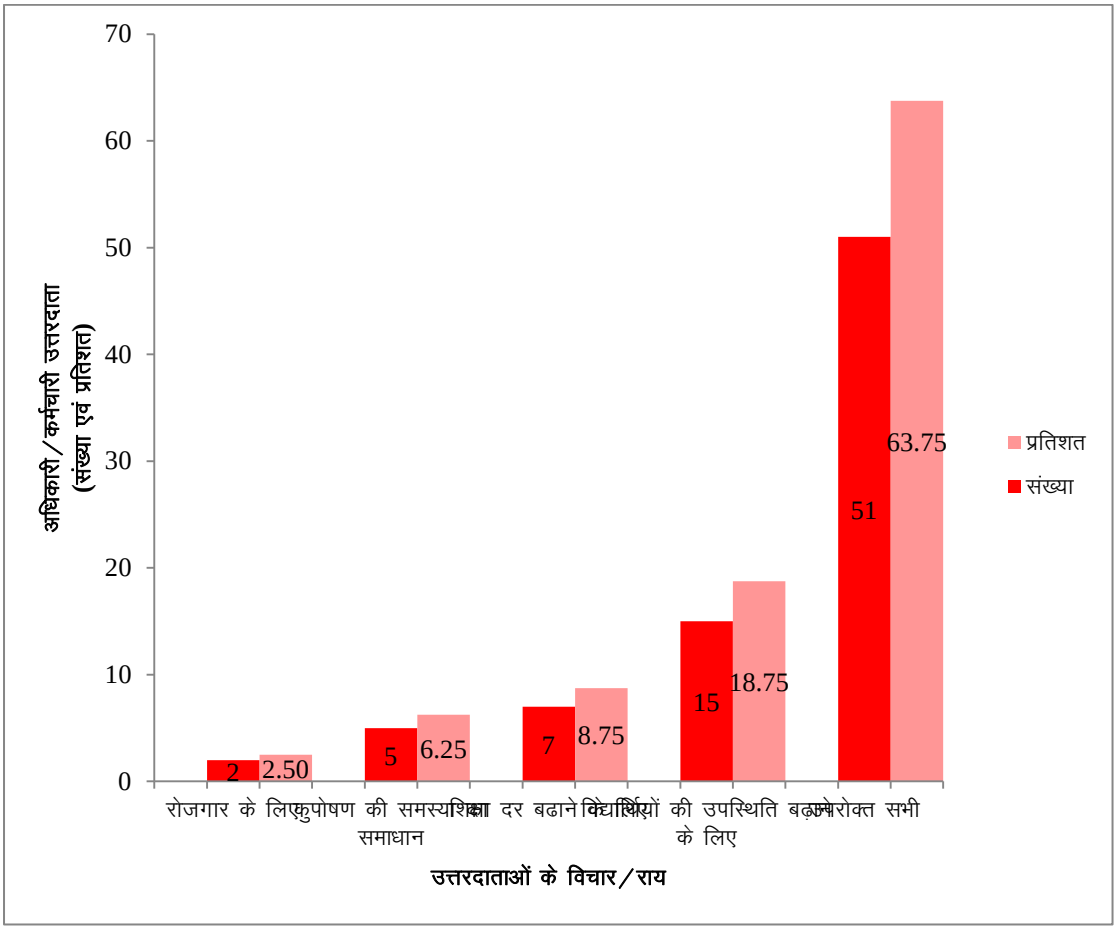

5.7.2 मध्याह्न भोजन योजना के प्रति जनता में सहभागिता में वृद्धि संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचार

प्रत्येक कार्य की सफलता सहयोग व सहभागिता पर अवश्य आधारित होती है और जब कार्य उचित तथा विस्तारपूर्व हो तो उस कार्य के लिए और भी अधिक सहयोग व सहभागिता की अवश्यकता रहती है। मध्याह्न भोजन योजना एक बड़े विस्तार की योजना है। तालिका 5.7.2 में मध्याह्न भोजन योजना के तहत जनता में सहभागिता पाई जाती है या नहीं के बारे में क्या राय है इस संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों का विवरण दिया गया है:–

तालिका 5.7.2

मध्याह्न भोजन योजना के प्रति जनता में सहभागिता संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अधिकारी/कर्मचारी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	20	25.00
2	नहीं	50	62.50
3	कुछ हद तक	10	12.50
	योग	80	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.7.2 के अनुसार अधिकारियों/कर्मचारियों से यह विचार पूछा गया कि सरकार द्वारा विद्यालयों में चल रही मध्याह्न भोजन योजना के प्रति जनता में सहभागिता है तो 25 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने हाँ में जबाव दिया है। जबकि 62.50 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियो ने नहीं में जवाब दिया है और 12.50 प्रतिशत का कहना है कि कुछ हद तक ऐसा लगता है कि जनता जैसे

माता–पिता आदि सहभागिता अवश्य करते हैं। निष्कर्ष तौर पर कहा जा सकता है कि इस योजना में जनता सहभागिता का अभाव है।

मध्याह्न भोजन योजना के प्रति जनता में सहभागिता में वृद्धि संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को चार्ट 5.7.2 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.7.2

मध्याह्न भोजन योजना के प्रति जनता में सहभागिता संबंधी विचार

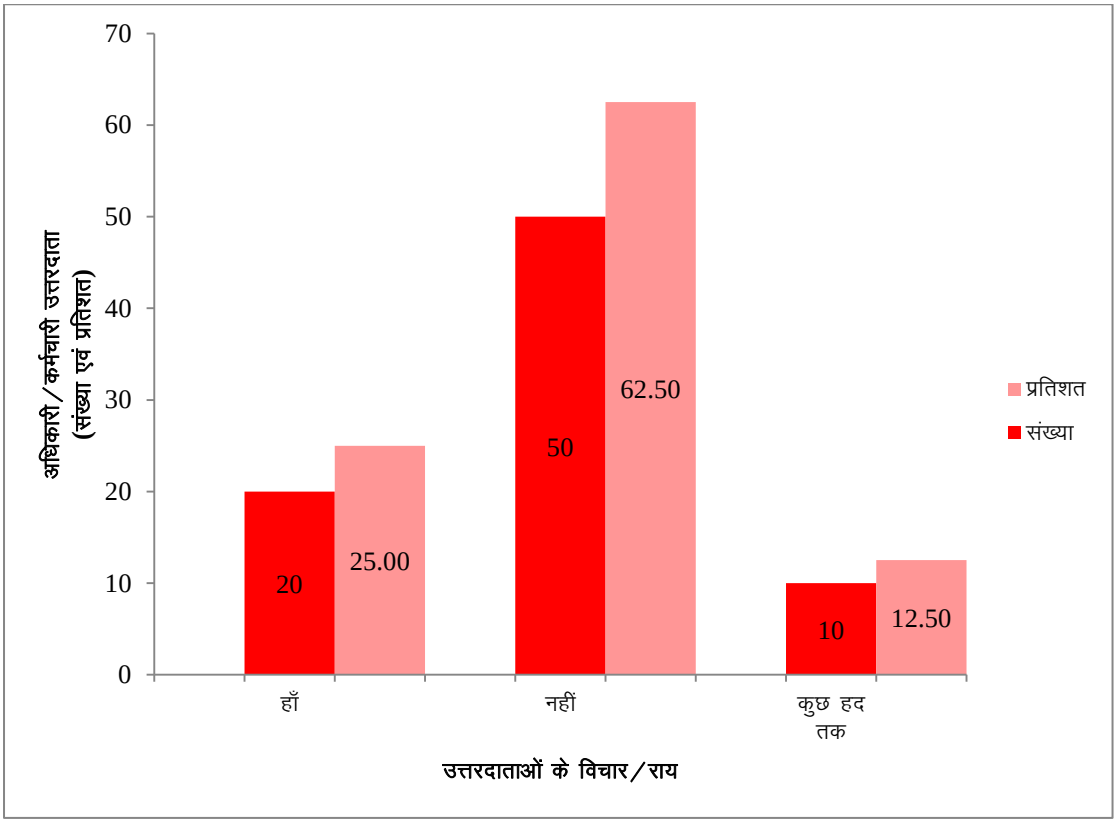

5.7.3 मध्याह्न भोजन योजना के तहत सरकार द्वारा प्रदत्त मात्रा में साधनों की उपलब्धता संबंधी विचार

जब कोई योजना व कार्य बड़े स्तर या विस्तारपूर्वक किए जाते हैं तो उसके लिए साधनों की मात्रा की उपलब्धता भी उचित तथा विस्तारपूर्वक होनी चाहिए ताकि कार्य समय पर व सही तरीके से पूरे हो सकें। मध्याह्न भोजन योजना से संबंधित कर्मचारियों/अधिकारियों से जब पूछा गया कि क्या इस योजना को चलाने के लिए सरकार द्वारा प्रदत्त मात्रा में साधन उपलब्ध करवाये जाते हैं तो उनसे प्राप्त विचारों का विवरण तालिका 5.7.3 में दर्शाया गया है:–

तालिका 5.7.3

योजना के तहत सरकार द्वारा प्रदत्त साधनों की उपलब्धता संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अधिकारी/कर्मचारी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	30	37.50
2	नहीं	35	43.75
3	कुछ हद तक	15	18.75
	योग	80	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.7.3 के अनुसार जब अधिकारियों/कर्मचारियों से पूछा गया कि सरकार द्वारा विद्यालयों में चलाई जा रही मध्याह्न भोजन योजना के तहत सरकार द्वारा प्रदत्त मात्रा में साधन उपलब्ध करवाये जाते हैं तो 37.50 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियो ने हां मे जवाब दिया जबकि 43.75 प्रतिशत अधिकारियों ने

नहीं मे जवाब दिया और 18.75 का कहना है कि कुछ हद तक मध्याह्न भोजन योजना के लिए सरकार द्वारा प्रदत्त साधन उपलब्ध करवाये जाते हैं इसी वजह से तो अभी तक इस योजना को विद्यालयों में जारी रखा गया है।

मध्याह्न भोजन योजना को चलाने के लिए सरकार द्वारा प्रदत्त साधनों की प्रायप्तता संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को चार्ट 5.7.3 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.7.3

योजना के तहत सरकार द्वारा प्रदत्त साधनों की उपलब्धता संबंधी विचार

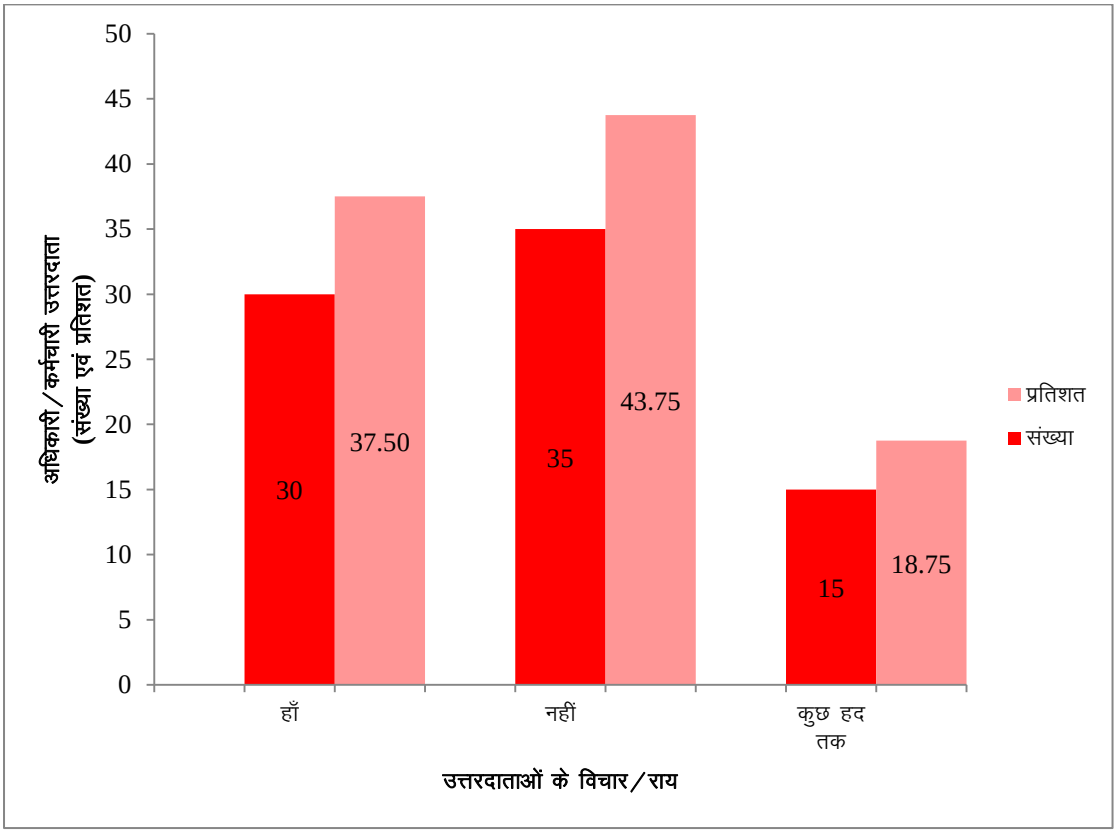

5.7.4 मध्याह्न भोजन योजना विद्यालय के मुखिया के अलावा अन्य संस्था को जिम्मेवारी देने संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचार

किसी संगठन या संस्था में कल्याणपूर्ण उद्देश्यों को पूर्ति के लिए कार्यभार को संभालने व उसको पूर्ण करने के लिए किसी विशेष व्यक्ति या सदस्य की नियुक्ति अवश्य की जाती है। मध्याह्न भोजन योजना का कार्यभार शिक्षा निदेशालय के अधिकारियों और कर्मचारियों को सौपा गया है। यह कार्यभार या जिम्मेवारी किसी अन्य संस्था को सौपने संबंधी कर्मचारियों/अधिकारियों के विचारों को नीचे दी गई तालिका 5.7.4 में दर्शाया गया है:–

तालिका 5.7.4

योजना अन्य संस्था को सौपना

क्र0 स0	विचार/राय	अधिकारी/कर्मचारी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	43	53.75
2	नहीं	13	16.25
3	सरकारी नियमानुसार	24	30.00
	योग	80	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.7.4 के संदर्भ में अधिकारियो/कर्मचारियों से पूछा गया कि सरकार द्वारा विद्यालयों में चल रही मध्याह्न भोजन योजना की जिम्मेवारी या कार्यभार अन्य किसी संस्था को सौंप देना चाहिए या नहीं तो 53.75 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों नें हाँ मे जवाब दिया। मात्र 16.25 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने नहीं मे जवाब दिया और कहा कि ऐसा करने से विद्यालयों में

विद्यार्थियों के अध्ययन कार्य को बाधित होने से बचाया जा सकेगा। जबकि 42.50 प्रतिशत का कहना है कि सरकारी नियमानुसार इस योजना के लिए जो उचित हो वही किया जाना चाहिए।

मध्याह्न भोजन योजना को अन्य संस्था को सौंपने संबंधी अधिकारी/कर्मचारियों के विचारों को चार्ट 5.7.4 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.7.4

योजना अन्य संस्था को सौपना

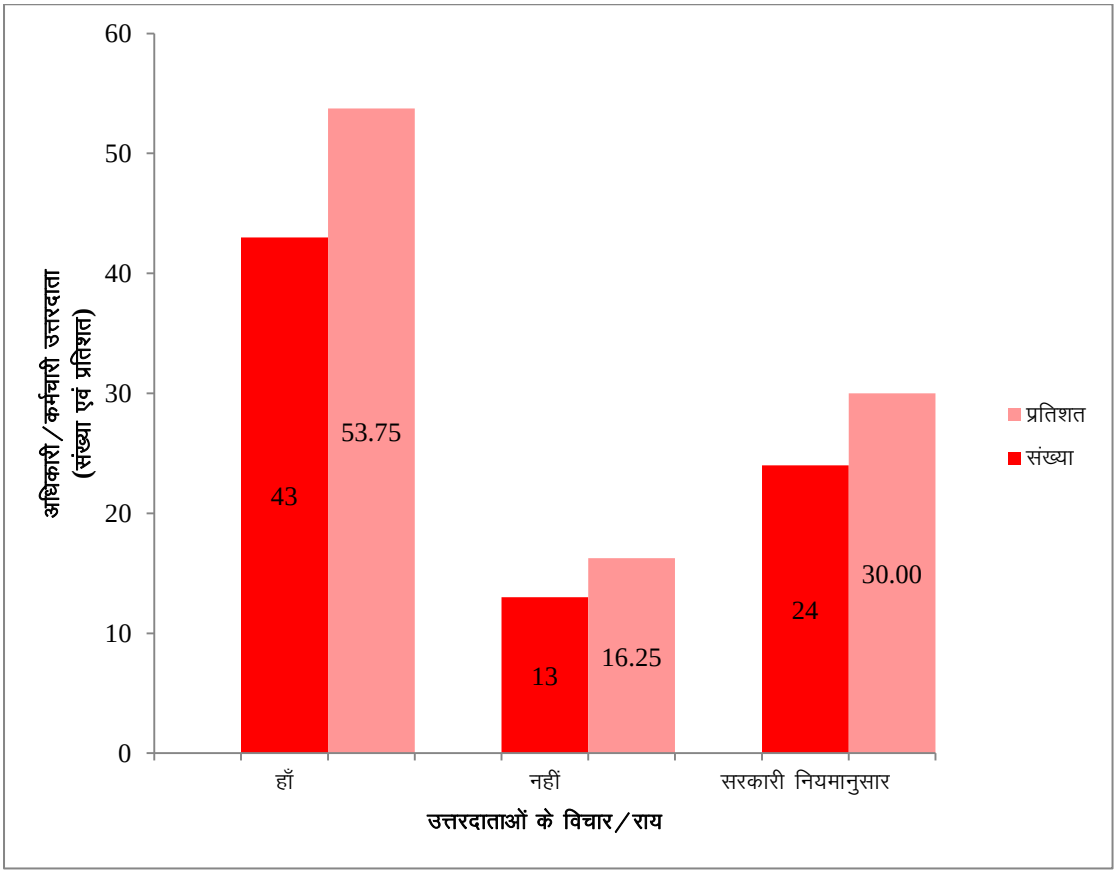

5.7.5 मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत भोजन सामग्री में पोषक तत्वों की उपलब्धता संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचार

भोजन में पोषक तत्वों की उपलब्धता का होना अति आवश्यक व अनिवार्य है। बिना पोषक तत्वों के भोजन को ग्रहण करना निरर्थक है व अन्य बिमारीयों को निमंत्रण देने के सामान है। मध्याह्न भोजन योजना के तहत भोजन में पोषक तत्वों की उपलब्धता संबंधी अधिकारियो/कर्मचारियों के विचारों को नीचे तालिका 5.7.5 में इस प्रकार से दर्शाया गया है:–

तालिका 5.7.5

भोजन सामग्री में पोषक तत्वों की उपलब्धता

क्र0 स0	विचार/राय	अधिकारी/कर्मचारी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	38	47.50
2	नहीं	21	26.25
3	कुछ हद तक	21	26.25
	योग	80	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.7.5 के संदर्भ में अधिकारियों/कर्मचारियों से जब यह विचार पूछा गया कि सरकार द्वारा विद्यालयों में चल रही मध्याह्न भोजन योजना के तहत विद्यालय में जो भोजन सामग्री बच्चो को दी जाती है उसमें पोषक तत्वों की उपलब्धता है तो 47.50 प्रतिशत अधिकारियो/कर्मचारियों नें हाँ मे जवाब दिया और 26.25 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियो ने नहीं में जवाब दिया जबकि 26.25 प्रतिशत अधिकारियो/कर्मचारियों ने जवाब दिया कुछ हद तक बच्चों के लिए पोषक

तत्वों की उपलब्धता होती है जैसे–मीठा दलिया, पुलाव, खिचड़ी आदि भोजन दिया जाए जो कि बच्चों के स्वास्थ्य के लिए उतम माना जाता है।

भोजन सामग्री में पोषक तत्वों की उपलब्धता संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को चार्ट 5.7.5 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.7.5

भोजन सामग्री में पोषक तत्वों की उपलब्धता

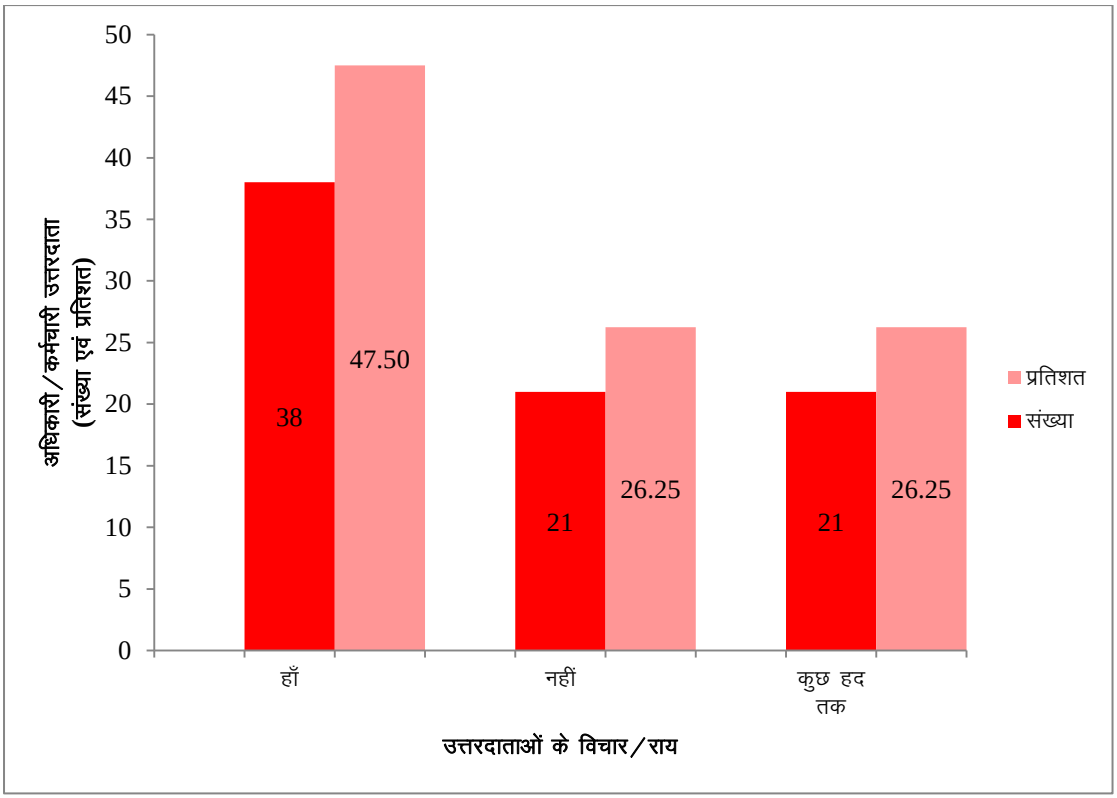

5.7.6 मध्याह्न भोजन योजना के बारे में सरकार की सोच संबंधी कर्मचारियों/अधिकारियों के विचार

सरकार द्वारा चलाई जा रही योजना का उद्देश्य अच्छा और सकारात्मक सोच होती है तभी वह नीति अपना प्रतिफल प्रदान करती है और इसलिए कल्याणपूर्ण योजनाओं को हमेशा सकारात्मक उद्देश्य होना अति आवश्यक है। मध्याह्न भोजन योजना के बारे में सरकार की सोच से संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को तालिका 5.7.6 में दर्शाया गया है:–

तालिका 5.7.6

मध्याह्न भोजन योजना के बारे में सरकार की सोच संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अधिकारी/कर्मचारी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	सकारात्मक	37	46.25
2	नकारात्मक	03	03.75
3	उदासीन	40	50.00
	योग	80	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.7.6 के संदर्भ में अधिकारियों/कर्मचारियो से जब यह विचार पूछा गया कि सरकार द्वारा विद्यालयों में चल रही मध्याह्न भोजन योजना के लिए सरकार की सोच कैसी है तो 46.25 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों नें हाँ मे जवाब दिया और कहा कि सरकार की सोच सकारात्मक लगती है। जबकि 3.75 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने नहीं में जवाब दिया और 50 प्रतिशत

अधिकारियों/कर्मचारियो ने बताया कि मध्याह्न भोजन योजना के प्रति सरकार की सोच उदासीनता भरी है इसलिए इस योजना से वांछित प्रभाव प्राप्त नहीं हो रहें हैं।

मध्याह्न भोजन योजना के बारे में सरकार की सोच संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को चार्ट 5.7.6 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.7.6

मध्याह्न भोजन योजना के बारे में सरकार की सोच संबंधी विचार

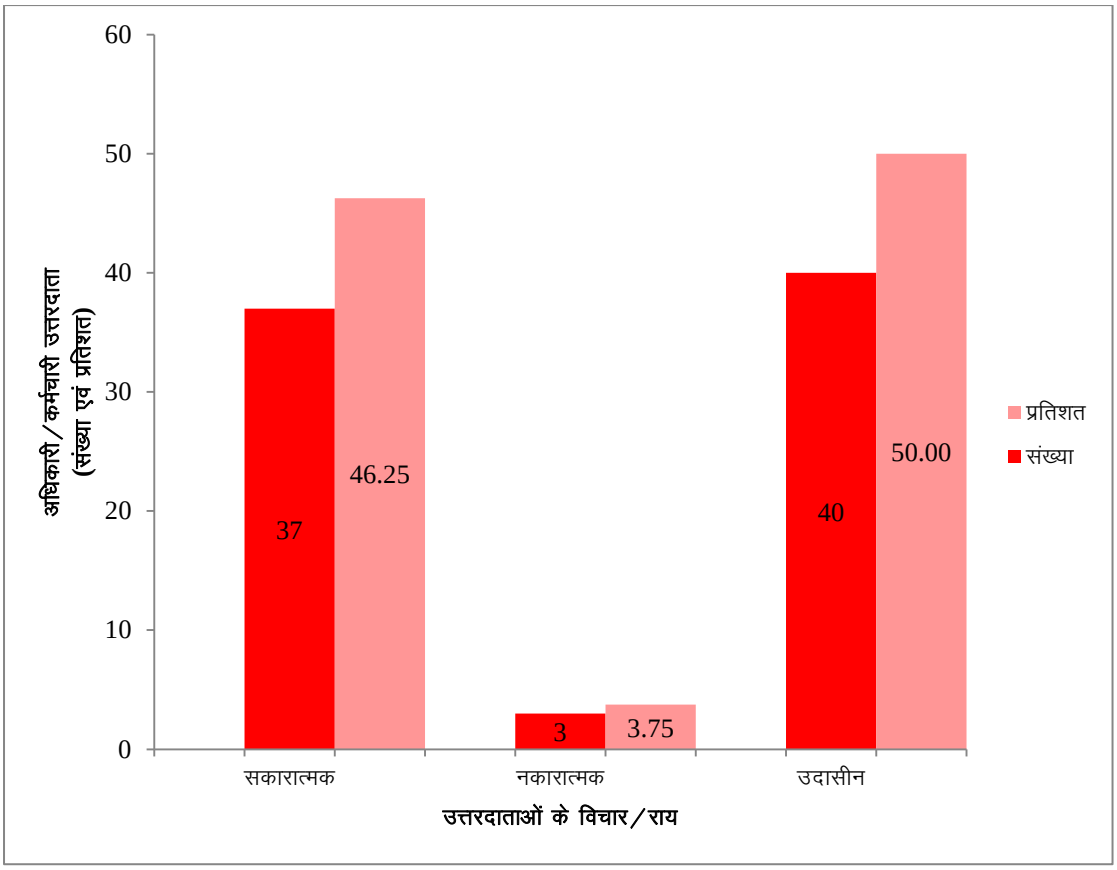

5.7.7 मध्याह्न भोजन योजना के तहत माता–पिता को शामिल करने बारे अधिकारियों/कर्मचारियों के विचार

गुरूजनों के अलावा बच्चों को उनके माता–पिता ही संभालते हैं और जो कि बच्चों के पसंद व नापसंद आदि से वाकिफ होते है। इसलिए बच्चों के माता–पिता को भी इस योजना में शामिल किया जाना चाहिए। मध्याह्न भोजन योजना के तहत माता–पिता को शामिल करने संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को तालिका 5.7.7 में दर्शाया गया हैः–

तालिका 5.7.7

योजना के तहत माता–पिता को शामिल करने संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अधिकारी/कर्मचारी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	45	56.25
2	नहीं	15	18.75
3	कुछ हद तक	20	25.00
	योग	80	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.7.7 के अनुसार अधिकारियो/कर्मचारियों से जब यह विचार पूछा गया कि सरकार द्वारा विद्यालयों में चल रही मध्याह्न भोजन योजना जो कि विद्यार्थियों के लिए चलाई जा रही है उसमें बच्चों के अभिभावकों को भी शामिल किया जाना चाहिए तो 56.25 प्रतिशत अधिकारियो/कर्मचारियों नें हाँ मे जवाब दिया जबकि 18.75 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने नहीं का जवाब दिया और कहा कि अगर माता–पिता को इस योजना में शामिल किया गया तो सरकारी

योजना बाधित हो सकती है। क्योंकि प्रत्येक बच्चों के माता–पिता की राय एक जैसी नहीं होती और 25 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने बताया कि कभी–कभी किसी अवसर पर माता–पिता को जरूर शामिल कर लेना चाहिए। सार के तौर पर कहा जा सकता है कि माता–पिता को इस योजना में शमिल कर लेना चाहिए।

मध्याह्न भोजन योजना में विद्यार्थियों के माता–पिता को शामिल किये जाने संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को चार्ट 5.7.7 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.7.7

योजना के तहत माता–पिता को शामिल करने संबंधी विचार

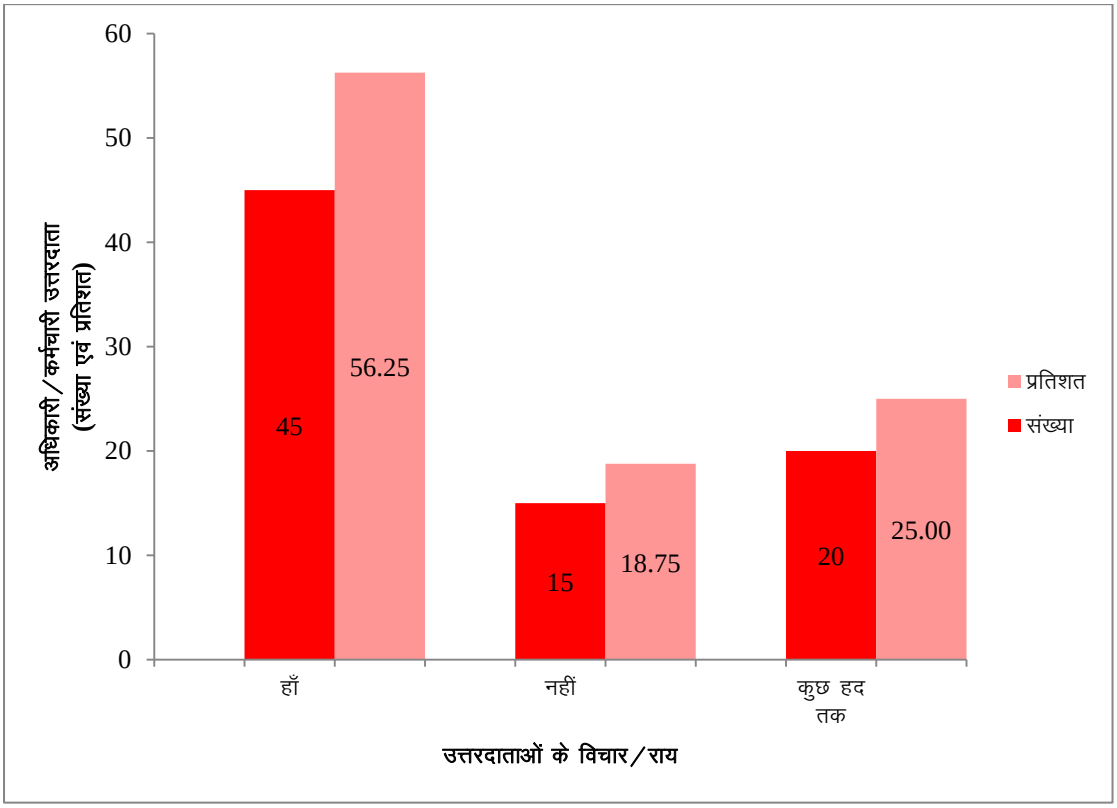

5.7.8. मध्याह्न भोजन योजना के तहत किसी प्रकार की परेशानियों का सामना करने संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचार

किसी भी कार्य को पूर्ण करने में परेशानियां तो अवश्य आती हैं जैसे साधनों की उपलब्धता, रुपयों की प्राप्ति की समस्या आदि। मध्याह्न भोजन योजना को लागू करने के लिए कर्मचारियों/अधिकारियों को किसी प्रकार की कोई परेशानी का सामना करने संबंधी विचारों को तालिका 5.7.8 में दर्शाया गया है:–

तालिका 5.7.8

योजना के अन्तर्गत परेशानी का सामना करने संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अधिकारी/कर्मचारी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	54	67.50
2	नहीं	17	21.25
3	कभी–कभी	9	11.25
	योग	80	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.7.8 के संदर्भ में अधिकारियो/कर्मचारियों से यह पूछा गया कि सरकार द्वारा विद्यालयों में चल रही मध्याह्न भोजन योजना के अन्तर्गत उन्हें किसी परेशानी का सामना करना पड़ता है तो 67.50 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों नें हाँ मे जवाब दिया और कहा कि इसके राशन और राशि की उपलब्धता संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ता है जबकि 21.25 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने नहीं का जवाब दिया जबकि 11.25 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों

ने बताया कि कभी–कभी उन्हें परेशानी का सामना करना पड़ता है। जब कार्यालय में अन्य काम भी बढ़ जाते है।

मध्याह्न भोजन योजना को लागू करने के दौरान अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा किसी परेशानी का सामना करने संबंधी विचारों को चार्ट 5.7.8 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.7.8

योजना के अन्तर्गत परेशानी का सामना करने संबंधी विचार

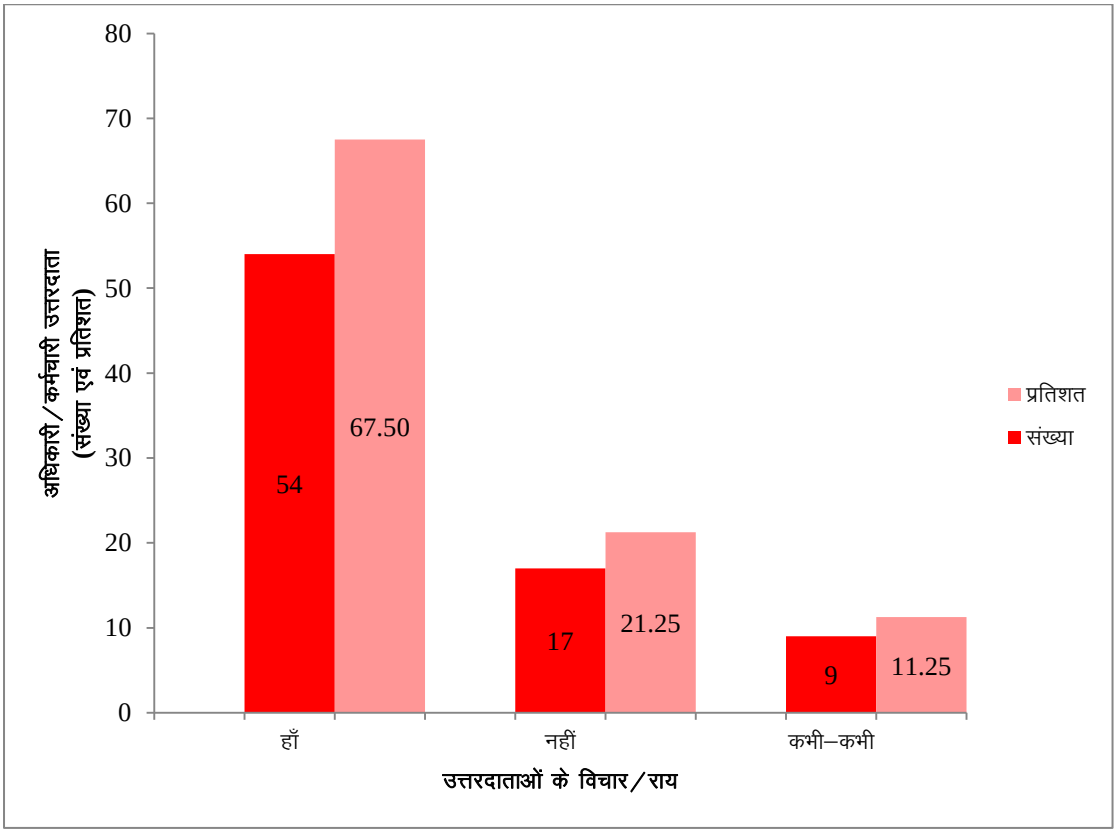

5.7.9 मध्याह्न भोजन योजना के तहत विद्यालयों में विद्यार्थियों की उपस्थिति में वृद्धि संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचार

मध्याह्न भोजन योजना को पूरे भारत अर्थात सभी राज्यों में भी लागू किया गया और योजना के तहत विद्यालयों के प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों को इसमें शामिल किया गया है। इस योजना को शुरू करने का प्रमुख उद्देश्य ही विद्यार्थियों की उपस्थिति में वृद्धि करना है। इससे संबंधी अधिकारियो/कर्मचारियों के विचारों को तालिका 5.7.9 में इस प्रकार से दर्शाया गया है:–

तालिका 5.7.9

योजना के तहत विद्याार्थियों की उपस्थिति में वृद्धि

क्र0 स0	विचार/राय	अधिकारी/कर्मचारी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	49	61.25
2	नहीं	8	10.00
3	कुछ हद तक	23	28.75
	योग	80	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.7.9 के संदर्भ में अधिकारियो/कर्मचारियों से यह पूछा गया कि क्या सरकार द्वारा विद्यालयों में चल रही मध्याह्न भोजन योजना के लागू होने से विद्यार्थियों की उपस्थिति में वृद्धि हुई है तो 61.25 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने हाँ मे जवाब दिया और 10 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने नहीं का जवाब दिया जबकि 28.75 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने बताया कि कुछ हद तक स्कूलों में विद्यार्थियों की उपस्थिति में वृद्धि हुई है। उपरोक्त आधार पर निश्चित

तौर पर यह कहा जा सकता है कि इस योजना के फलस्वरुप विद्यार्थियों की उपस्थिति में वृद्धि हुई है।

मध्याह्न भोजन योजना के तहत विद्यार्थियों की उपस्थिति संख्या में वृद्धि संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को चार्ट 5.7.9 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.7.9

योजना के तहत विद्याार्थियों की उपस्थिति में वृद्धि

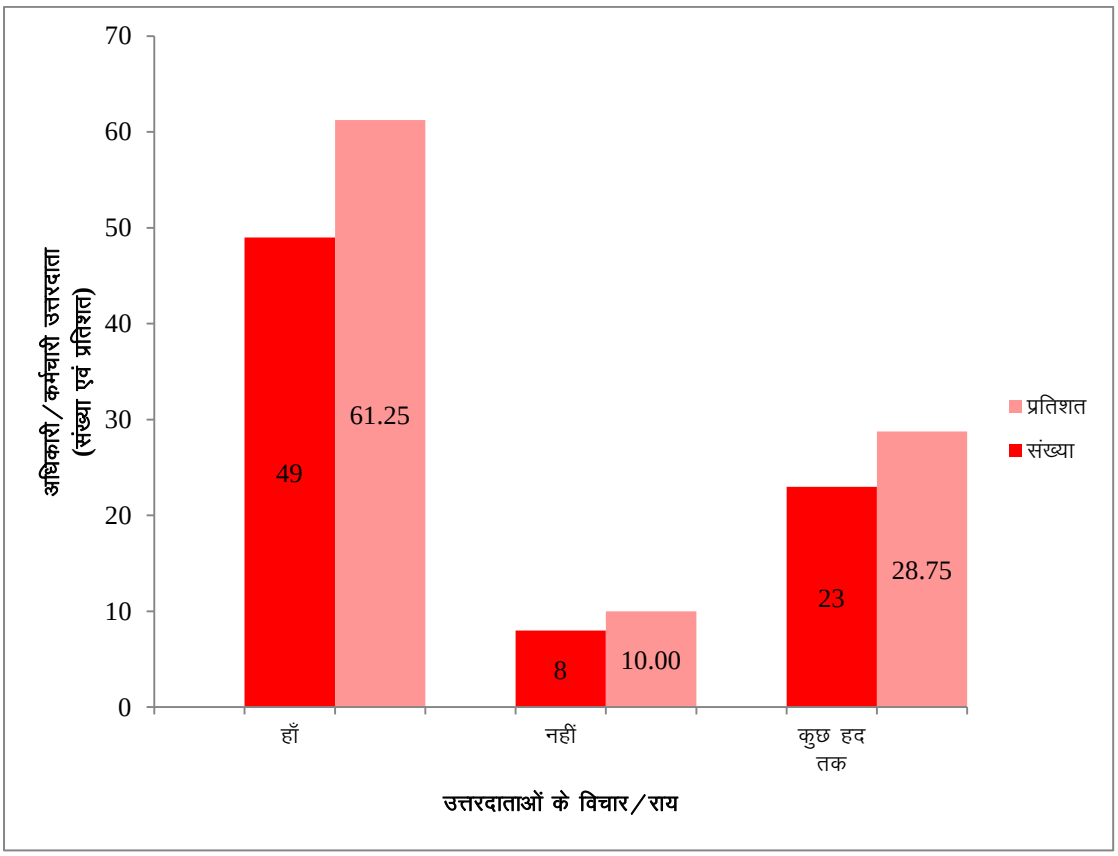

5.7.10 मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत अध्यापकों के साथ समन्वय संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचार

किसी भी योजना व कार्य की सफलता समन्वय या तालमेल पर निर्भर करती है और यदि तालमेल व समन्वय उचित और बेहतर स्थिति में हो तो उस योजना की सफलता अवश्य ही निश्चित है। इससे संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को तालिका 5.7.10 में दर्शाया गया है जो इस प्रकार से है:–

तालिका 5.7.10

अध्यापकों के साथ समन्वय/तालमेल संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अधिकारी/कर्मचारी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	25	31.25
2	नहीं	36	45.00
3	कुछ हद तक	19	23.75
	योग	80	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.7.10 के संदर्भ में अधिकारियों/कर्मचारियों से यह विचार पूछा गया कि सरकार द्वारा विद्यालयों में चलाई जा रही मध्याह्न भोजन योजना के तहत जो विद्यालय में अध्यापक कार्यरत है उनसे समन्वय/तालमेल बना रहता है तो 31.25 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियो ने हाँ मे जवाब दिया और 45 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियो ने नहीं का जवाब दिया जबकि 23.75 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियो ने बताया कि अध्यापक कुछ हद तक उनके साथ अच्छा तालमेल रखते है। मानव व्यवहार स्थितियों के अनुसार परिवर्तित होता रहता है।

मध्याह्न भोजन योजना के अन्तर्गत अध्यापकों के साथ समन्वय/तालमेल संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को चार्ट 5.7.10 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.7.10

अध्यापकों के साथ समन्वय/तालमेल संबंधी विचार

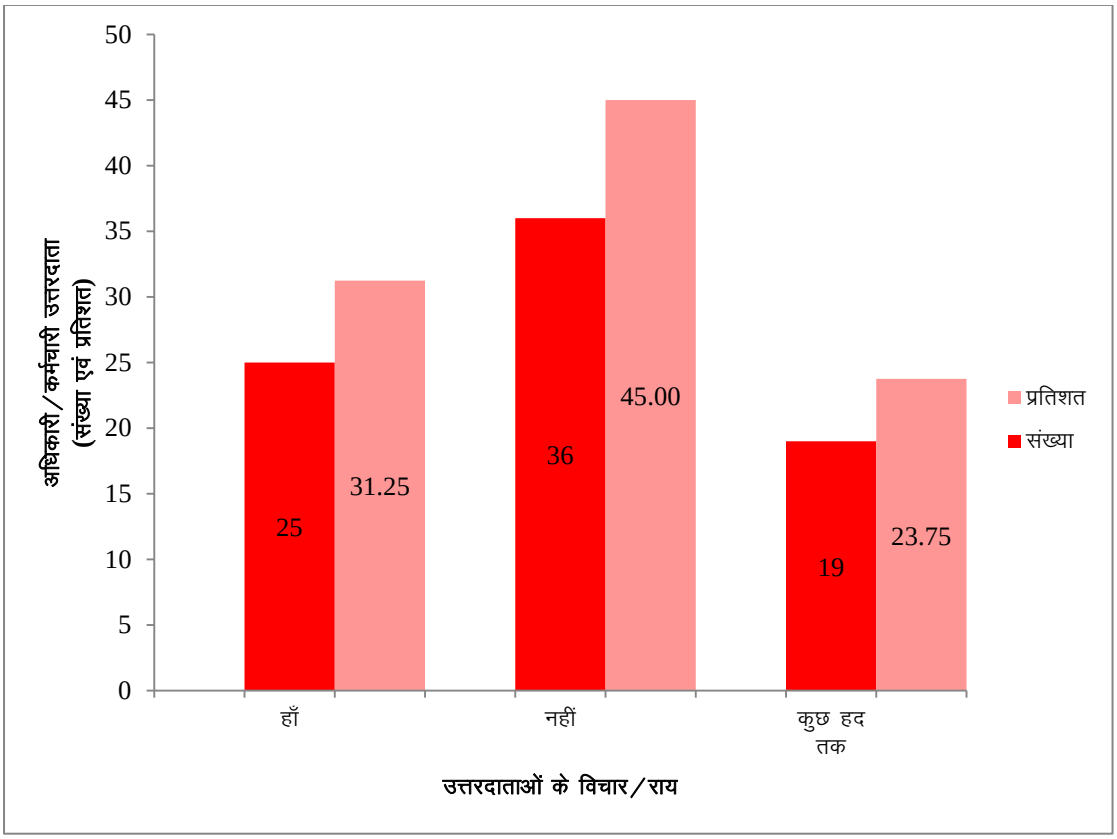

5.7.11 मध्याह्न भोजन योजना से संबंधित रिकार्ड रखने बारे अधिकारियों/कर्मचारियों के विचार

प्रत्येक योजना को लागू करने पर रूपये का खर्च तो होता है और उसके लिए बजट का निर्माण भी किया जाता है तथा उससे संबंधी रिपोर्ट और रिकार्ड रखना अति आवश्यक होता है। इसलिए मध्याह्न भोजन योजना संबंधी रिकार्ड रखने के बारे में अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को तालिका 5.7.11 में दर्शाया गया है:–

तालिका 5.7.11

योजना से संबंधित रिकार्ड रखे जाने बारे विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अधिकारी/कर्मचारी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	44	55.00
2	नहीं	14	17.50
3	कुछ हद तक	22	27.50
	योग	80	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.7.11 के संदर्भ में अधिकारियों से यह विचार पूछा गया कि सरकार द्वारा विद्यालयों में चल रही मध्याह्न भोजन योजना संबंधी रिकार्ड विद्यालयों और खण्ड अधिकारी कार्यालय में रखा जाता है तो 55 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियो ने हाँ मे जवाब दिया और 17.50 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने नहीं का जवाब दिया। जबकि 27.50 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने बताया कि

इस योजना संबंधी रिकार्ड कुछ हद तक रखा जाता है। जब योजना से संबंधी रिपोर्ट या आंकडे बताने होते हैं तभी इसका रिकार्ड दर्ज किया जाता है।

मध्याह्न भोजन योजना से संबंधित रिकार्ड रखने संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को चार्ट 5.7.11 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.7.11

योजना से संबंधित रिकार्ड रखे जाने बारे विचार

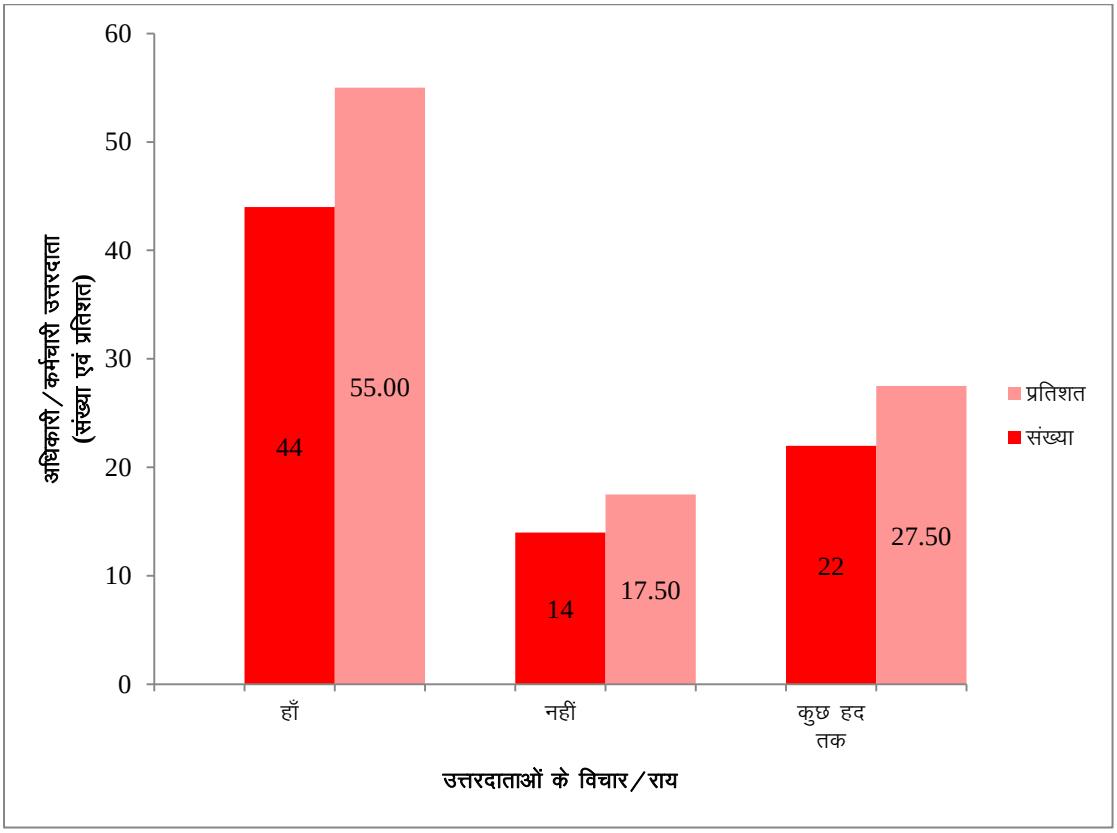

5.7.12 मध्याह्न भोजन योजना के तहत रसोईये की नियुक्ति उसी गांव/शहर से करने संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचार

भोजन बनाना भी एक कला है। भोजन को अच्छा और पोषक पूर्ण बनाने के लिए एक निश्चित व उचित विधि होती है और भोजन बनाने के लिए इस विधि को सीखा जाता है। भोजन बनाने के लिए विशेष रसोईया/कुक सदस्य की नियुक्ति उसी गांव/शहर से करने संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को दी गई तालिका 5.7.12 में इस प्रकार से दर्शाया गया हैः–

तालिका 5.7.12

रसोईया की नियुक्ति उसी गांव/शहर से करने संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अधिकारी/कर्मचारी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	60	75.00
2	नहीं	11	13.75
3	पता नहीं	9	11.25
	योग	80	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.7.12 के संदर्भ में जब अधिकारियों/कर्मचारियों से पूछा गया कि क्या मध्याह्न भोजन योजना के तहत भोजन पकाने या बनाने के लिए रसोईया/कुक सदस्य की नियुक्ति उसी गांव या शहर से की जाती है तो 75 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों अध्यापकों ने हाँ में उत्तर दिया। और बताया कि पास के मौहल्ले या गांव/नगर से ही सदस्य की नियुक्ति कर दी जाती है। जबकि 13.75 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने नहीं में जवाब दिया। जबकि 11.25

प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने इस बारे कुछ भी कहने में अपनी असमर्थतता जाहिर की।

मध्याह्न भोजन योजना के तहत रसोईये की नियुक्ति उसी गांव से करने संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को चार्ट 5.7.12 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.7.12

रसोईया की नियुक्ति उसी गांव/शहर से करने संबंधी विचार

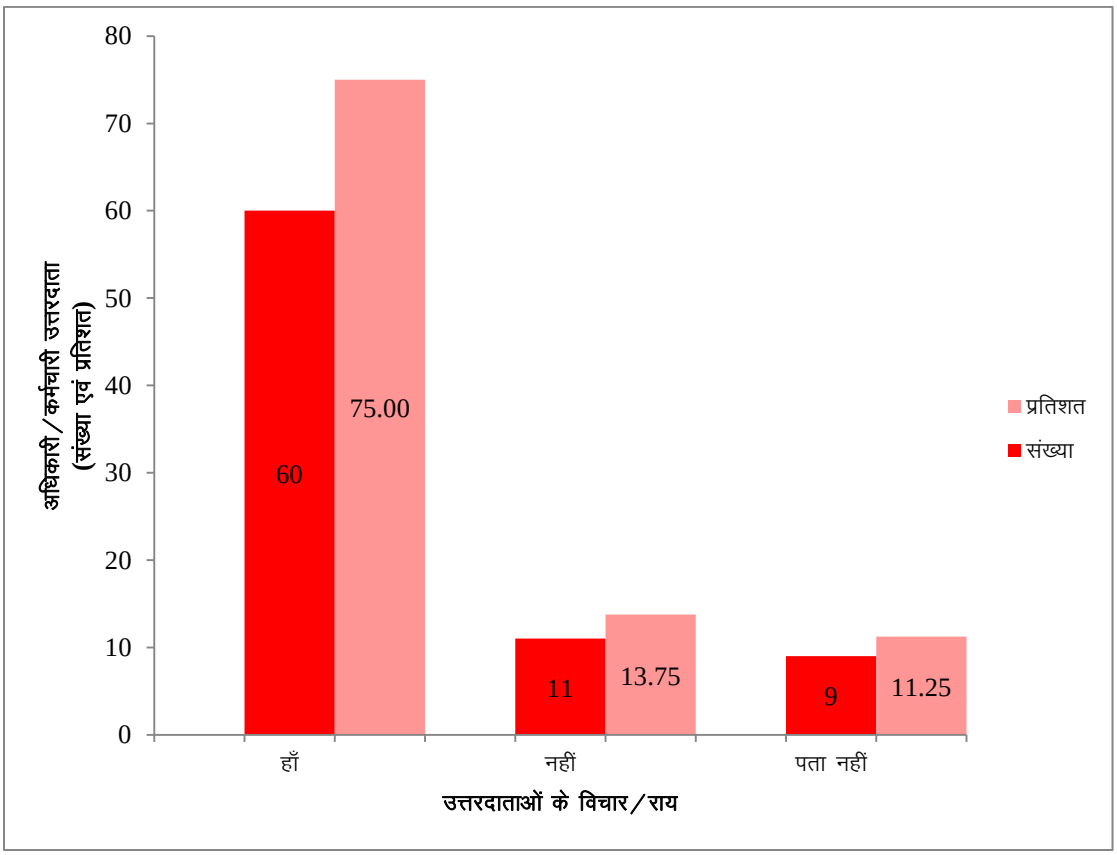

5.7.13 मध्याह्न भोजन योजना के तहत पचांयतों/नगर पालिकाओं/ सस्ंथाओं/समुदायों के सदस्यों को शामिल करने की उचितता संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचार

मध्याह्न भोजन योजना का मुख्य उद्देश्य विद्यालयों में विद्यार्थियों को संख्या में वृद्धि करना है चाहे वह विद्यालय गांव या शहर में हो। योजना की सफलता भी उसकी उचित निगरानी व निरीक्षण पर निर्भर करती है। इसलिए इससे संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को दी गई तालिका 5.7.13 में इस प्रकार से दर्शाया गया हैः–

तालिका 5.7.13

पचांयतों/नगर पालिकाओं/सस्ंथाओं/समुदायों के सदस्यों को शामिल करने की उचितता संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अधिकारी/कर्मचारी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	51	63.27
2	नहीं	13	16.25
3	कुछ हद तक	16	20.00
	योग	80	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.7.14 के संदर्भ में जब अधिकारियों/कर्मचारियों से जब यह पूछा गया कि क्या मध्याह्न भोजन योजना के तहत पंचायतों/नगरपालिकाओं/ संस्थाओं/समुदायों के सदस्यों को शामिल किया जाना उचित है तो 56.25 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने हाँ में जवाब दिया और बताया कि इन सदस्यों को

शामिल किया जाना चाहिए ताकि योजना की निगरानी और अधिक सफलता पूर्ण पूरी हो सके। जबकि 16.25 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने नहीं में जवाब दिया और 20 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने कहा कि कुछ हद तक ऐसा करना उचित है।

भोजन योजना के तहत पचांयतों/नगर पालिकाओं/सस्थाओं/समुदायों के सदस्यों को शामिल करना उचित संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को चार्ट 5.7.13 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.7.13

पचांयतों/नगर पालिकाओं/सस्थाओं/समुदायों के सदस्यों को शामिल करने की उचितता संबंधी विचार

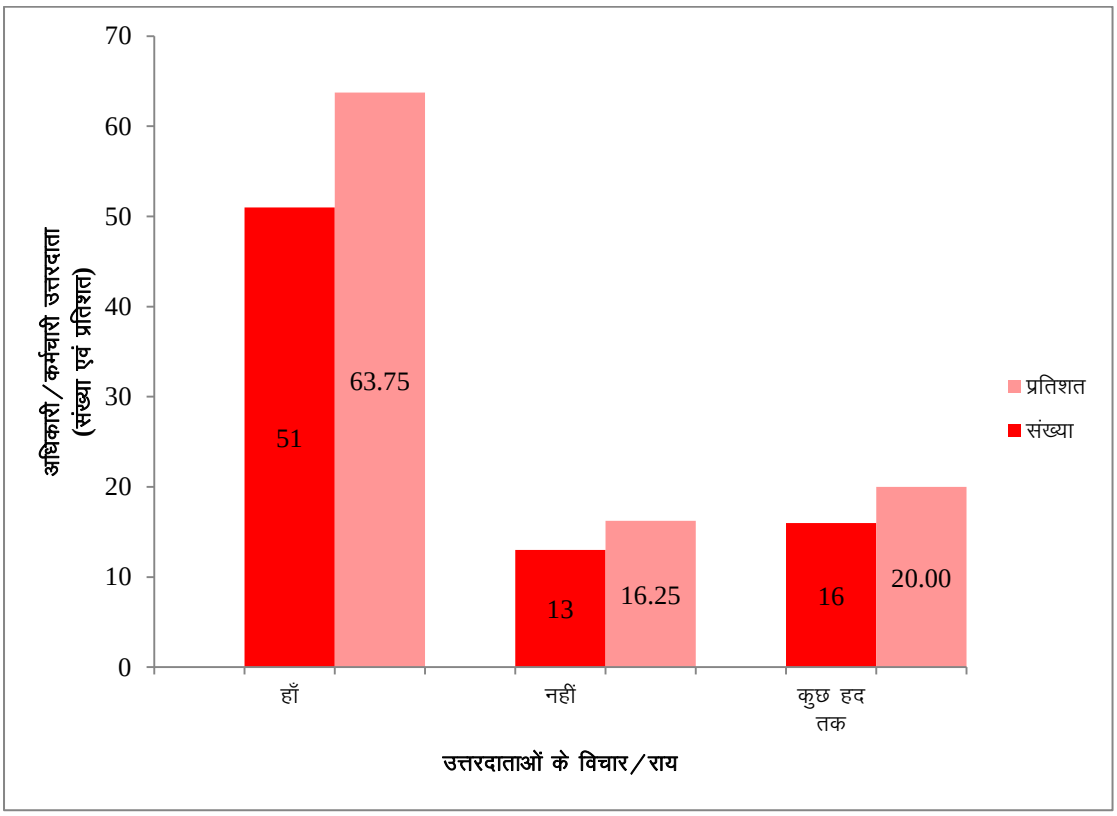

5.7.14 मध्याह्न भोजन योजना के तहत रोजगार में वृद्धि संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचार

सरकार द्वारा चलाई गई योजना या स्कीम का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है, जैसे रोजगार देना व अन्य सुविधाएँ उपलब्ध करवाना आदि। हालांकि मध्याह्न भोजन योजन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की संख्या को बढ़ाना है परन्तु क्या इस योजना के तहत रोजगार में भी वृद्धि हुई है इस संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को तालिका 5.7.14 में इस प्रकार दर्शाया गया है:–

तालिका 5.7.14

योजना के तहत रोजगार में वृद्धि संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अधिकारी/कर्मचारी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	27	33.75
2	नहीं	33	41.25
3	कुछ हद तक	20	25.00
	योग	80	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.7.14 के संदर्भ में इस योजना के अन्तर्गत जब अधिकारियों/कर्मचारियों से पूछा गया कि क्या मध्याह्न भोजन योजना के तहत रोजगार में भी वृद्धि हुई है तो 33.75 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने हाँ में जवाब दिया और बताया कि खाना बनाने वाले रसोईया/कुक सदस्य और अनाज आदि पहुँचाने वाले मजदूरों आदि को रोजगार की प्राप्ति हुई है जबकि 41.25 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने नहीं में जवाब दिया जबकि 25 प्रतिशत

अधिकारियों/कर्मचारियों का कहना है कि कुछ हद तक तो रोजगार में वृद्धि अवश्य हुई है। निष्कर्ष के तौर पर यह योजना विद्यार्थियों संख्या में उपस्थिति में वृद्धि के साथ–साथ रोजगार बढ़ाने में सहायक है।

मध्याह्न भोजन योजना के तहत रोजगार में वृद्धि संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को चार्ट 5.7.14 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.7.14

योजना के तहत रोजगार में वृद्धि संबंधी विचार

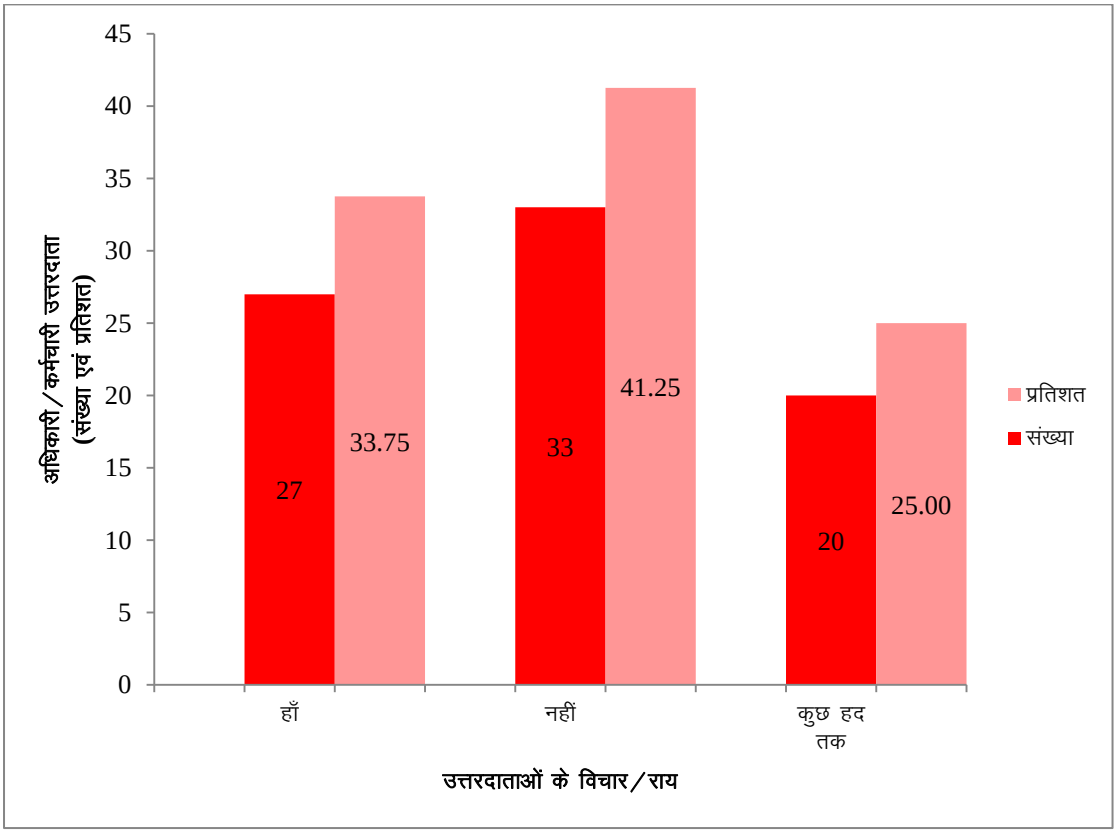

5.7.15 मध्याह्न भोजन योजना के तहत योजना के लिए सभी नियमों का उचित वर्णन करने संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचार

एक देश में वहां के लोगों के कल्याण के लिए उचित नियमों/कानूनों का बनाना उचित और अति आवश्यक है। कल्याणकारी राज्य भी वही है जो नागरिकों/व्यक्तियों के हितों के लिए उचित नियमों की उचित व्याख्या करता है और किसी योजना की सफलता उसके स्पष्ट नियमों प्रक्रियाओं पर ही आधारित होती है। इससे संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को तालिका 5.7.15 में इस प्रकार से दर्शाया गया है:–

तालिका 5.7.15

मध्याह्न भोजन योजना के तहत योजना के लिए सभी नियमों का उचित वर्णन करने संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अधिकारी/कर्मचारी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	42	52.50
2	नहीं	20	25.00
3	कुछ हद तक	18	22.50
	योग	80	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.7.15 के संदर्भ में जब अधिकारियों/कर्मचारियों से पूछा गया कि क्या मध्याह्न भोजन योजना संबंधी सरकार द्वारा नियमों का उचित वर्णन किया गया है तो 52.50 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने हाँ में उत्तर दिया और बताया कि भोजन के लिए कितनी रैसीपीज या अन्य सामग्री ओर अन्य जानकारी संबंधी

नियमों का उचित उल्लेख सरकार द्वारा समय समय पर दिया और किया जाता है। जबकि 25 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने नहीं जवाब दिया उनका कहना है कि ऐसा है तो सही परन्तु कभी लागू नहीं हो सकता। जबकि 22.50 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों का कहना है कि काफी हद तक इस योजना में नियमों का उचित वर्णन किया गया है।

मध्याह्न भोजन योजना के तहत योजना के लिए सभी नियमों का उचित वर्णन करने संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को चार्ट 5.7.15 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.7.15

मध्याह्न भोजन योजना के तहत योजना के लिए सभी नियमों का उचित वर्णन करने संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचार

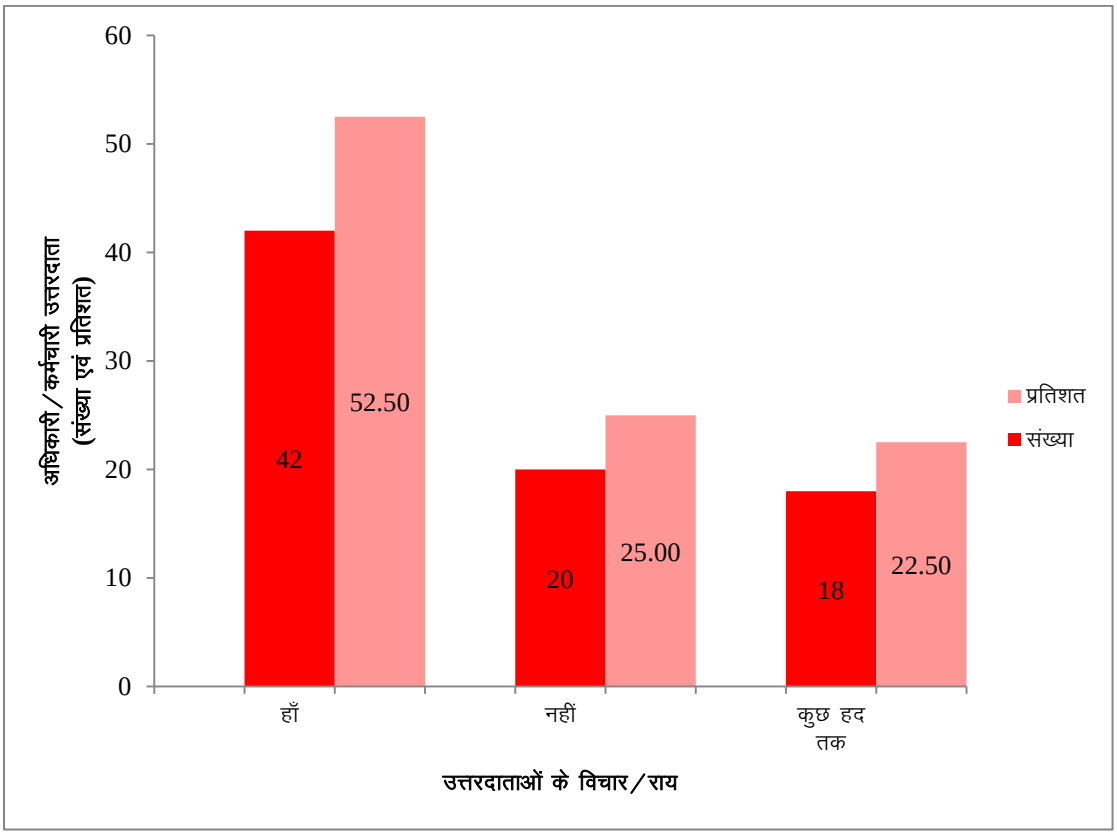

5.7.16 मध्याह्न भोजन योजना के तहत काम करने वालों के बैंक खाते खुलवाये जाने संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचार

मध्याह्न भोजन योजना के अन्तर्गत काम करने वालों के बैंक खाते खुले होने चाहिए। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सरकार द्वारा समय–समय पर कई कदम भी उठाये गए हैं। सरकार द्वारा उठाये गए कदमों के आधार पर अधिकारियों/कर्मचारियों से यह पूछा गया कि क्या इस योजना के तहत काम करने वालों के बैंक खाते खुले हुए हैं अथवा नहीं। इससे संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को तालिका 5.7.16 में इस प्रकार से दर्शाया गया है:–

तालिका 5.7.16

योजना के तहत सरकार द्वारा बैंक खाते बनाये जाने संबंधी विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अधिकारी/कर्मचारी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	48	60.00
2	नहीं	14	17.50
3	कुछ हद तक	18	22.50
	योग	80	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.7.16 के अनुसार जब अधिकारियों/कर्मचारियों से जब यह पूछा गया कि क्या मध्याह्न भोजन योजना के तहत उनके बैंक खाते बने हुए हैं अथवा नहीं तो 60 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने हाँ में उत्तर दिया और बताया कि उनके बैंक में खाते बने हुए हैं। जबकि 17.50 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने

नहीं में जवाब दिया। उनका कहना है कि उनके बैंक खाते नहीं बने हुए हैं। जबकि 22.50 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों का कहना है कि मध्याह्न भोजन योजना के तहत काम करने वालों के बैंक खाते काफी हद तक बने हुए हैं।

मध्याह्न भोजन योजना के तहत काम करने वालों के बैंक खाते बनाये जाने संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को चार्ट 5.7.16 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.7.16

योजना के तहत सरकार द्वारा बैंक खाते बनाये जाने संबंधी विचार

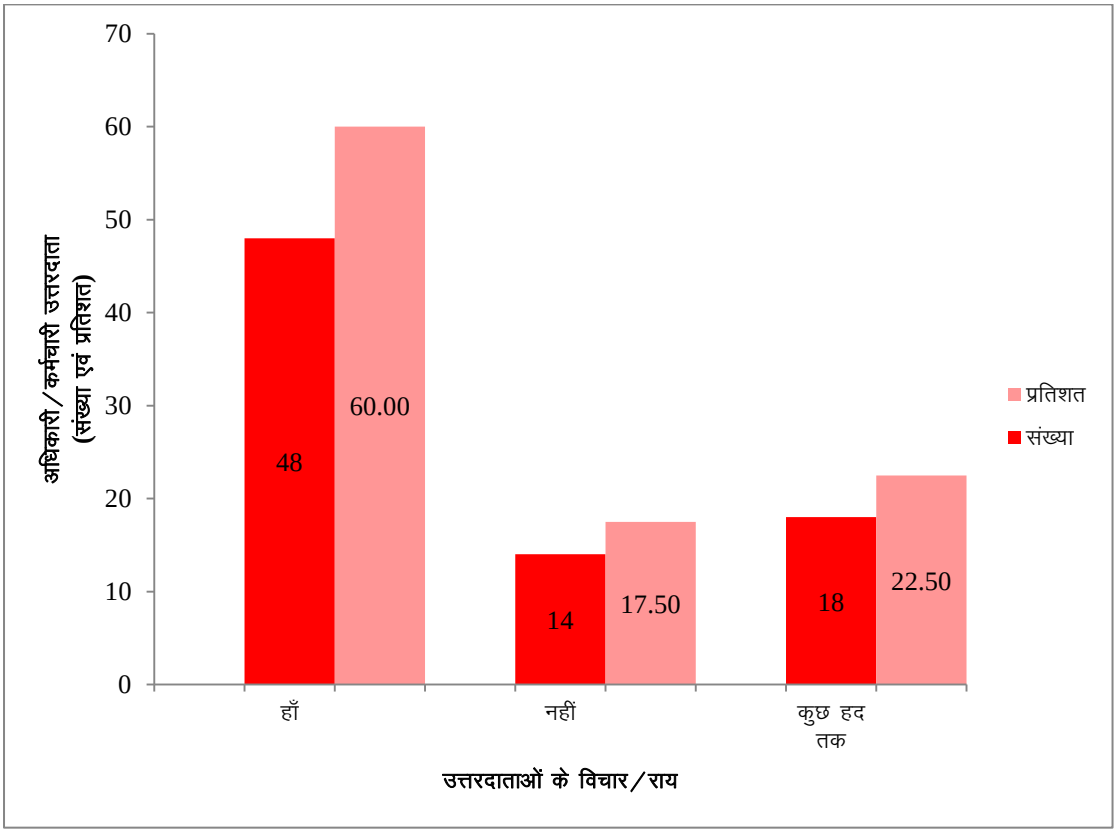

5.7.17 मध्याह्न भोजन योजना के तहत भारतीय खाद्य निगम द्वारा वितरित खाद्यान्न के साफ–सफाई स्तर संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचार

मध्याह्न भोजन योजना के तहत खाद्यान्न/अनाज आदि सामग्री का प्रयोग किया जाता है उसकी आपूर्ति भारतीय खाद्य निगम द्वारा की जाती है। क्या उनके द्वारा गेहूँ अनाज की सप्लाई अच्छी व उचित मात्रा में तथा उचित समय पर ही की जाती है, इससे संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को नीचे दी गई तालिका 5.7.17 में इस प्रकार से दर्शाया गया हैः–

तालिका 5.7.17

योजना के तहत भारतीय खाद्य निगम द्वारा वितरित खाद्यान्न के साफ–सफाई स्तर संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अधिकारी/कर्मचारी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	साफ सुथरा	19	23.75
2	औसत	30	37.50
3	निम्न	25	31.25
4	पता नहीं	6	07.50
	योग	80	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.7.17 के संदर्भ में मध्याह्न भोजन योजना के बारे में जब अधिकारियों/कर्मचारियों से पूछा गया कि भारतीय खाद्य निगम द्वारा वितरित

खाद्यान्न का न्यूनतम स्तर क्या है तो 23.75 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने खाद्यान्न को साफ–सुथरा बताया। जबकि 37.50 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने खाद्यान्न की सफाई को औसत बताया और 31.25 प्रतिशत का कहना है कि खाद्य निगम द्वारा वितरित खाद्यान्न निम्न स्तर का है अर्थात् कुछ ज्यादा अच्छा नहीं है। और उनका कहना है कि गेहूँ अनाज की समय पर सप्लाई होती ही नहीं और कई बार गेहूँ की बोरियों में कीड़े आदि भी निकलते है। जबकि 7.50 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों को इस बारे में कुछ नहीं पता।

मध्याह्न भोजन योजना के तहत भारतीय खाद्य निगम द्वारा वितरित खाद्यान्न के साफ–सफाई स्तर संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को चार्ट 5.7.17 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.7.17

योजना के तहत भारतीय खाद्य निगम द्वारा वितरित खाद्यान्न के साफ–सफाई स्तर संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचार

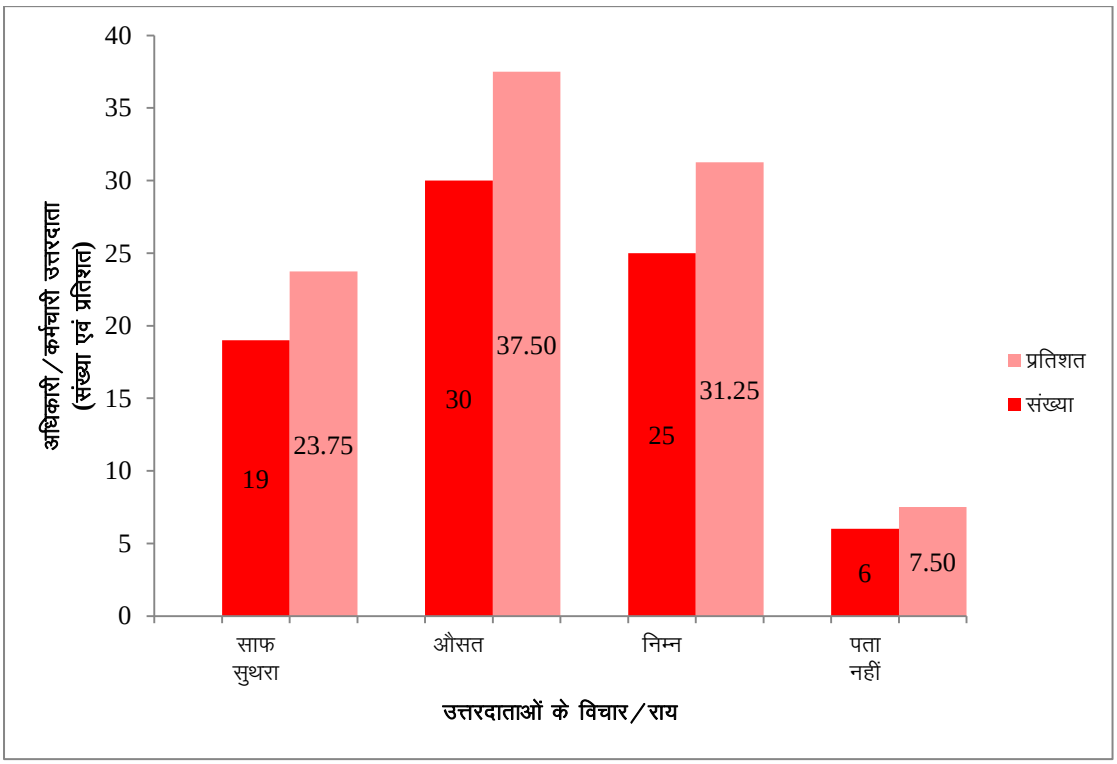

5.7.18 मध्याह्न भोजन योजना के तहत अभिभावकों का अपने बच्चों को सिर्फ भोजन के लिए विद्यालय भेजने संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचार

सरकार द्वारा विद्यालयों में लागू की गई मध्याह्न भोजन योजना का मुख्य उद्देश्य विद्यालयों में बच्चों की उपस्थिति व संख्या में वृद्धि करना है और शिक्षा स्तर को ऊँचा उठाना है। परन्तु क्या अभिभावकों द्वारा अपने बच्चों को केवल भोजन के लिए विद्यालयों में भेजा जाता है इससे संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को दी गई तालिका 5.7.18 में इस प्रकार दर्शाया गया है:–

तालिका 5.7.18

योजना के तहत अभिभावकों का अपने बच्चों को केवल भोजन के लिए विद्यालय भेजने संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचार

क्र0 स0	विचार/राय	अधिकारी/कर्मचारी उत्तरदाता	
		संख्या	प्रतिशत
1	हां	31	38.75
2	नहीं	20	25.00
3	कुछ हद तक	29	36.25
	योग	80	100.00

(स्त्रोत–उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों से संकलित)

तालिका 5.7.18 के संदर्भ में जब अधिकारियों/कर्मचारियों से पूछा गया कि क्या आपकी राय में इस योजना के तहत माता–पिता अपने बच्चों को केवल भोजन के लिए विद्यालय में भेजते हैं तो 38.75 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने हाँ में उत्तर दिया और कहा कि यह सत्य है कि कई माता–पिता अपने बच्चों को स्कूल

इसलिए भेजते हैं क्योंकि वे अपने बच्चों को भर पेट भोजन नहीं दे सकते। इसलिए वे अपने बच्चों को स्कूल भेज देते हैं कि उन्हें वहां भोजन तो मिल ही जाएगा और साथ में शिक्षा भी ग्रहण हो जाएगी। जबकि 25.00 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने नहीं में जवाब दिया और 36.25 प्रतिशत अधिकारियों/कर्मचारियों ने कहा कि कुछ हद तक तो ऐसा हो सकता है, परन्तु सभी अभिभावकों की राय एक जैसी हो यह तो जरूरी नहीं।

मध्याह्न भोजन योजना के तहत अभिभावकों का अपने बच्चों को केवल भोजन के लिए विद्यालय भेजने संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को चार्ट 5.7.18 के माध्यम से भी दिखाया गया है।

चार्ट 5.7.18

योजना के तहत अभिभावकों का अपने बच्चों को केवल भोजन के लिए विद्यालय भेजने संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों के विचार